रेत रो हेत

शिक्षक दिवस, 1986

राजस्थान के सृजनशील शिक्षकों की राजस्थानी रचनाओं का संकलन

शिक्षा विभाग राजस्थान
के लिए



कृष्ण जनसेवी एण्ड को.
दाऊजी मन्दिर भवन, बीकानेर (राज)



रेत रो हेत

सम्पादक
हीरालाल माहेश्वरी

शिक्षा विभाग राजस्थान बीकानेर

प्रकाशक शिक्षा विभाग राजस्थान बीकानेर के लिए
कृष्णा जनसेवी एण्ड को
दाऊजी मन्दिर भवन बीकानेर

मूल्य रुपये सोलह पैसे पच्चीस मात्र

आवरण पारस भंसाली

संस्करण शिक्षक दिवस 1986

मुद्रक साखला प्रिन्टर्स सुगन निवास बीकानेर

रेत री हेत सम्पादक हीरालाल माहेश्वरी (राजस्थानी विविधा) मूल्य 16 25

RET RO HET Price Rs 16 25

आमुख

शब्द अपनी यात्रा स्वयं करते हैं, पर आज जो कुछ छप रहा है, वह कब प्रासंगिक होगा, इसे काल के अलावा कोई नहीं जान सकता। साहित्य में अभिव्यक्ति बाधित निर्णयों से ऊपर होती है। पक्ष विपक्ष की यात्राएं अपने युग के साथ उपराम ग्रहण करती हैं, तब साहित्य में केवल वही शेष रह जाता है जो मानवीय होता है। मानवीयता के इसी सार्वभौम पक्ष को विविध रूपों में उजागर करने के लिए हमारे राज्य में शिक्षक अपनी रचनाधर्मिता को संजोये वर्षों से आगे बढ़े चले जा रहे हैं। मुझे बताते हुए खुशी है कि हमारे सृजनशील शिक्षक साहित्यकारों की अब तक 96 पुस्तकें विभाग द्वारा प्रकाशित हो चुकी हैं।

5 सितम्बर, शिक्षक दिवस के रूप में पूरे राष्ट्र में मनाया जाता है। राजस्थान में शिक्षकों के लिए अपनी लेखन क्षमता का अभिव्यक्ति देने का यह अवसर है। इसी दृष्टि से आज के पुनीत पर्व पर शिक्षकों की पाँच कृतियाँ आप लोगों के हाथों में सौंपने का गौरव मुझे मिला है। हमारे प्रांत के मनीषी साहित्यकारों ने इन्हें संपादित किया है। ये सभी

साहित्यकार भारतीय साहित्य म अपनी अनुपम देन के लिए विख्यात हैं। ये पाच सग्रह इस प्रकार हैं—

1	ढाई अक्खर	कहानी सग्रह	सपा आलमशाह खान
2	रेत का घर	कविता सग्रह	सपा प्रकाश जैन
3	रेत के रतन	बाल साहित्य	सपा मनोहर प्रभाकर
4	रेत रो हेत	राजस्थानी विविधा	सपा हीरालाल माहेश्वरी
5	बूद बूद स्याही	गद्य विविधा	सपा पुरुषोत्तमलाल तिवारी

उक्त कृतिया मे जो कुछ प्रकाशित हुआ है उसकी शक्ति और सामर्थ्य उन लेखको की है और वह इन कृतियो म निहित है। मुझे केवल इन्हे प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और मैं साहित्य ससार के समक्ष इन्हे विनीत भाव से प्रस्तुत करता हू।

ता प्र जोशी

शिक्षक दिवस, 1986

(तारा प्रकाश जोशी)
निदेशक
प्राथमिक एव माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान बीकानेर

दो आखर

राजस्थान र सृजनधर्मी अध्यापकां री अ चितराम पाठकां न सूंपता थकां मनै घणो हरख अर कोड है। अध्यापकां रो रैवास दूर ग्राज र गांवां तांई है। राजस्थान री आगी धरती री साची मत जाणणियां वी र सुग दुग नै भुगतणिया— अणभ भरणिया अर आपरां म माड र सगळा तांई पूगावणियां अ अध्यापक ई हुवै। आं री साधना अर अभाव तो साव चौड ई है। कदे कदाग मांय रा'रला अर ईनला-बीनला दवाव रव जिया न्यारा। मासा सार यी न वी पढणो इ घध री नियति है। ओ सगळा जुग धम निभावतां थकां वै आपर अन्तस न आसरां म उजागर कर आ घणी सरावण जाग बात है। अणभ अर कथ्य री ईमानदारी सिरजण री अगूच बात है। अ दोनूं मिणी चितराम री आत्मा है। अणभ हीण बात थोथी हुव अर विना ईमानदारी वा विसवास जोग वण कोनी। अणभ अर ईमानदारी साथ अध्ययन रो उजास वाणी न निम्मार देव। आं रो आसरो ले र जद मजेडी, मटेडी छटेडी साफ सुथरी भाषा म बध र कोई चितराम सामी आव, तो बो घणो महताऊ हुव। सुरसरी री माळा रो वो घणो अणमोला मोती वणै।

इ सगह री रचनावां, सवा सौ र नडी तडी रचनावां मां सू टाळही है। पोथी र पाना री सींव देखता थकां घणी सातरी फूटरी रचनावां छोडणी पडी। इ रो मन म घणो दुख है। मानीता जूना लिखारा र साथै साथै नूआ लिखारा भी आपरी कलम रो चमत्कार दिखा रया है अर घणो चाखो दिखा रया है। आ सगळा री, सगळी विधावां मे एक एक टाळवी रचना भी लेवां तो इस्यै एक सग्रह सू पार पड कोनी। घणा नही ता दो इस्या सग्रह—गद्य अर पद्य रा—छपणा चाईज ई। 'विविधा' छपा'र राजस्थान सरकार रो शिक्षा विभाग राजस्थानी र

सबधन रो घणो मह्ताऊ अर सरावण जोग काम कर रियो है । अब एक ओर सायरो साल म दो पोथ्या काढण रो मिल ज्याव वै सू, तो ई साहित्य री ओर घणी सेवा हुव । शिक्षा विभाग न आ मेरी अरजाम है ।

गद्य र पेट आयेडा चितरामा री बात ।

'सातू सुख' कहाणी मे मवरलालजी 'भ्रमर' दिमावरा म बिणज ब्योपार करणिय बाणिय री जोडीदार हीरा रै अणकंय, अणबोल्यै दुख न परगास्यो है । लोगा र साम तो सासू'र नणद हीरा री जी-धाप'र बडाई कर पण माय ई माय बी नै कोस । ई रोसण रो न छेकड आपरी सिमता पिछाणण रो जीवतो चितराम, भ्रमर' माडयो है । हीरा जिसी बीनण्या घणाई इस्या घरा म मिळ ।

एक पाव दारू' म नर्सिहजी राजपुरोहित नश मू हुई बरबादी अर सिहाज-सरम न काण कायदा रै मिटतै बोहार रा माडणा माडया है । फतजी दारू रै नश मे तेजिय री मदद सारू जाव अर खून कर बठ । इ रो फळ भुगतता भुगतता बी री जिनगाणी आथमणी होज्याव । गाँव री टेढी पाधरी धरती माथ वोरेडा अ माडणा सोवणा लाग अर चितन सारू मजबूर कर ।

नीम री छाव' म शिव मृदुल आज र सरकारी दफतरा र काम काज अर रीत नीत रो साचीणो र सागीडो खाको खींच्यो है । इ मे काम चोरी अर बेईमानी रा जबरा हावा न ईमानदारी री सिसकया सुणीज ।

'आसवासण' (आश्वासन) आज री राजनीति रो पैता गुर है। आ एक सायरा है जिक सू नताई रो ढोल बाजता रव । हनुमानसिंहजी पूनिया ई नाम री कहाणी मे इ बाजत ढोल री पोल फाड कीवी है, साच र दो आखरा मू ।

विणज बौपार अर कळ कारखाना री धुरी ईमानदारी है अर होवणी चाईज । ईमानदारी—मालिक री, चाकर री न चीज री । ई सू ई साख जम । ईया तो ईमानदारी रा पहाडो बौपारिया अर फक्ट्री-मालका न ई रटायो जाव, पण सबक' कहाणी म छगनलालजी व्यास सिक्क रा दूजो पासो उजागर करयो है । सेठ नटवरलाल आपर कारिन्द हरिय न आपर कारखाना र तेल म पाणी मिला वतो पकडरय, पण आज र पुलिस तन्त्र मे साच साव उलटीजज । इ रो खरा विवरा कहाणी म दियो है ।

'गिरमाधारी' म कृष्णकुमारजी कौशिक आज र अध्यापका र काम काज, आपसी व्योहार अर गुमान मगज रो बोलतो बतळावतो चित्राम माडयो है । दस्कूल तो हैडमास्टर अर दूजा मास्टरा रै रळ मेळ अर स्नेह प्रेम मू ई चोखो तरा चाल । आ रै अभाव अर किणी गिरमा री टक रा वाद नतीजा नीवळ आ ण कहाणी म साव दरसायो है । फक्त इ अर इस्य अध्यापका विष सावरजी दफ्घा री इन पाथी एक दुनिया म्हारी' सामै आ चुकी है ।

मिनख रा रूप न्यारा न्यारा हुवै। नात रिश्ता सूं, धध सूं, कुर्सी सूं, पोजीशन सूं–आद। छोटूसिंह पुलिस हाळो है वर्दी प'र'र बो घणा आकड़ अर आपरै दब पड़णिया सगळा माथै हुक्म चलावै। पण मिनख रै रूप में बो निर्तोई निमळो, सहज अर सेवाभावी है। आवरण र नीचै ढकेड़ मिनख र मन रो, वी र साच रूप रो सातरो चितराम मीठालालजी ब्यास 'छोटूसिंघ' कहाणी मे माड्यो है।

दायजो समाज मे कोढ़ दाइ बधतो ई जावै। ईं कारण गरीब रो तो हाल ई बेहाल होज्यावै। मेसू गाव मे निरसाणी करतो अर तुक्खो मिस्सो खावतो हो। पण दायज र कारण बी नै सो'की बेचणा पड्यो अर जैपुर म बो रिक्शो चलावण न मजबूर हुयो। मेसू र मम न उजास्यो है श्री रामस्वरूपजी 'परेश' 'दायज रो घाव मे'।

'भाग्योदय' मे पुष्पलताजी कश्यप दफतर म काम करणिये एक साधारण आदमी अर वी र परिवार री मादी हालत दरसाई है। अभावा म जीतखया सूं आपर भाग जाणण री लुगाइया री मनसा उल्टा अभाव ही वधाव, आ इ सूं साव लखाव।

कोई मोटो बगलो चिणा'र वी मे रवण सूं ई सुखी कोनी हुवै। मोट बगल र धणी जीवण काक न वी रो छोरो आय दिन कूट। इ बात रो कारण अर वी री जोड़ायत घणो समभ। दोनू–लुगाई आदमी हाड फोड मजूरी कर, आपरो पेट काट पण आपर छोर ताजुरखां न पढ़ाव। फळ आ हुयो के एक दिन ताजुखां डाक्टर बणग्या अर वी न रवास साम्ह सरकारी बगलो मिल्यो। आगली पीढ़ी रै निर्माण नै वी र सुप्र माथ अभावा री जिनगाणी ढकीजज। 'मोटो बगलो' कहाणी म मुहम्मद जी कुरशी ओईज लेखो जोखो घणै प्रभावी ढग सूं कर्यो है।

इस्या भी गाव है जठ लूठा लोग लाठी रा राज चलाव वां र टावरा न नूवो वायरो कै लाग्यो, स' मरजादा न मान काण तोड नाखी। गाव र स्य छोरै रामलाल री बहण री इज्जत रळियामेट कर दी। 'अधारो' कहाणी म मीठालाल जी खत्री रामलाल र मनरू री दूखती रगा, समाज'र पुलिस र ढाळ रो सैंजोर विवरो दीयो है।

'माटी भरा जिनावरा, म जनकराजजी पारीक एक नूई जमीन माथ सिरजणा कीवी है। 'सीगी लवा, जोका लवा' रा हलो गाव सूं ल र बडा बडा सहरा ताइ आज भी कदे कदास सुण न मिल। ईं तरा 'गोदणा गुदायो, नाव मडायो' री मादी मोटी अवाज भी कद कदास काना म पड ज्याव। आ लोगा री जिनगाणी, रवास, रीत-नीत अर सुख दुख रा सातरा'र सरजीवण चितराम पारीकजी माड्या है अर वा री निज्रू बोलचाल री भाषा रा दरसाव देता थका

माडया है। आ घणी महताऊ बात है। ईं कहाणी री पिछाण न्यारी ई ज है। कहाणी रूप म ता नहो पण दृस्य पेशवर लोगा रा सावणा चितराम निरा बरसा पली मुरलीधरजी व्यास 'जूना जीवता चितराम' मे माडया हा।

रूपसिहजी राठोड 'दूजो ब्याव' म कहाणी तो नही कहाणी री विगत—टावडी र ब्याव री विगत–घणी ओपती'र फवती माडी है। इ रा अर रामस्वरूपजी परश' री कहाणी रो विष तो एक ईज है पण शली'र दीठ यारी न्यारी है।

'घासीराम गगाराम' म अरविंदजी चूरवी रा मास्टरा र काम काज अर सुभाव रो विवरा देता थका आ दरसाई है के कामचोर, बेईमान अर सिफारिशिया लाग आपरा चावो करत्य। मूळ बात ईमानदारी अर बेईमानी माथ है। 'नीम री छांव' रो जिकरा पली करयो ई है।

'विकळाग' लघुकथा मे माधवजी नागदा विकळागता र उळाव माथ जबरी चोट करी है।

'म्हारा पाचूलालजी' म ओमदत्तजी जोशी इस्कूल मास्टरा रा प्रभावी'र फवता चितराम माडया है। इ अर 'गिरमाधारी' री कथा धरती एक इज है। इ तरा ई अमोलकचदजी जागिड री 'ताजूखाँ' ताजखाँ रो घणो मावणो चितराम है। इया लखाव के इस्या आदमी कठई देख्यौ है।

व्यग्य चितरामा म निलोकजी गोयल र कागलावाद री न्यारी ई पिछाण है। इस्या महताऊ चितराम घणा कोनी कदे कदास ई देखण में आव। गोयलजी मे व्यग्य माडण री खिमता है मेरी समझ म कविता नाऊँ वत्तो। था न इ न नितारणी वधावणी चाइज।

शिक्षा रो मारजा जुग म सावरजी न्इया चाळीस पताळीस सान पली री राजस्थान र गावा री पढाई माथ व्यग्य कर्यो है। दो आक जाणणिया थोडा-घणा पढ लिख र मतई मास्टर बण जावता ककको बारखडी पट्टी पहाडा सिखावता। एक ई स्कूल एक ई मास्टर। टाबरा न ठोकणो कूटणो बा रो रूकल दुवकार। इ माथ ओ सातरो व्यग्य है।

न्यग्य रो कारण अर मूळ सुधार है, आ बात म' जाण है।

'ईरस्या (छाजूलालजी जागिड) अर पिणघट' (मोहनलालजी प्रजापति) म सिखारा केई भात सू आपरा विचार माडता थका वा न चोखी भात स्पष्ट कर्‌या है। 'मिनख रो बळतो सम' म नानूरामजी मस्कर्ता आपर अणभ न प्रकास्या है। न रो लाभ सगळा न लेणो चाइज।

गद्य री भात इ म सकळित कवितावा विष भाव उद्देश्य अर रूप रग आद री दीठ सू न्यारी न्यारी है। आ म गीत, गजल क्षणिकावा—तुकात अर अतुकात

कवितावा है। आज री राजनीति, ईं रै प्रभाव, फलाव अर परिणाम माथ व्यग्य, कविता रो सगळा सू ऊंचो अर तीखो सुर है। इ र इलावा इन्याय, शोषण, गरीबी, दबाएडा सताएडा मादा मिनख, गाँव अर वा री हालत, मिनख अर मिनख र निमळ चरित्तर, स्वयभू नेता अर नारा, खेत अर करमा, उद्बोधन अर चेतावणी आद माथ घणी चावी, ठावी ओर सैंजार कवितावा है। तीन च्यार कवितावा म मनड री मनसा गुणगुणाइजी है, आ रो भी आपरो मोल तोल ह। मन अर माथ न साचण विचारण अर की करण, छोडण अर ग्रहण री प्रेरणा देवणो कविता रो घम है। आ कवितावा मे ईं तरा री प्रेरणा है।

लिखारा अध्यापका री आ राजस्थानी साहित्य सवा घणी महताऊ है। इ सू सखेप मे आज री दशा अर दिशा रो सातरो ग्यान हो सक। भाषा विष इत्तो ई कवणो है के लिखारा आप आपर खेतर मे ईंज चालू वाली'र सबदा रा की माह छोड देव ता ठीक रैव। राजस्थानी साहित्य री घणी लाम्बी, अखूट अर सैंजोर परम्परा है। घणा ई ग्रन्थ छप्या है। लिखारा आ रो भी अध्ययन कर तो आज दूणा वध। साथ ई वा न ओर ओर भाषावा री महताऊ रचनावा न भी पढणी चाइजै। जका यण ईं की लिख्या है, बो सगळो छपण जोग ईं है, आ बात साची कोनी। विचार माथ विचार अर काटणो छाटणो, जोडणो घटाणो ता चालता ई रवणा चाइजै। अर ईं पछ ई कोई चितराम महताऊ यण, बी म उजास फूट, बा ओप। जे लिखारा भाइ आप आपरी रचनावा न ईं दीठ सू भी फेरू दखता तो मन भरोसो है के थ मत्त ई की न की काट छाट अर सुधार करता। ईं बार तो जिक रूप म रचना मिली बी रूप म ई आपर सामी है। घणी रचनावा आपर सामी आवै, ईं वास्तै एक लिखार री एक रचना ई टाळ'र लीवी है।

एकर फेरू शिक्षा विभाग न घणा घणो धन्यवाद अरपू-दो कारणा सू। एक तो इ 'विविधा' न चलावण प्रकासण सारू अर दूज मन इ री सम्पादक माळा म जोडण सारू। विभाग कानी सू जे थोडा टम ओर मिलतो ता स्यात की ओर सातरो काम हावता। अेन वखत पर जा की हो सक्यो, आपर सामी है। अरदास इत्ती ई अ है के आप लिखारा री कूख न देखो चूक न नही।

हीरालाल माहेश्वरी

(हीरालाल माहेश्वरी)

बी 174 ए राजेन्द्र मार्ग,
बापूनगर, जयपुर 302015

अनुक्रम

रेत रो हेत

गद्य खण्ड

अेक पाव दारू

नृसिंह राजपुरोहित

उण दिन शहर सूं गांव आवणा हा। बस में भीड़ अणूती ही। पण संजोग सूं बारी कनली सीट मिळगी। गरमी रा मौसम अर टैंट ताईं बाळती रैट। जीव अमूभण लाग जावै। इण वास्तै बारी कनै सीट मिळ जावै तो गंगाजी में न्हाया। पण गड़बड़ आ हुई कै म्हारै कनै अेक रवारण आयन बैठगी। दैनी कई महीना सूं ठीन र पाणी रै नी अडायो होसी। 'अेवडिया अेमेंस री पसवाळ सूं नाक री डाण्डी फाभण लागी तो म्हैं मूंडो बारै काढ लियो। इतराक में अेक डोकरा बाजी पाटला भेळा रख बानी आवता निंग आया। कन आय नै हाथ सूं सिनाख री परमयी पूछणा लाग्या—

'पोटनिया अस सविस आदज है कांई सा ?'

'हां आइज है सा, आपरै कठा ताईं पधारणो है ?'

रामपुर ताईं जावणो है सा, मोटरडिया रा निरा रै गोगा ऊभा बळै। री ठा ड कोनी पड कै किसी कठै जावै।' बाजी आती आयोड़ा लगाव हा।

मायनै पधार जाओ।' म्हैं कह्यो।

अब पधारणो कांई है, भटकी में घुराणो है। ड्राइवरियो सीट माथै बळ जावै तो पछै मायनै आवणो रुज है। थोड़ी ताळ तो मोरी सास लेयला।'

इतराक में फिल्मी अदाज में लटिया बिमेरिया कंडक्टर आयग्यो अर कान माथै फस्योड़ै पैंसिल रै नन टुकड नै हाथ में लेय र टिगट काटण लाग्यो। रवारण री बारी आई तो उणनै ठा पड़ी कै वा गलत बस में बठगी है। अै माडती !' कैंवती वा कूदी अर उतर नै भाग छूटी।

म्हैं बारै ऊभा बाजी नै इशारो कियो कै सीट खाली होयगी है फुरती करो। चळपळ री खेती अर बेळा पुळ री दान। चूका पछै चौरासी है। डोकरा मायनै आयग्या अर रवारण नै आसीस देवता बोल्या—भलो करजो भगवान

लिछमी धारी। म्हे टाबर बानी मरी मींट म रह्यो। उमग गाठ-गमठ र रग टग। मटिया गातिय रा आगा ढींगा गडयाडा डाकी वध्याणी हाथा गगा रा नागा रिरळयोनी अर चपण मैना माण। नरणां सू अमनी हग हार ज्यू लाग हा।

चरगा न चमाई गाल निजावनी वगन गाडी म भर ज्यू उम जद ऊगर अर नीच धबाधब भरीजगी ता मुसाफरा रा गाडू सतम हावण लाग्यो। पण डाईवर रो हान पता ई नी हा। दरजी रा बटा न जीवणो जितर सीवणो। ओ तिमो अेक दिन रो काम ह। सू हायजपो घर ता था नीज दिन मर जाय। रायरी सरणा मुसाफर आपरा नरमा लै। काम ता काम र ढग म हामी। ड्राईवर मनीमवी चौम धू ई नी गिणीज। बस छूटण री टैम पान वज्या री हा पण जद साडी पाच बजण लागी ता क्याइमर बुरा राना माचग्यो। लुगायां री तीखी सुर टाबरा री चीलाड अर आदमिया री हाकाहूकी। कान पडी बात नी सुणीज ही।

राम राम करता छेवट बस रवाना हुई तो की जीव म जीव आयो। डोकरा बाजी उबासी लावता बाल्या— 'आज ता नाठा दौड म अमल ई गोनी ऊगी फेरू लवणा पडमी।' म्हारो अदाज सही निकळयो। डोकरा अमल रा मोटा नखाणी हा। बातचीत म ठा पडी के दिन भर म ताळो भरियो अगाव जाव। कवण लाग्या— अमलदार हा सा ऊग्या पछ ता आराम रा लारा उतारता पण नी ऊग जितर की यार ग वानी। मार्ग जाण आज मरिया। बाजी गमीज र मायनी जेब म सू प्लास्टिक र टुकड म बध्या अमल बार काढयो। नहव अर सुपारी साग चाकू सू बिया बणाया। पछ कूमच कूमच जितरा दो बिया हथाली म नयर म्हनै मनवार करी। म्है हाथ जोड दिया ता बाजी मुळक र दानू बिया आगर मट म नाख्या अर मिसरी र ज्य चावता थका जोर सू खंखारो कियो। पछ अमल रा वखाण करता बाल्या—

> नट पुराणी नर सगपण रण सू म्हे सही।
> कुण कहै रणनै जेहर आ कादी इमरत विसनिया॥'

म्हन बाजी री वाता म रस आवण लाग्यो। असनिया री वाता रो ठरको अर मठाठ न्यारो।

'आपरो नाव?' म्है पूछ्या

'नाव ईश्वर री म्हारो नाव पतियो।

किसा सरदार?'

राजपूत हू।

गाव किसो आपरो?'

किशनगढ़ न सा रावळो?

म्हैं ओळखाण दीवी तो बाजी राजी होवता वा'या—'नाव तो आपरो कइ दिना सू मुण्योडो पण दरसण आज इ हुया।'

'दरसण दीनानाथ रा।' म्हैं नरमाइ मू कह्यो।

इण र पछ अठी उठी री निरी जाता हावनी रही। फतजी र मन जीवण र अनुभवां रो लूठो खजानो हा।

बस सूकडी नदी पार करी तो दिन टयूमगू रयग्यो। मारग मे मोकळा नना मोटा गावडा आव। दो अेक घटा म बस रतनपुरा र गारव जाय पूगी। दीया बत्ती री टैम हुयगी ही। अठ बस स्टैंड तळाव री पाळ नीच आयोडो। अेक कानी आम पणघट रो मारग दूजी कानी कन्या शाळा तीजी कानी दारु रो ठेको अर या सगरा र बिचाल बस स्टैंड।

रतनपुरो यू खाती पीती बस्ती। उपजाऊ जमीन चाखी पदावार। जिण वरस बरसात आछी हाव अठ अनाज धूड री गळाइ पाक। सवज सू गेहू चणा रो धम लाग जाव। अठै रा करसा मारो सुखी। शायद इण कारण इ गाव मे दारू रो बेसी चलण। यू अेकर कोड बस्ती जिण मेड पड जाव उण मारग वुई जाय। नु वी पीढी जूनी पीढी सू गुण ग्रहण करती र व अर इण भात आ परपरा चालती ज र व। इसी ठौड फन फितूर होवणा सुभाविक वात। काम पडया दूज तीज वरस कोई माटा यवाडो इ हाय जाय। इण रा म्‌ रतनपुर री इण इलाक म विशेप ख्याति।

धूड रा उडता गतूल माय जम आयन रकी ता जेवर अधार घोर हायग्या। पण थाडी ताल म सेवटो यम पडया। अळगी चाय री दुकानडिया माथ पीळी पीळी अर मादी रोशनी मे फिरता थिरता मिनख प्रेत छाया ज्यू रावावण लाग्या। इण वगत अठ दा तीन वसा भेळी होव इण कारण मुसाफरा रो जमघट लाग्यो रव। बस र कनै अेक कानी जुगाया री भूनरो बठो बतळ कर हो अर कनै ई मादयार बठा चिलम री फूक माच हा। इतराक म दारू र ठेक कानी मू दो तीनेक शराबडिया आवता निग आया। सगला आछी तरिया धाप नै पीयोडा होवण सू यरथर शली म निरत करता चाल हा।

वा न देख र बस म बठयो अेक रसिक मुसाफर गुणगुणावण लाग्यो—

'जे करतो करनार, मरवरियो ई मद तणो।
(तो) माहे छोडता नाय पडिया ई पडिया पीवता।'

फतजी पाछळ फर न अेकर उण मुसाफर कानी खरी मीट मू देख्यो अर पछ मुळकवा लाग्या। मूछा र अळूझाड म दब्योडा हाठ बाको भगिमा मे वार मन री बात भाखण लाग्या।

बस र कनै जुगाया री भूनरो बैठो देख र दारूडिया फाग री राग म बोलण

लाग्या । थाडी ताळ ता जोगडा मूं बातां पण जद वै अणी सूं मन मायं उतरग्या तो म्हारा हाथियां नय र उठ्या । जद मनजी अर दूजा भी सुमाळ डीर म ता पड ता बांरी रमण निरख माय दखन म जाया ।

धनजी थाडा म्हार सूं आगा बठ्या अर निमाणा लागग्या डीगर गर म जाया— भाग दुनिया त अखाड रर जाणो । निराम ठोरी मांग अर दुजा पण मानव री आग री उपद । व म्हार मूं बाती दगता आग जाया— पुरोहित जी आपरे अजाण न हुवारो दिराव—पगत अथ पाव दाम र वारण म्हारी जिन्दा बरबाद हुयगी । म्हे आछो नरिया सुणायोडो हूं । पण वाम्न मण रा सगरा गुण अवगुण थारी तरियां जाणू ।

म्हारी रग र व मरी मोट सूं अधार बातो म्हाण लागग्या । म्हैं समभग्यो क य आपर अतीत म डूबग्या है । थाडी ताळ ता म्हैं वा नी इडया बातां पण धेरट सूं न तुडावण वाम्न वा न बनटावणा पडया ।

दीव री बलती बाट नै बती उजास म्यण वास्ते थाडी पाल्लायणी पड । म्हे वा र आम न छेडता पूछ्यो— फगत गाव भर दारू आपरी जिन्दगी रिया बरबाद परदी मनजी ? आपन वारी अेनराज नी हाव ता म्हें विगतवार बात सुणणी चावू ।

व अतीत र ऊंड घुव म उतरन बालण लाग्या । म्हन म्हारो लगायो जाण थारी आवाज पताळ म सूं आयरी है अर म्हैं कुव री पाळ माथ बठो सुण रह्यो हू । वे हाळ हाळ बोलण लाग्या— टाबरपण री सुंदर पढाई म बीरयोडा व दिन आज हू याद करू तो आंख्यां म पाणी आय जाव । कारण उण सुन्दर जीवण मारग म थोडी सीक आगे बढता अचाणचक अेक इसो मोड आयो क म्हारी पूरी जीवण धारा ई बदलगी । सुख रा दिन सुपना होयग्या अर जीवण दुख र घोर अंधार म डूबग्यो । आज आप म्हारे शरीर री हाल देखो इ हो । पण ठेट सूं इणरी दीदार इसो नी हो । टाबरपण अर जवानी म इणरा ठाठ ही न्यारा हा । आ सा जिकी अब फकीरा जाणी हुई है । म्हारी मा म्हन कयवो करती— थेरा धनै कठई निजर नी लाग जाव । अर मा री वात नीची नी पडयी । म्हन सागाणी जमान री निजर लागगी अर म्हार सुख री ससार उजडग्यो ।

माइता री अेका अेक औलाद हावण सूं वारे मन म म्हारे ब्याव री घणो चाव हो । पण कारण होठ सावळो पडता ई म्हारो ब्याव होयग्यो । जिकी राजपूत कन्या म्हार लारे आई वा साक्षियात देवनामी ही । उणरे रूप अर गुणा रा म्हैं काई बखाण करू । वा काइ श्राप ग्रस्त देवात्मा ही जिकी इण धरती माथ दुख भोगण खातर इ जलमी ही । म्हार साग उणरी घरवास पूरा तीन वरस रह्यो पण म्हैं मे यू जणा मरुधान म फगत दो जग्म भेला रय सक्या । म्हारी उमर रा वाकी

अटठाईस वरस ता जस मे ई वीता।'

'अटठाईस वरस जल मे ?' म्है पतजी र मूड सानी दखता रह्यो।

हा पूरा अटठाईस वरस जळ म ' वे निसासा नाखता बोल्या—'म्है वीस वरस री जिण जाव जवानस्या न घरा छाड र जेल गयो हा उणै पूरा अटठाईस वरस अेक तापसी री जीवण वितायो। वा धरती माथ सूवती रही। जीवी जितर ई मोठी चूठी जवान माथ कानी दियो ने वार तिवार ई नु वो कपडो अग र माथी अडायो। म्है जेळ सू छूटनै आयो ता वा टी बी म ग्वागर हुयोडी धरती माथ उघराण पडी ही। म्हार आया पछ ठीक पनरव दिन उणै शरीर छाड दिया। जाण म्हारी लाध वास्त इज उणर गोळिय म प्राण अटकयोडा हा।'

बस री डाईवर आपरी सीट माथ आय जावण सू मुसाफरा इ आप आपरी ठायो पकड लियो। पतजी हाथ री बोडी वार पक'र बात आग बढावता बोल्या—ता आपन अरज करू। गाव म मदिर हाव उठ उगरडा ई हाव। भला मूडा परपरा सू हावता आया। म्हार गाव म दारूडिया री अेक लूठी जमात ही। जवान छाकरा नै आपरी जमात म दोक्षित करणा व आपरो पविश्र फरज समभता। कोई आपर मस्रारा सू इ बच जावो ता भलाई, बारी बारी ता काशिश पूरी रखती। मिनख जात री आ परपरागत कमजारी है क वा गुण ता सीखतौ सीख पण अवगुण तुरत साग लेव। नैनो टाबर आछी बाता ता सिखाया ई कानी सीख पण गाळा बालणी बिना सिखाया इ सीख लवै।

'मुसगत र कारण म्ह ई दारूडिया मडली म दीक्षित हायग्यो। गधा पच्चीसी री उमर ही। ऊडी अकल ही कानी। शाक हाटा र लाग्यो ता लाग ई ग्यौ। उण जमानै म दारू उत्पादन रा काम आजकाल कुटीर र ग्रामू उद्योग र रूप म ता ना पनप्यो हा पण ठका माथ चाखा दारू माकळो ई मिलतो। उण म आज जितरा गगाजल ई कानी भेळीजतो। इण कारण दारू तज हा अर थाडा पीधा ई जबरो नशा आय जावता। म्हा वाळी जमात रात पडता ई तळाव री पाळ माथ पूग जावती अर सुरापान री कायक्रम शुरू हाय जावतो।

अेकर चादणा रात म म्हारी जाजम जम्योडी ही अर डाढी मनवारा चाल ही क म्हार गाव री तजिया भाबी उठ आयी। तजियो म्हार सरीखो साइणा माटयार हा अर सीध सुभाव रो गरीब छाकरो हो। उणरो ब्याव वगना गाव रदूजा म हुयाडो हा। बार आपसरी म काई टंटा पड जावण सू तेजिया री लुगाई नै उणर पीहरिया सासर भेज कानी हा। इण सारू न्यात पात ई भेळी हुई पण काई मामला बठो को नी। इण वास्त तजियो चाफेर सू थाक न म्हान कन आयो हा। वा हाथ जाड न दीनता सू बाल्या— पतजी भावा 'च्यारूमेर सू हार न अब आपरी शरण मे आयो हू। आप म्हारी लाज राखो तो बातडी बण। नी

ता म्हे जीवतो ई मरिया जिसो हू ।"

म्हे उण दिन पाव भर दारू पी र त्यार हुयोड़ा बैठा हा । तजिया री करुण पुकार अर दयामणी मुख मुद्रा देखन म्हन जोश आयग्यो । म्हे साथीड़ा न कहयो—'परण्योड़ी लुगाई न भज काना आ तो तजिया री काई पूरै गाव री तोहीन हुई । आपा नै इण मामलै म तजिया री मदद करणी चाइजै । थारी काई राय है ?'

'सगळा जेवण सुर सू गाया— जरूर जरूर ! आपा तजिया री मदद नी करस्या तो दूजो कुण करसी ! आ तो मुगणी काम है । पूरै गाव री इज्जत आवरु रो सवाल है । थारो हुकम हावै तो म्हे सगळा मरण मारण न त्यार हा ।"

मूडा मूडी बापडा रा जिसो परण्योड़ी लुगाई न मासर नी भेज । यू वात म्हार लाग—म्हे तज न कहयो अर नश री टर म लाठी काठी पकड़ ली ।

म्हारी हाबल आग—घी री काम कियो । सगळा साथीड़ा पवन र घोड़ असवार हा । हाथल मुणतार लाठिया, धारिया अर फरसा लयनै बहीर हायग्या । रात चान्णी ही अर रदूजो गाव नैड़ो ई हो । हाकरता उठ पूगग्या । भाचिया रा माहल्लो गाव र बार ई आयोड़ो हो । लोग बाग ब्याळू करनै निवड्या ई हा अर हाथ चिलम री जुगाड़ म लाग्योड़ा हा ।

तेजै आपर मामरिया रो झूपो बताय दियो । झूपार जाग आगणा र बीच तजा री लुगाई अर उणरी मा बैठी वतळ कर ही । आदमी कोई घर नी हा । म्हा वाळी फौज अचाणचक उणरी मुवाड़ी पूगी तो मा बेटिया घबरीजगी । नी तो वे नाठ सकी अर नी वा सू हावो ई हुयो । म्हे तज नै कहयो—'देख काई है ! हे रनादार, थारी परणतर थारी निजरा सामी बैठी है । झाल बाहुडी अर ले चाल । देखा किसी माई री लाल आडो फिर ?" तज आगण जाय र लुगाई री बाहुडी पकडया अर घसीटण लाग्यो । मा अर बेटी दोनू जोर जोर स कूकण लागी । छिनक देर म सगळो माहल्लो भेळो हायग्यो । तज रा सुसरो अर मोटयार साळ लटठ लयनै आया अर म्हान मचकावणा शुरु किया । म्हार सामी उघाड माथ तज री साळा लटठ लिया ऊभो हो अर वार करणो ई चाव हो, क उण पलीज म्हे म्हावाळो लटठ घुमाय न मचकायो उणर माथ म । माटी री हाडी फूट ज्यू फट्ट करतो उणरो गापड़ो फूटग्यो अर वो हेटो पडग्यो । जोअ बार आयगी अर दो तीन वार तडफड़ाय न प्राण छोड़ दिया ।

अेक र पछताई दूजा म भाग छूटा । जाण चिडिया म ढळ पडगी । म्हन अचूभो इण बातरो हुयो क म्हारा सगळा साथीड़ा ई भागग्या । चादणी रात म पगा कन लाश पडी अर म्हैं सफा अेकलो ऊभो । नशो उतरग्यो अर हकीकत समझ म आई । पजर हायग्या । हाम करता होश वळग्या जब काई आगी ना

आवे। म्हारी आंख्यां सामी जळ रा फाटक अर फांसी रौ फंदा घूमण लाग्यो। मारेता री हालत साच'र म्हारा काळजो कांपण लाग्यो। रात हाल आधी सू ऊपर बाकी पटी ही अर च्यार मील माथ छप्पन री भाखर वार कास री भूई म पसरयां पड्या हा। इण सिवाय दूजो काई मारग नी हा। म्हे ई उठ सू ततीसा मनाया अर रात थका भाखर भेळी हायग्या।

माक्ला दिन भाखर रा फळ फूल खायन अर भरणा रा पाणी पी पी नै काढ दिया। पुलिस म्हार लार लाग्योडी ही पण म्हे दिन री वखत गुफावा म पड्या रवता अर रात पड्या बार निकळतो। इण भात कई दिन काढ'र जद भाखर में की खावण न नी रह्यो ता रात री वखत कनला गावा र घरा म धुस'र खावण री सामग्री चारण लाग्यो। पण कहयो ह के सौ दिन चार रा तो अेक दिन साहूकार रो। मो अेकर गाव वाळा म्हनै घर न पकड ई लियो।

'पुलिस रा कागदा म म्हे फरार घोषित हो। पकडीजता ई मुकद्दमो शुरु हुयो अर म्हनै आजीवन कारावास री सजा हुयगी।'

बस बरणाट करती दौडी जाव ही। रामपुरी अब ढूकडा ई हा। फतजी निसासा नाखर आपरो थलो सभाळयो अर म्हे जाण नीद म सू जागी। □

सातू सुख

भवर लाल 'भ्रमर'

हा म्हैं हीरा री हीज बात कर रयो हूँ। हीरा जिण रो नाव आखे गाव री जबान माथ। जद सगळा ही उणरी चरचा कर तो पछ म्हैं ई लारे क्यां र यूँ? हीरा किणी हीर सू कम नी है। रूप रंग इसा, क नजर तो दगता ई रैय जावो। फूटरी फरी परी हुय जिया। रिमाइ परावा पराय दो आपावण री जरूरत कोनी। उणर डील माथ हर काई शोभा फब जाय। उण रो भाव नवम घडण म विधाता न किसी टम लागी हुवला। म्हैं उण चरचा म इत्तो रंग नय रयो हूँ इण रो आप कोई बीजा अरथ मत लिराइजा। म्हारो तो मतलब फगत इत्तो हीज है क आखे गाव म उण री शोभा हुय रई है।

गाव रा घण खरा वाणिया दूर दिसावर म आपरा विणज वौपार कर। दूजा लोग किरसाणी कामा म लागोडा आपरी टम काट। हीरा रा धणी ई कलकत्त कमाव। बठ आर कपड रा धधो है, चाल ई चोखो। दो तीन साल सू अेक र गाव री मुसाफिरी निठा ताव आव। जी र ऊपरयाकर तीन चार महणा चौमास रा काढ इत्त दिसावर सू तडो आय जाव। इणरा अेक कारण तो ओ है क दूजो कोई काम सम्भाळणिया कोनी। हीरा रा सुसराजी ई आजकाल अठ हीज रव। वान बुढापो आयग्यो। बिया ई जेक आदमी घरा चाईज। ओस्या आयगी जण धीगाण बठा है नी जण अ तो राक्या ई नी रुक।

म्हैं इण गाव म लारल बरस ई बदळी हुयर आया। आया जद मूं ई सठा र धरा रय रया हूँ। सठा सू इ नी, म्हार तो आर सगल घर परवार सू चोखो सम्बध है। आज तो हीरा सू ई म्हारा सम्बध निजू अर हेताळा हुयग्या। पण आया जद एकी बरा म्हैं सू छव सात महणा ताई वी निजर ई का मिलाई नी। बात करणी तो किसी क हुव? हीरा रा रूप रंग न डील-डाल दख र देवतावा रा ईमान डिग सक तो म्हैं किसी चकारी म हो? म्हार ई उण सू बाता करण रो मन

हुवता पण वा भल घरा री बहू बेटी ही। इण कारण मनरी मन मे ही ज रयगी।

सठा र घर री वामळ ब्रौत बडी। बासळ में ई अेक साळको, बीम म्हारो रवास। स्कूल टम र अलावा म्हारो काम किताबा पढणा ईज र व। काई पत्र पत्रिका या उपन्यास पढती वेळा ई छान-ओल म्है चुपचाप हीरा री दिनचर्या देखता न उणरी गतिविधिया न निरख्या करतो। वा दिनुग सिझ्या दोनू टम गाया न नीरती, पाणी पावती न दूवण रा काम ई उणनै ई करणा पडता। पाटठा उठावणा अर थेपडया थापण रो काम ई उण र जिम्म हो। सासू नणद तो कदेई छठ छमास गाय डागरा नै सभाळ। मायलो काम ई सगळो वा ई कर। क्यो नी कर? वा इज तो इण घर री वहू ह। भाभरक तारा थका उठणो अर रात न सगळा र सूता पछ सूवणो। फूस वारी मू लेय रसोई पाणी तकात सगळा ई काम उणी न-करणा पड। ऊपर सू छाटी टीगरी री मा हुवण र कारण रात रा पूरो सूवणो ई नसीब मे कोनी। इत्तो काम करता थका ई मूड सू चुमकारा नी कर। काई काम भाळादो, नटणो तो हीरा र सभाव म ई कोनी।

ओ ईज कारण ह गाव सगळ म हीरा री शाभा रो। कठई सुणला अैडी कामेडी न सणी बीनणी म्हा ता आज ताई का देखी नी। लाघू जी रा मोटा भाग जिका र इसी लाखीणी बीनणी आई। दमवी ताई भणयाडी पण माट मिजाज नडा आगो ई का'नी। गावाळा ता शाभा कर जिकी कर ई ज है, इण री सासू रो लाड ई कम को नी। कवत ई ह क मा र सरायो बेटी को मराइज नी। पण अठ तो हीरा रा माटा भाग जको उणनै सासू खुद सराव, आग्व गाव म। हीरा री सासू न कोई लुगाई कठई मिल जावो। वहू सारू बा अेक ई वात कैव, 'म्हारली बीनणी री होड हुव? बापडी घणी ई सणी है, आग्व मे घाल्या ई कानी रडक। भल घरा री बेटी है। वाई, म्हार ता घर सगळ रा काम वा अेकलीज कर।'

'माइता री पुगाई आटी आव ह ओ। नी जण अजकाल की किसी बीनणी काम कर'र छाती ठार है?' इण तर वात सामळी लुगाई कन सू सुणण न मिल जण उण री सासू भळ कसी, 'हाँ आ,' आता है इज। महारली जेठाणी जी रैई देखलो, घणा ई चोखा घराणा देख र टाबर लाया। पण छाती सा राधली जेठाणी जी री। य ता बापडा मैणा है जण धमीडा सव ह मायरा माय। नी ता इसी बहू रो चुटियो भाल र धोळ दुपार काढद, धोळा आळा'र। 'इयाई है आ। अजकाळ ता ढाळा ईज विगडग्या। ऊचा चढ चढ देखा, घर घर ओईज लेखा।'

- काम प्यारा लाग है आ, चाम रो काई? दिन-रात राडिया करती रव है, जण कण ई मन ई दया आ जाव बाई। म्ह तो घणी ई दफ कया करूँ कै फूस-ममोसा अर गाय डागरा खातर काई ओदमण राखळ। पण वा ता वा इज है, सफा नट जाव। क्या करूँ क आपा र किसी पइसा री कमी है बीनणी' जण वा

उथळा दर्वे न घणा गुड भीता रै थथडणनै वा नी। हाड रा गा' साड ? म्हैं अठै काय वास्त आई हू। हुव जिसी थारी चाकरी वजा दू ईं म मन घणो आणद मिल। पईसा अळया कोना जाव, मच्याडा काम ई आसी। इण तर वा तो उलटा मन ई सीख देव।

'म्हे उणन मायरा न्वेण रा सात्त र काइ काम र हाथ लगाऊ ता वा मट दणी मना कर द। कव म्हारो पछ काई मुग है? थ इण उमर म काम करता चोखा थोडी लाग सा। मूड रा ठीकरा मन पाती आसी। बसो-बीनणी म सफाई हुया दया वानी। बूढ सार माईता न अवेई आराम को देव नी तो कद देसी? थे आराम करो, म्हैं म्हार हाया मू काम ध पो करती रसू तो हाड गौडे निरोग ई रसू। ठाली बठया डील मे वादी मरीज जाव। बापडी घणीई सणी है म्हारा ता घणाई काण-कायदो राख। जिसा नाव है बिसो'रा विसो काम। सगा परसगी ई बापडा सैणा। टाबर न जिसी सीख माईत देव बिसोई काम करया कर। आजकाळ आटी छोरया दाइ बाछेडी को नी।'

छव सात महीणा वा र घरा रवता हुयग्या जद वा र आगण ताइ म्हारो आव जाव हुवण लागग्यो। हीरा री मासू अर उणद मू ई म्ह घुळ मिळग्यो। हीरा र मुसर जी मूई रामा सामा हुम जावता। पण व घणा बालता का नी। मिलता ई अेक ई मवाल पूछता, "क्या राजी हा?" जण म्ह छाटा सो पडूतर देवता, "थारी आसीस माईज। हीरा री सासू नैं ता काई न काई हुवाईदार मिलणा चाइजता। बांगी बाता रा काई निवेडा? दिनुग सू सिंझ्या पड जावती पण व पग पाछा कोनी देवता। बाता खूटली ई वानी। जिसी ई वारी जायोडी। अेक नम्बर बातरण। क्या नी हुव! जद घर रो काम काज सगळो हीरा र जिम्म हा, ता आर पाती म ता हथाई आवती। खर! आपारा काई लवं ही। म्हारो ई टम को सोरो कट जावतो। जी लाग्योडो रवतो। गाव म तो म्हैं घणा निकळता का नी। गाव री राजनीति सू डर हा। सगळा सू वतळ हुवण लागगी जण हीरा ई क्या लार र तो। उण सू थाडी घणी बोलचाल सरू हुयगी।

उण सू बातचीत सरू हुई ता ना ई नाटकीय ढग सू। सरम शका की आदा ई राखती ही। पण अेक दिन काद हुया क व्यावण रा वा गाया दूवण न आइ ता उण माग उण री छोरी ई आयगी। वा रोवण लागगी। गाया कानी दूवण दी। या छोरी न राजी करण रा घणा ई जतन कर लिया पण वा ता रावता इज रयी। अडी हालत देख र मनें उण माथ दया आयगी। म्हैं टावर न पुचकार र गादी ले ली। ला नटाया, वा चुप हुयगी। जा पछ बीसू वार छारी न म्हार कनै छाड जावती। छोरी म्हार हीड हुयगी।

अेकर बात बात म म्है पूछ लियो नणद बाई बाट कर। व वा नी राखै छोरी न ? आ रोजी न दुरा देव। मावा दूवण न आवो जितै घडी मायत वान ई राखण दिया करो।' पण बी उथळो को दियो नी।

दो चार दिन आडा घाल'र म्है ओइज सवाल फेरु कर लिया। जद उण कया 'रमाई री बेळा बाईजी राटी बीजी कर अर सासूजी बा न भळावा मेना कर। जण कुण राख ? ताई सासूजी ता बापडा राखण न त्यार है। पण छोरी ज इसी वळै जकी बा कन रय को नी। रोवण लाग जाव जण काइ करू ? साथ ई लियावू'र हुवा। अठ था कनै रमवा कर। था सू आ घणी राजी रवै।'

हीरा री इण बात मे मन की कूड लखाई। कया क म्है चोखी तरया जाण हा क राटी टुकडो, दुआरी करया पछ हीरा न खुद न काम करणो पडतो। पण म्है बात न नी बधा र इतोइज कैवता, 'आ तो की को नी। मन खुद न ई टाबर रमावण रो घणा काड है, टाबरा म भगवान विराज। घर ई म्है टाबरा सू घणो राजी रवू।

'थारो ब्याव हुयग्यो काइ ?' उण पूछया।

'हा, तीन साल हुयग्या। अेक छोरा ई हुयग्या।' म्है कया।

'जण ई था न टाबर रमावणा आव। बा मुळक'र बाली।

इणी तर कद कदास हीरा सू अेक आध मिनट बात हुय जावती। घणो मौको तो हाथ आवता का'नी। पण इण बातचीत रा टुकडा मू मन लखाया क इण र हिवड म कठइ की है। थार सू दीख ह बी सू की यारो निरवाळो। की न की पीड है, काइ न काइ टीस है, पण आ आपरै होठा माथ नी ला रयी है। म्हार आ इ अेक शाध विप हुयग्यो।

ज्या ज्यो म्हैं उणर अतस म भाकण री कासीस करी मन लखाया, क इण हिवड म लावा सुलग रयो है। म्है घणी इ दफ, न्यारै इ तरीका मू बात न उळट-पुळट पूछया, पण हीरा बात न हस र टाळ जावती। उण कदइ आपर घर री बात म्हार सामै नी' करी। पण खासा दिना पाछ उण न म्हैं माथे पको भरोसा हुयग्यो क जो म्हारी बात न अठीन बठीन नी करला। मन आपर भाइ री ठौड समभण लागगी। जण कणइ कणइ आपरा समभ र घरविद री काइ बात सुणावती। इण तर उण रो जी हळका हुय जावता।

अेक दिन वा घणी अणमणी सी दीखी। म्है पूछ लिया। 'आज काइ बात है, बाइ ? जी सोरो कानी दीख ! इत्ती उदासी किया ?' जण पला ता उण इन बिन दरयो अर पछ अेकाअेक फीसगी। म्है कयो, 'राव काइ है, गली ! बात बता मन। काइ हुया ? जण वा बाली, 'कोइ एक बात हुव तो बताऊ, बीरा ! पूरबलै जलम रा करयाडा पापा रा फळ भुगतू हू, बठी। घायल री गत घायल जाण ह। म्हारी हालत न दख'र कोई साच ई को नी सक क हीरा न ई काइ दुख हुय सक।

सगळा ई जाणै कै हीरा र भाया घर मिनख्या न रमातू घर मिराग्यो। गातू गुस्र है हीरा र। कांई कमी है ? पण रिणई मन गहैं मू दगी है ? माय रा माय रिसा घमोडा मयू हू म्हे ? मा जाय भाई न ई म्है म्हारा दुखडा वो बताया नी। कदेई म्हे म्हारी जामण (मा) र आय मागर रा राजणा रा रायानी। कांई कर म्हारी मा र आइ ज सीग दियाही है। नी ना हीरा री बडाया मोळीज हुय। भाई न ठा पड जार ता कान ई आय र आ मू बात कर जिमा है। राड बधता रिसा बरस लाग।'

ताई कांई यात हुई बता ता सरी ?' म्है भळ पूछया।

यांई बताय्। कांई ऐक हुव ता कवू। दिनुग मू सिझ्या तांई ऐकल मशीन दाई काम करूँ। तो ई जस का नी। गातू अर नणद कांई ताना दे दे'र छाती म छेकला कर न्हाख्या। रायू ताई किण आग ? मिनख ई जा र कया कया गाव। जा री सुणता म्हारी बद सुण। वा ई म्हारी पीड नैं समझी ता मनैं माय रो दुख। उणन माड ठा म्हे म कांई कांई बीत। पण उण रो ई कांई कसूर। लाईदा जरमा सू ऐकर आय वी मे ई अ लोग ऊँधा सु वा न कूडा साचा दुःखा भिडाय क व कव जिको हुवे साची अर म्हैं कित्ती ई साचो कवू परकूडी ईज लखावैं। कना कना उणरी आस्था रीस म लाल हुयगी। वालोज्या का नी।

ठर'र भळ बानी। पण अबकाळ थायस मू। अजार व आपाडा है जण को नो कवा सुणा कम करैं। मन म अणूता सावचेत रव। कठई बेट न कम नी हुय जाव क लार सू लुगाई न दुख देवैं। दिन भर पाणी रै बळद दाई गटू तोई आरा जी सोरा कोनी। कदई किणी काम म सिली क ढील हुय जाव ता सुणावणा सरू करदैं भई आ ता वडे घरा री बेटी है पी र म तो कदई काम र हाथ ई लगावणा किसा क हुवैं। नौकर चाकर चौईस घण्टा हाजरी मे रव। अठ बापडी न कूव म न्हाख दी जण इसो राडियो करणो पड। लारली तो सगळी कना ऊन घरा गई। इण रा ईज भाग फूटया जको म्हासू पानो पडया। कठई सर म आवती ता राजस करती। जद क म्हैं कदई ओ अणसा का लाइनी मन म क भई म्हन म्हार माइना कूव म न्हाखदी। तोई अ दिन रात खाव मन। कदई कांई हाथ मामला काम सळटा र जाव जित थाडा ताळ लाग जाव तो ताना माथ ताना। बात रा बतगड उणा द। ऐक दिन री यात हुव ता गई करा, यम ई खावा पण आ ता राज रा राडी रावणा है।'

हीरा आग की जार नवती बीसू पना म्हैं उणन टोक र पूछ लिया, ऐक बात बता। तू कव जिकी ता साळ आना माची है पण थारी सासू अर नणद र मूड ता कदेइ थारी मूड रा ग्गा आ ई कानी सुण्या।

आईज ता बात है भाई सा ब। बा र मूड नी सुणी ता किण ई म्हार मूड ई

वा री मूड सुणी है ? आ तो मोर्ब री वात है म्हैं, था आरो रा'र जी हळको कर लियो। नी तो चिडी रो जाया ई को जाण सकै नी म्हारै दुख दरद न। मार ई ले' अर रोवण ई को दनी। तडफा तडफा'र मारणा आर कीवर हुया करै है ? गळी-गवाड आया-गया नै वडूँ आळा आगे म्हारी इत्तो वडाया करणी अर घर म इसो सलूक। काई मान मव ! वडाया आपरी नाव न करै। वारी करमोडी,वडाया वा वारत ढाल रो काम कर। कव है नी—कुठोड लागी न सुसरो वद। साची वताया भाई सा व ! म्हे किणी आगे म्हारा दुखडा राय दू ता कोई न पतियारो हुसी। म्हैं थनै सू जे चुपचाप सुण ई लेसी ता लार सू काई कमी ठा ह ! आ ईज कमी नीं क सासू तो बापडी इणरी वडाया करती ई का थक नी ताइ इणन देवो दीख जिसी का है नी। अजकाळ री टीगरया इसीज हुव जव म फेर भणयाडी न्यारी ह !" "पण वरताव रा काई कारण नो हुवला !" म्ह पूछ्यो।

'कारण ? आर ता की का नी। आ म्हार बाप कन धन देख र सगपण करृया है। हमियत मारू वा ब्याव चाखो कर न्यिा। देज लेज ई घणोई करयो। पण आ रै मन मुताबिक का हुयानी। आ र आग हेठ न का आयोनी। धन रा लाभी मदन राजी हुय सक ! मजे री बात आ है क म्हार मा बाप सू बात करण री सरधा आ री इ कोनी। लोका न कव घणाइ दियो है। दिया लिया तो डूम राजी हुया कर। म्हान तो टाबर चाखो चाइज हा जिका मिलग्या। पण मन सुणाया बिना को चूक नी। थ साच चुपा चुप इ आ की लयार तो चाखा रव।'

घणी इ म्प म्हैं हीरा नैं उण री नणद र वार म की पूछणो चाव हो पण म्न्इ पूछ को सकयानी। पण उण न्नि बात में बात आयगी जण ठा पडयो कै हीरा री नणद आपरी हळकी जबान र कारग सगळा सू राड माल लेवती रय। इणी कारण वा सासू सुसरा सू रीसाणी हुय'र अठ बठी ह जम र। नणदल बाइ रा जिद है क उणरा वीन सुसर सू सीर काढ'र न्यारो निरवाळो घ धो कर अर सगळ धन री मालक घा बण। पण उण रो मिनग बाता म कानी आयो जद आ अठ बठी हुकम हलाव।

थार सागे ता नणद रा वरताव चोखो इ हुवला ?" म्ह पूछ लियो।

काइ वताव् बीरा ! बतावता सरम आव। काल रीज बात है। म्हे बाइसा सू अरज करी म्हारो माथा दूख है आज, रोटया थ इ करलो नी। जण व काइ वात्या ठा है ? मूडो मचकावता थका कयो, "चाखो सामरा मिलग्या जण बाता आव। म्है म्हार सासर मे दिन रात काम करू, चाय कित्तो माथो दूखो, भलाइ ताव तप हुवा काम ता सगळो मन इ करणो पड। अर अठ ? राणीजी कय रया है आज म्हारो माथा दूख, काम थ करता। बाइसा वाइसा नी हयर थार घर री नोकरणी हुयगी जाण। हूह ! ठीक है म्है आज ई मा नै कसू।

म्हैं अठ विणा ट गुवायू मारी। मा म्हार मामर व र मरमा। म्हैं आर ता मयू हीम मामर म गटता सा अठ ग्या आवता ? पण गाढ े उधारणा ठीर नीं। रो सुण ईं रई।

रई गई रामर पूरी रम्मी मामूजी। थ आनाईं गाढा चोखा मानी मूनी टिठनारयाही। याम नर ना वाज। थारी दाती ठाम म्हांगे। ऊपर म मार गवरा आर ? म्हारी छागी र आज मया है आठदा मया ता थारा भना वुग मार निय। नपरा वग्ती म मरम ईं मारी आर। जीभ मा गीन नूना थार। जीवाटा परणा भूल जागी। दूध म राध र पी म साय ना ई याम वग्तां जा दारा हुय। दसी वाता हीरा जेर ईं गाम म कथगा। वी ठर र मळ ग्यो, 'क्वा भलाई पग म चडा पैंया ई कर। पण कयण री ई या ता हम हुया कर। मानी पूछो ता म्हैं थाम ई याम म म्हारी मगजी थाया गाट ली। पर थाईं नाव है अ! ओर तो थाई थयू भाई, म्हार दायज म आयाडी गिगार पेटी न गोन र थदई म्हारा थोड पूरा यो परयानी। वग्ईं धाजळ टीकी थग्या ई किगोर हुय। धाजळ टीकी तो ना कुछ लुगाया ई परया थर। मा थी बास्त ई सुणणा पड हम राणी जी सिंगार घर र पठ जामी ? विणन देगाळ सी आ गिंगार! वो थारो थुण रैयो तो अठ थानी। हीरा री मगळी वाना म्हार हाडो हाड थठगी।

साचेई हीरा इण घर म वीत ई दुखियारी है। विचारी वग्ईं राती आन्या न ताता म्हायो। ता ई धोळो ओढा र वाम्ण री धमकी न्यारी। हीरा री नणन्द जर सामू सू म्हार गेजीन ई थोडी बीत बनळ हुय पण मजान है क नार मूड मू हीरा री कुसाभा हुय जाव।

नारल केई दिना सू हीरा री सासू म्हारी जान म्हार ही व थाइ चोखो जातखी बताओ जिथो डोरा जन्तर जाणतो हुव। पण म्हैं कय दियो 'इण टग विद्या मे म्हारो विसवास को नी। आ वन ई की हुव ता न्यवता घर घर क्या फिर ? म्हारी मानो ता मास्मा अ तो जुटेरा है आ सू अळगा ई र्या।' पण बा न म्हारी बात दाय नी आई। वय ह नी जठ चाह बठ राह।

आज म्हैं किणी काम सू हीरा र आगण पग धरियो तो मन हाळ होळ बालती हीरा री सासू री बोली सुणी जी बहू र पीर आळा वन अपरम्पार धन है। काइ इसो उपाव करो क उण धन माय सू की आपा न इ मिल जाव। बीनणी न घणोट समभाव पण म्हारी बात उण र पल्ल नी पड। आप कोट चोखो जतर बणादो। पईसा भलाई कितई लाग जावो, चाखो हुवणो चाईज। आपणो काम बण जाव बस! जेक बात भळ माराज छोरो इ अजकाळ की बीनणी र इसारा माय नाचण लाग रया है। उणन बस म करण रो ई डोरा वणा दा। इत्त मे हीरा री नणन्द ई आपरी डिमाड राख दी होळ सी क इमो डोरो नो म्हार

करायद मा, क म्हारा ई व म्हारै वस मे हुय जाव । हीरा री मासू बोली, 'हा हा अेक डोरा मायली र ई बणा दिया ।'

आज वात रो निर्वेडा हुयग्यो । शाध पूरी हुयगी । बात साव माची है । हीरा भेडियाँ र विचाळ वठी है । बा रो यम चाल तो व इण री बोटी बोटी काट'र गा जाव । हीरा भाटा सू फाडीज रया है ।

इत्त मे मन हीरा बार सू आवती दीखी । उण र सध्योडा कदमा न लगा लग देख तो रियो अद ताई बा म्हार नेड नी आयगी । म्है उणन हाळ सी क मायन चालण आळ पडय"त्रा री भणक देता थका बोल्यो, 'म्है आज मानग्यो तू साव माची है हीरा ।'

उण उथळो देता थका इत्तो इज कयो 'अब म्हे ई दख रा सू बा न । बा म्हारो असली रूप कानी दरयो ।

मन लखायो क उण र जी लावो मुलग रैयो है अर ओ लावो आज नी तो काल फूटमी । हीरा विकराल रूप धार'र आ सगळा सू हैसाब पूछ लसी । आ जवान तो अबार नी मई पण अेक दिन तो खुळणी ही ह । ज्वालामुखी है, फूटण री देर है । हीरा री माम् अर नणद ज्वालामुखी रै अन मूड माथ बठ्या है । 

नीम री छाव

शिव 'मृदुल'

दफ्तर रा कतराई बाबू तो तीन बज्या ही वणा रा स्कूटर माथ बैठ'र घ मनाग्या पण म्हूँ दस बज्या सू ले र छ बज्या तक टिक र काम करयो। जेठ रा महीना री तपत सू जीव तो घणो घबरायो पण करतो नई ? साब रो हुकम टाळ भी तो किया ? कुर्सी सू उठ र साइकिल सम्भाली तो पाछला पहिया री फूक निकळ्योडी ही। पिंचर ठीक कराण सारू जेब टटोली तो मायन फूटो छदाम भी कोनी हो। दफ्तर रा चपरासी भोला काका ने पूछयो तो वो भी राम नारायण। बोल्यो, सरकारी नौकर कन पच्चीस तारीख ने पइसा कठा सू मिल बाबूजी।

अब म्हू रीस करू तो कणा प र ? गम पीता पीता तो उमर चौपन बरस री होगी। साइकिल न दफ्तर म ही पटक'र पग रगड़तो घर पूग्यो तो सिंझ्या रा सात बजग्या। पसीना सू तर-बतर हो। कमीज न उता र खूंटी माथ इयां टांग्यो, जियां आज र मिनख मिनताचार न खूंटया टांग राख्यो है।

गेला म चलती बेल्या नौकरी सू जुडी आरला बरसा री याद आई। कतरी ही बाता रो कळमाहट लिया चौक म नीम रै नीचे ढल्या माचा प रै आडा हुवण रै सिवा कई नी सूझ्यो।

आडो तो होग्यो पण विचारा रो वेग हाल थम्या नी हो। सोचण लाग्यो— वणा री नौकरी लाग्या ने पाच बरस भी कोनी हुया वणा र बंगला रेडियो स्कूटर, सोनो चादी, गिरस्थी री जरूरत री सगली चीजा है। म्हन नौकरी करता छत्तीस बरस होग्या पण भाडा रा मकान मे र रियो हूँ। केवल सूरज न परणायो है उमा रा पीला हाथ करणा तो हाल बाकी है। तिलक डायजा बाप र बाप। समझ कोनी आव। ईमानदारी सू काम कर हूँ। साब भी म्हारा पर ही भरोसो कर है। दफ्तर भर म म्हान ही जिम्मेदार समझ र सगळा काम र वास्त म्हाने ही कवे है। दूसरा बाबू तो मरजी होव जद आव अर मरजी होव जद जाव। पण

वणा न चू तक कोनी कवे । आवते बरस तो पेंसन भी हो जासी अर म्हारी जलम भोम विजेपुर जाणो पडसी । उमा रा हाथ पीळा करणा रो किम्नर ब दोबस्त होसी ?

अ विचार मन म उठ ही रिया हा अर गली रा नुक्कड सू एक सत री जोर री आवाज कान म पडी अ ल ख ?

'अलख' री आवाज सुण र म्हान वो दिन याद हो आयो जद हू म्हारा बापू र सागे विजेपुर गाव रे बारे एक चवूतरा माथे उभा नीम री छाव म बठयो हो। वणी वगत म्हारी उमर पाच साल ही ।

जेठ रा महीनो सोमवार रो दिन अर सिझ्या री वेल्या ही । गाव रा नामी सेठ साहूकार अर पटेल-पटवारी नित री भात वणी चबूतरा माथ वठा एक महात्मा री वाट देख रिया हा । अ महात्मा गाव सू आथूणे वाजू रा मगरा म बण्या शिवजी रा जुगातरा मिन्दर सू हर सोमवार ने आवता अर भविस्य मे आवण वाली वगत री वाता बतावता हा ।

वाट जोवता चबूतरा माथे बटा सगला जणा वाना मे लागग्या हा । वाता र बीच डमरू बज्यो । एक तिरसूल हाथ म लिया एक जटाधारी महात्मा डमरू न वजावता जोर री आवाज मे बोल्या—अ ल ख !

'अलख' री आवाज सुण'र हूँ उछल पडयो पण म्हारा बापू म्हने चुप रवण ने कह्यो । महात्मा रे सगला जणा धोग दी । म्हूँ भी पाछ कोनी रियो । महात्मा मृगछाल बिछा र चबूतरा माथ वठ गिया । एक बार वणा फर तिरसूल पर बध्या डमरू ने बजायो अर जोर सू अलख बोल'र कवण लाग्या, 'आगा वगत घणो खराब आ रियो है रावड गावड म खेती होवेला । धोवा मे धान निकेला । खेता म मकान अर कूडा रा फरा म चारो उगला । सुरज री भात जमी जगमगावला—दीवी कठक निजरया आवला । मिनख पागळो हो जावला—आदमी आकाश रा तारा तोडेला । मगरा रा जीव जिनावर मिनख वण'र कोडी कुजर ज्यू फरला । मिनख कठक निजरया आवला ।'

महात्मा बोलता चालता रवग्या । जोर सू अ ल ख' बोलर मृगछाल उठाई अर चालता वण्या । सब लोग देखता रग्या । वात करण लाग्या—महात्मा ने आज कई होग्यो ! हर वात बतुकी, उल्टी अर बिना हाथ पगा री करी, जणी री मूठ है न मथारो ।

आवता दो चार सोमवार तक सव सेठ-साहूकार अर पटेल पटवारी वणी चबूतरा पर आवता रिया पण वणी दिन रे वाद महात्मा आज दिन तक पाछा कोनी आया ।

आज वणी बात ने उनपचास वरस बीतग्या । सज्जनता अर ईमानदारी ने ओढया आज म्हूँ जिनगाणी री दौड धूप म उल्झ्या अणा बेथाक मिनखा मे

मिनखाचार इण नी लागी क वणां महात्मा री गगरी वालां बगत री वसीगी पर नी टर गोवी डार है।

मगरा रा रूप भिन भिन वटता जा रिया है। रोश्म कारड म नगी हावण लागी है। मुगारा आगी वधती न धोवा म धार विकरियो है। शहर अर गांवा सू जुल्या उपजाऊ खेता म पनगा ऊभो रेवण र वजाय ढेर मकान ऊभा है गणा म धान र वजाय टावर पना हा रिया है। जनमख्या रा नजी सू वधोता हा रियो है। वलद वन्दा वध्या नर रिया है। ट्रेक्टरा सू काम हव रिया है। मोटा मोटा वांधा सू आवण वाली नहरां सू अर बिजली री मोटरा सू सिंचाई हावै है। पडत जीवण री साम वाली पड जिण सू नू डा राप रा म धागी उगण लाग्यो है। कई गाव अर कई शहर आ जमी बिजली सू जगमगावण लागी है। हवेलिन म दीवो तो कठ निजरया आव है। विज्ञान रा आविष्कार—साइकिल सू लर स्कूटर मोटर कार रेल हव गाडी अर रावट नव मिनख न पागळा करदयो है। पैदल चालता वणा रे माथ गल चडै है। अणी भांत पगां सू पागळा मिनख र दिमाग अनरी वढ़ग्यो क यो गेजट म बठ र चन्द्रमा सू मिट्टी ल्याव लागी है। सोचू हूं क आकाश रा तारा तोडण म काई कसर बाकी है?

सडका पर बेथाक मिनखा न आता जाता दख र लागी है क ज्यू कटवा सू मगरा तो टाटला होग्या अर वणा रा सगळा जीव जिनावर मिनखा जूण म आगिया है। अणा वास्ते ही कोई गेर ज्यू गुर्रावे ता कोई चीता ज्यू छळ कर। काई बान्दरा जिया दांत्या करत साम आवे तो काई लोमडी री भांत चालाकी कर। ओर तो और काठ तो कुत्ता ज्यू काटवा न रपट है। बतग ही चिडया चिरकल्या री भांत ची-ची कर न चुप र जावे है। हा सगला जाण क सांप सांप रो दुसमण नी व्हिया कर पण आज मिनख-मिनख रो दुसमण है। आज जमी परे कोडी कूजर ज्यू वथाव मिनख फिर है, पण सही माना म मिनख कठक निजरया आव है बाकी सगला मिनखाचार ने खटया टाग राख्यो है— खूंटी माथ ज टग्या म्हारा पोपलीन रा कमीज री भांत।

बी ए पास कर न आज रा पाच बरस पली म्हारा दफ्तर म वण्या बाबू— जणा न कलम पकडणा म्है सिखायो— वै काई टेलिविजन खरीदणा री बात कर तो कोई फ्रीज खरीदण री पण अ सगला ता बी ए पास कर न बाबू वण्या है। अणा म जरूर ज्यादा अकल होसी। म्हू छतीस बरस पेल्या री मिडिल पास बाबू अणा री बराबरी किया कर सकू? म्हू तो आज भी भाडा रा मकान म र रियो हू। पेन्शन रो एक बरस बाकी अर उमा रा पीळा हाथ करणा है।

अणी बीच उमा आई अर बोली—पापा भोजन अरोगो नी रागी ठडी हो जासी। सुबह नो वज्या रोटी जीम न पधारया हा भूख कोनी लागी कई?

उमा री बात सुण'र अतीत में खोया बिचारा री दौड एकदम थमगी। नीम र नीचे ढळया माचा सू उठ'र बोल्यो–चाल बटी भूख तो कदी की लाग री है।

हाथ धो'र भोजन करण ने बैठयो। थाली मे मूग री दाल अर रूखी रोटी। म्हू पूछ बठयो–"घी खतम होग्यो कई ?"

"हा, एक तारीख ने लावागा। आज पच्चीस हागी है। पाच दिन निकल जासी।" उमा री मा कह्यो।

भोजन कर नै म्हू चोक मे आयो ही हो अर भोला काका हलो पाड्यो–सतोष बाबूजी !

म्हू बोल्यो–"आओ भोला काका, कइ बात है ? नौ बजण वाळी है, किया तकलीफ करी ?"

"साब हुकम आपने सुबह नौ बज्या दफ्तर बुलाया है।"

"असी कई बात होगी ?"

"साब सुबह दौडा पर पधार रिया है। कुछ जरूरी फाइला लेणी है।"

"ओर कई कयो ?"

"कदे कई ? म्हू आपने साब'रे लारे दौडा परे ले जावा र वास्ते पूछयो पण सदीव री भात साब कह्यो नी सतोष बाबूजी दौडा रे काम रा कोनी। वणा न दुनियादारी रो तजुर्बो कम है। दौडा पर तो लारे लक्ष्मीचन्द ही जावे। उठै तो चलता–पुर्जा री जरूरत है।"

'अच्छा, कई बात नी ! साब हुकम न अरज कर दीज्यो क म्हू सुबह नौ बज्या पैली दफ्तर आ जाऊला।"

"हा बाबूजी आणो तो पडसी ही पण आप भी भोळा भोळा रग्या। जिन्दगी भर फाइला तोल'र सतोष करयो। दिन भर फाइला सू मगजपच्ची तो आप करो अर मौजा लोग माड लावा म तो खेमली और नाचबा मे पेमली। म्हू जा रियो हू सुबह वेगा पदारज्यो।"

भोला काका चल्या तो गिया पण वणा री बात म्हारा काना म बार बार गूजण लागी–लावा मे ता खेमली और नाचबा मे पमली। पण सोच्यो–पेसन मे तो एक बरस बाकी है। उतरियो काल क्यू जोगो होणा ?

इया अणी कडवी घूट ने भी पी'र चौक म नीम रा नीचे बिछया माचा परे सज नता अर ईमानदारी री चादर ओढया आडा हुयो ही हो अर म्हारा पाडौसी रो छोरा रतन हाथ म ट्राजिस्टर लिया म्हारा मकान री फाटक रे बारे सू निकल्यो। ट्राजिस्टर म गाणो आ रियो हो–देख तेरे ससार की हालत क्या हो गई भगवान 

आमवासण

हनुमानसिंह पूनिया

अकाळ र कारण भूखमरी री पीड़ा स्यूं मोटोड़ा अफसरा अ र नेतावां री बोलती फीकी पड़ती जा रई है। इरमेस ई भूख अ र तिस र कारण मिनखां अ'र डांगरां र मरण री खबरां री पीड़ स्यूं भरीयोड़ा छापा पढ़ण सूं राज र मालकां अर मोटोड़ा सावां र अग आराम मांई खळबळी माचगी है। जद री वजा सूं लीडर लोग आप आप र चुणावी हल्का मांई बूड़ा सारा नारा देवण र वास्ते दौरा माथ आपर बंगला स्यूं मौज छाड र निसर पड़या है।

दौरा करती वरियां नेतावां री सोचणू ओ है कि आपा न तकलीफ तो जबर होसी पण आगल चुणावां माथ आपां री धाक बणी रसी अ र साथैई टीएभत्ता रा रिपिया मोकळा मिलसी। इ वास्ते सगळा नेतावां ई आप रै चुणावी हल्का माई प्रोग्राम रा खाको बणा र आप र चमचां कुड़छियां अन खबर पूगती कर दीनी।

आपरै नेताजी र पूगण री खबर सुणता ई लोगा री बाछां खिल पड़ी। सई लोग आ ई सोच रिया हा के इब ता भूख अ र तिस स्यूं लार छूट जासी अर नी तो कीं न कीं मुभीतो जरूर ई हो जासी।

नेताजी साब आप र आण द भवन स्यूं मोटोड़ आराम री लारी माई बठ र रवान होवता ई गाम र माई सभा रो न दाबसत अ र ज बोलण र वास्त पुलस अ'र चमचां इया डोलण लागग्या जिया अकाळ री मार स्यूं डांगरा र मरता इ गिरज कावळा आया करै है। आ हवाल देख र लोका सोचियो के अकाळ तो पल्याई हो ज दूजोड़ अकाळ रा वारट ी आग्या है। लीली छत्तरी रै धणी तो सेना माई अकाळ पटकियो हा अ र राज रा धणी बस्ती अ र घरा माइ अकाळ पटकसी। आ स बात मोचण र पाछ ई लाग नताजी साव र आवण रो तावड तोड़ इंतजार कर रिया हा।

नेताजी साव री लारी ओमताई अकोस पताळ ज ज र रेळ सू गूंजण न

लागग्यो। नताजी साब लारी स्यू हेठ उतरता ई भीड भडाकै न तोडता हुया जियांई मच र माथ पूगिया फूला री माळावा स्यू लाद दिया मिया। नेताजी साब हाथ जोड र ।। लोका री आगत नी बोल्या ई माणतो कोनी। माळावा गळ स्यू आतर मेलता थमिया आप रो घडियोडा भाषण बोलियो—' भोत समैं र पाछ था लोका सू मिलर हूँ घणमान राजी हायो इ। म्हार हिवड रा मिठियास भाया अ'र बना! अकाळ रैं वजह सू आपा स न घणमान दुख ऊचाणू पड रियो है। राज ई वड सोच माई पडयो है। ई वास्त काई करणो चाहीज। ई हरमेस पडण आळ मूख स्यू किया लार छूट। मू गाई रो ओ जमानो जके रा की जावतो काती। इ टेम सैं इ मोटोडी अडचना रैं रैवता इ लाक डट र अकाळ सू पूरो पूरो बावेडो कर रिया देखर हूँ घणमान राजी होयो। राज अकाळ राहत रा घणा धन्धा खोल्या है अ'र आजू ई खोलसी। स ई गरीब मजूर लोका न धन्धो मिल जासी। सुस्त धान री दूकाना ई खोलण रा अजाम कीना है ।' भासण र बिचाळ ई सभा र एक खूण सू एक सीधो सपाट मैले अ'र पाटयोड चोळिये माई अळजियोडो गरीब बोलियो, "साब चूकटीक धान मिल है, जको ई बेजा मू गो है। मजूरी ई रिपियो, आगो रिपिया हाथ जोडी स्यू देव है। कणाई कणाई तो देवै ई कोनी। ई मजूरी अ'र ई धान सू तो एकर ई आ पापी पेट भर सक कोनी। बाकी मि है र दिना म्है अर टाबरी काई लार गुजारो करा। ओ राज तो इया ई तिरमा तिरसा मारली आ काई बाकी आजादी है । ये तो कालचिट हूँ रिया हो अ र म्हाका तो पिंजर ई सूखग्या ।' इ मिनख रा मिनखपणा बोलता इ मानीजत लोका ई री बालनी रोक र दियो 'भाया पल्या बात तो सूण पछै ई की केवणो है जको कह दीज्यो। बिचाळ ई काइ दाळ दळ है।' इत माइ थूक गिटर होठा माथ जीभ फेरर नताजी साब ओजू बोल्या, 'इ भाय रो कवणू सवा इ सोळा आना साचो है। पण अकाळ री वजह अ'र माटोड खरचा र कारण राज रो करचो करचो हाग्या है। हैण काइ करा म्हाक इ खरच माथ रोक लगा र कमी कर दीनी है। फेमिन हैड सू भत्ता इ इब नी मिल सकैळा। फेर इ आपा र सइ दुखा न मेटण वास्त मोटी मोटी योजनावा बण'र आव है। ये अ र म्है स इ सुखी होस्या। धान ठा नी पड है। अ राज र खिलाफरी पालटिया भोत घणी गडबड कर र रइ हैं। जिया कइ केइ दळा रा नेता केवता रव है 'दारू बन्द करो'। किती पागलपणै री बात है। राज र रिपिये पिस्स रा घाटो घातणू, अ'र पिवणिये भाया र रोक लगावणी अ र ठकेदारा रा गळा मासणा ।' सभा मांइ स्यू ठीक अ'र गलत री आवाज नीसरता इ राक दी जाव है।

इत माइ नताजी साब पाणी री इच्छा दिखावता चुप हूँ र सास खीच्यो। सरबत रा गिलास आवण स्यू पल्या इ एक भूखमरी स्यू मुरझाय चहर र गरीब

मजूर आप र पीवण रा पाणी रो ग्लासो गू डाली भर र नताजी साब र हाथां माइ द दीनो। नताजी साब र जिरा न पाणा पीवतां जीभ र माथ मायो, मूंढा सारा जर होग्या अर गील भीछ फाटग्या। नताजी साब गोलवन हु र कयो, "इ बूप र बन्ध न गान भा र र आ तर नागा। जियां द यो पावराट मिनख न धवरा देर आदर किया तो सभा र माइ चोगरद लोकड़ा बालण लागग्या, "साब म्हे तो ओ जेर जिनावरां सारा पाणी पीव र जीवता रया हां। ओ म्हे पीवा जको इ पाणी थे नी पी सका ता ॥ म्हांका मांद सुधारा कराला अर बांद म्हारा दुखड़ा दूर करस्यो।' रमा बहरा ता पावां न आ द पाणी पीवतां। जे ओ पाणी इता जेर इ है ता थे हरमेस इ जीतर गुलगला करता रया हो जका न आज चालीस बरस होवण लागग्या। मीठाइ पाणी गा थे अजाम कयू नी करया। पान तो हरमेस ई बूढ़िया घेटा देखण ग माजो वाण पगी है। थ र म्हू यार्र खासा माइ हरमेस ई इयां अळभ जाया हां जिका मवडी आळ माई मरण री वेळा ताइ मळूसी रवै है। थे हरमेस इ आसवासण देर जाता हा। इण पाव बूढिय दगाइश सू काइ भला होसी। रदेश मिनख ता कूड बाल्ण सू ई मर जावता। थे कारा इ कूड बोल्ता रया हो, जका रा की नी बिगाड़ा हाव। पट फूनाया मुगटण्ड जिया वण्या घूम रिया हा ।' अगाम करणिया नगचा अर चार पाच पुल्स रा सिपाइ खड़ा होया अर भीड भड़ाक न डरा धमका अर सागेइ खासापट्टी दर स्यान करता पबिया पाछा जमाया।

इसी ताळ माइ नताजी साब री स पील री गोपळी गुल घुकी ही। व लोका आजू बोल्या राज राहत देसी अर आपणा दुख दूर करसी"। अं लच्छा आळी वाता बनार भरासा दिरावण माइ फल व्हे गिया अर लाका भरमावण माइ फच्चा पडग्या।

सभापति स लोका न धनवाद देवता थका कयो 'स इ भाइ आप आप री तकलीफ कागद माथ माड र नेताजी साब न द दवै। साब पचात भवन माइ भोजू चाडी ताळ आराम करसी। चावपाणी है अर बठई चा पाणी पी र जासी।

पचात घर माद तो बरफी, पड़ा, बतल्या, गुलाब ज, रसगुल्ला अ'र तरिया तरिया रा मवा खावता अर सागइ दारू पीवता देख र लोका रो कच्यो खुच्यो भरोसोइ निसरग्यो। ओ नाटक देखर भीड माइ सू एक भणियोड़ो मोट्यार बोल्यो, 'भाया आ मोटाड़ा न आपा छोटाड़ा री काइ फिकर हे। एक खानी ता आपा भूख अर तिस सू मर रिया हां दूज खानी अ गुलछररा उडावता थक कोनी। बाता सू मिठियास उगळै अर घट माइ खोटा घड। इणा सू आपा रो भलो नी ह्व सकलो। अ लोक ता अकाळ र माइ इ मजा लूटै ह अ'र जमानै रो तो केवणू इ काइ है। हालो आघ मिनख र आग रोवणू अर आपरा नण गमावणा

है ।" इत माई वीचाळ इ एक दूजाडो मोटचार वाल्यो, "वल्याड डील माथ लूण नांखणो अ'र पूरस्याडो थाली न ले'र नाखणो आ धोलपोसिये नेतावा रो ध धो इ है । अ यांइ गा घो बाव रा चेलका थोडा ~ है । अ तो फरजीडा, धाखेबाज, गोटवाजिया अ र किरकाटिया है ।" इत माइ जका लाग आप रा दुख लेर रोवण आया हा जका पाछा इ आपर घरा सानी भीर हो पडया अ'र चमचा कुडछा ता भी आळा गिळा वणिया इ । अ ता राज री नीव रा पक्काडा मजवूत भाठा है ज्का माथ इ राज टिकियाडा है ।

नताजी साव ता मोजा लूट'र आपर आण द भवन सानी दूर भीर पडया । थोड दिना पाछ भणियाडा मोटचारा क्यो के छापा माइ छप्या है ' नेताजी साव फेमिन मू थूड मिनटरोला र रिपिया रो आपरो वडो सारा हिस्सा अ'र टी ए भत्ता र सागइ फेमिन हैट स्यू माटी मागी रकम उठा र डकार गया है ।" हा, आ आपा री भलो करणिया मिनिस्टर अ र नता जका न चुणावा माथ जनता न मीठा आसवासण देवणा अर झासा दट्टी दवणा न बूडिया दौरा करण री लोक्त प्र रा वेम सो वणियाडो है । लाग तरसता इ रह जाव है । हरमस इ मवर चकरी माइ उळमिया रय है । □

सवक

छगनलाल व्यास

टेलीफून री घटी वाजी ।

'हैलो ! केवता नटवरलालजी फून उठायो ।

हैलो ! म्हू अमृत एण्ड कपनी मू प्रवीण बोल रहा हूँ, आप ?'

म्हू भारत आयल कम्पनी सू नटवरलाल बोल रह्यो हूँ। फरमावो ?'

फरमावो काइ ! आप सू अेक शिकायत है। सामी सू आवाज आइ ।

शिकायत ! केडी शिकायत !! सेठा रो बाको फाटो रो फाटो रैय ग्यो ! घोळा आयग्या कद ओळम रो काम नी अ र आज आ केडी शिकायत ?

इण बार तेळ रे पीपा मायने पाणी रे भेळ री शिकायत उपभोक्तावा सू लगातार मिल रही है ! थोडो ता भगवान माथ भरोसा राखो । हळक तेळ रो भेळ तो सुण्यो पण कोरो पाणी आटे मायन लूण म्हट लूण मायने आटो किणकर चाल सक ?' सामी सू आवाज रीसा बळता री साफ सुणीज रही ही ।

'सारी ! केवता सठ नटवरलाल जी फून नीचे राख र कनक्सन काट दियो ताकी नी बास रे वे नी बासुरी बाज । रात भर सेठा रे काना मायने फून वाळी आवाज गू जती रही अ र आख्या मायने ऊघ नी । सठ नटवरलाल यानी इमान दार आदमी । दोय मिनखा मायने पूछ पूरे राजस्थान मायने तेळ सप्लाइ कर पण कदइ शिकायत नी पण आज सुब स्याणी शिकायत सुण र माथो चकरीजण लागो ।

दूज दिन अगरबत्ती कर दुकान माथ बठया के' मुरलीधर जी वाहा चढावता आय पूग्या अर पछे कुण केवे विवाह मूडो । नीठ कर मनाया नीतर महाभारत मच जावतो । अ र असबाग र मुख पृष्ठ माथ बेइज्जती हुवती जिको तीन पीढो खप जावती ता भी कळक नी उतरतो ।

अब सठ नटवरलाल जी री हालत कूवो बाव वूर जिमी व्हैगी । आखर जो

लूण हरामी है बुण अेक दाय गदी मछळिया र लारे पूरे-ताळाब रा पाणी गदो व्यू है। अब घणी सावचेती राखण लागा। व्यापार तो जाव, घडे मायने पण बरसा री जम्योडी पेठ माथ धक्को लागे। आखर जाच पडताळ खातर निजर फेंकणी शुरू कीनी।

अेक दिन सेठ नटवरलाल जी मोटर साइकिल माथै सूं अेकला आय रह्या हा। बीच मायने पडै हरीये री ढाणी। धोरा रे बीच सडक सूं च्यार कदम आधो हरिये रो झूपो। हरियो बाळपणं सूं सेठा रे कारखाना माथ काम कर जिण सूं विश्वास जीत्योडो, अ'र मू छा रो बाळ । उण माथ व्हैम आवण रो सवाल इ नी। पण जद मोटर साइकिल माथ सूं झूप रे वारै तेळ रे पीपा रा ठेलो निजर चढयो तो माथो ठणक्यो । देखू तो सही पूत मायने कर काइ है ! आ सोच'र सेठ नटवरलालजी दब्या पगा झूप रे खन पूग्या अ'र मायने झाक्यो तो अकळ काम नी करै। हरियो पीपा रे ठीडा कर र मायने सू न्योयक किळा रो डिब्बो भरै अ र उणरी ठौड पाणी घाळै। हरियो रगे हाथा पकडीजग्यो अर ऊभो ऊभो धूजण लागो। सेठ नटवरलालजी हरिये ने आछी तरिया आडे-हाथा लियो। अ र पछे समझावण लागा--'लूण हरामी ! मजदूरी कम पडती तो केय देवतो। यू म्हारी रोजी अ र उण सूं भी मोटी पेठ माथ ठोकर मारै थनै शम कोनी आव । अेक घर तो डाकण भी टाळ अे करतूत चोखा नी ! अबे थन म्हू भी टक्के ब्याज छोडू नी कोट कचेडी दिखाय देवू ला जद थारी अवळ ठिकाण आवेला बाल आ हरामखोरी कद सू सीखी ?'

वो चुपचाप सुणतो रह्यो।

'हरिया ! यू मू ड रे ताळो लगाया पार नी पडेला साची यात बता दे के थन आ ग्यान कुण दियो अ र आ धधो कद सू शुरू कीनो !

। वो तो साव गू गो बणग्यो ।

सेठा ने दया आयगी मूळ वामण गाय री साग ध खायी तो माफ पण आखरी धमकी सुणायी 'अबे ओ ठेळो पाछा कारखाना लेय जाव अ'र थारा पिताजी ने बुलाय लाव दोय मिनखा मायने थारी माजनो तो पहावणो इज पडेला । पछै थनै ठेळो मिळेला नीतर समझ लीज ओ जब्त । जा अबे कर दीज थारी म्ह जिको अे घोडा अर अे मदान ।'

ठेळो कारखाना माथ छोड'र हरिया तो सीधो थाणे पूग्यो। अेक दोय घाव कर'र थाणेवाळा ने इण भात एफ आइ आर दज करवायी—

'काळ दोपार री टेम सेठ नटवरलालजी मोटर साइकिल सू म्हार झूप आया अ र म्हारी लुगाइ री इज्जत लूटण लागा। भळा जोग सू म्हू उण टेम घरा हुवण सू बीच पडयो तो म्हारा माथै भी हाथ उठायो । नीठ पड तडफ'र उणा रो

गुरावळो कीनो तो अबे म्हारो ठळा कब्ज कर गया है अ'र अब जद ताई थारी लुगाई री इज्जत नी लूटण देव था थारो ठळा नी मिळला जा कर नीज थारी बहू नै भेजो जे थाडा अ र ज मदान । बावजी म्हार गरीब री इज्जत अबे आपरे हाथा है।

थाणेवाळा तीन च्यार सा ग पोळ हरिय सू बरबाय लिया अ'र पछ दारू री गुटकी लेय'र थाणेदार साब जीप सू सीधा भारत आयल क र कारखान पूग्या साथ दाय पुळिस वाळा भी। जीप कारखाना रे आगळ रोक'र थाणेदार साब कारखाना रे दफ्तर पूग्या।

सेठ नटवरलाल जी थाणेदार न देख'र हक्का बक्का रयग्या। इतरा मायन थाणेदार साब रीमा बळता मूंछा रे अणूती वट्ट भरता बोल्या—

सेठ साहब! आजकाल तो कानून कायदा सगळा थारे हाथा इज लेय लीना है पइसा घणो कमायो दिसै जद इज तो थाळा दिन रा लुगाइया री इज्जत लूटण रा प्रयास करो अ र ऊपर सू डाट फटकार। थान राखजो म्हारा भी नाव मयरसिंघ है—पायोडा अेक अेक परमा निकळा लवू ला अ'र परायी लुगाई मामी देखणो भुलाय देवू ला थुडाप मायन अे करतूत ढाकणी मायने नाक डुबाय'र मर जावो। बाणिये रो बेटा हुवता था थाणेदारी कद सू हाथ लागी ?

सेठ नटवरलालजी सोफ माथ बठया बठया धूजण लागा जिण सू हाथ जोड ऊभा हुया पण पगा री धपकी बद नी व्ही। थडथडावती जुबान सू बोल्या—

पण अ नाना हुयो काइ! म्हे हाल ताइ बात नी समझ सक्यो आखर अडी भयकर गळती काई हुगी ?

गळती। दूजो हुवता तो डडा सू बात करतो। थाळा दिन रा हरिय रे झूप मायने घुस र उणरी लुगाई री इज्जत लूटण रा दुस्साहस कीनो अ र जद सर रो सवा सर मिळ्यो तो बिचार रे ठळ ने कब्ज कर र रोजी माथ लात मारो थान शम नी आव! म्हार एरिय मायन आ हरकत सेठजी ? आम ने टोपाळी जिसो मत समझो खुद भी जीवो अ र दूजा ने भी जीवण दो। घर गुवाडी अर पळदार आदमी हुवता धमकी सू बात चाल नीतर हथकडी पराय थाण मायने इज समझावतो।'

सेठ नटवरलाल जी रो माथो चकरीजण लागो। फळग माथै थाण री जीप अ र सिनखा र मळ न देख'र पूठे लाछन रा सुण र आख्या आगळ अधारी आवण लागी अ'र आतमघात बै री सोचण लागा बाकी चारो इ' काई। आखर हिम्मत कर बोल्या—

'आप पूरी हकीकत तो सुणावो।'

'हकीकत वाई सुणणी हाथ थगन नी आरसी री कठ जरूरत पडै। छारे री सोग म राय'र केय देवो के हरिये रा ठेळो आपरे कब्ज मायने नी अ'र काळ दोपार रा उण रे झूप नी ग्या ।'

'थाणेदार सा ! झूप भी ग्या थ'र ठेळा भी कब्ज, पण ।'

'पण काइ थाडा साच कूड करणा है आ इण बात ?'

'नी सा हरिये री बात साव कूडी है। (इत्त मायन मुनीम साव री कचौरी अर काजू किसमिस रो नाश्तो लेय आयो) । आप विराज'र पैली नाश्ता करावो पछे भळे ह' म्हने हथकडी पराय दीजो ।'

'सेठा म्हू कोई रमझडा सू रमणियो टाबर तो नी, रात दिन अे इज धधा करू नाश्ता करा'र क्यू लाजा मारो ।'

ओ तो आया रा आवकार है 'मुनीम बीच बोल्या।

सेठ नटवरलाल जी अवे मुद री कथा सुणावण लागा।

'थाणेदार सा ! म्हारै आ कारखानो लारला कइ बरसा सू चाळ पण कद'इ ओळमो नी चोखा काम अर चोखो दाम आ इज सिद्धा त। जिण सू आ तळ नाम सू बिक। हाली दीवाली सगळा न राजी भी राखू। पण लारला महीन शिकायत आइ तेळ म पाणी रे भेळ री तो काना न विश्वास नी व्हियो। पण जद आख्या देखी तो झूठ भी किणकर ?'

अेक दिन शहर जावता हरिय रे झूप पूग्या तो पूत पीपा रठीडा कर तळ रा डिब्बो भरै अर उण री ठोड पाणी घाळ उण तर हरिया रग हाथा पकडीजग्या तो धमकी दीनी के थारे बाप ने लय आव जिण सू दाय मिनखा मायन थारी माजनो पडावू अ र ठेळो कारखान पाछाय द जिकण सू मिनखा न थारा करतूत बताय सकू। आ बात ।'

'म्हू तो उडीकतो इण रे बाप न अर आ पूगो आप सन । अ'र आ झूठी रपट लिखवाय ली। उल्टो चोर कोतवाळ न इज डाट । जे विश्वास नी व्हे तो आप पीपा देख सको ।'

तो सेठा आप आ शिकायत थाणे सू क्यू नी कीनी ? क्यू कोट कचेडी घरा इज खोल रासी है ?'

'अेक गरीब माथै शिकायत रो मन नी मा या।'

'थाव मायन चाव गरीब व्हो चाव अमीर बराबर तेळ मायन पाणी घाळ जद तो पछे इण सू ज्यादा लूणहरामी कुण व्है सक ! पण आ शिकायत आप नीं कीनी इण रो अर्थ अे सगळी बनावटी बाता है कर रो सेठजी ने गिरफ्तार गरीब माथ झूठो लाछन लगावण अर उण री लुगाइ री इज्जत सू खेलण रे कारण ।'

माव रे गामी सठ न निरणार करता काळजी काप गर नियम सग्ञा
गातर अेक कांस्टबल आग बढ्यो इस तो सठजा रो मुनीम अेक हजार रिपिया
सप र हाजर व्हया ।
अर सा लरावो गळती व्हेगी ।'
पिता है ,
अेक हजार
ऊट र मूढ मायन जीरो पाळणो बद सीख्या
पण हुकम ऊण मांयन रतीभर कूड नी है। आप आस्या देगो तो सही
सेठ नटवरलाल जी गिडगिडायण लाग्या ।
पण इण री रसीदा पक्की है क माळ सही सळामत पूगगो। बाणिय री
आस्या मायन धूल भोकण री इण री औकात नी । कसूरदार आप हो ।'
मुनीम खेंचाताण कर थाणदार साब न राजी करया अर हरिय रा ठेलो
छुडवाय लियो ।

सठ नटवरलालजी हरिय न कारखान सू निकाळ दियो । अडे लूणहरामी रो
काइ करणो साव उठ इज फोडे । हरियो ठेलो सप र मजूरी सातर ऊभो
पण कुण घर मायन घाळ काट री हाडी अेकण बार इज चढ ।
सेठ साचे—पेट ने भाडो नी मिळेला तो हरिये री अक्ळ ठिकाण आय जावळा ।
अ र आछा सबक सीख जावेळा । हरियो सोच—सठ तो जिन्दगी मायने भी
पिणी मजूर सू माथापच्ची नी करेला अेडो सबक सीखाय दियो है । पण आ
म स सबक कुण सीखिगो । भगवान जाण ।



त रो हेत

गिरमाधारी

कृष्णकुमार कौशिक

"टणन्ऽ ऽऽटणन्ऽऽ'टणन्ऽऽऽ ।' तीन टका लागग्या । अबे ताईंसूमाट छायोड़ी ही । टका लागन पाण पढेसरी टाबरा री आपस री बतळावण स्यूं राळो-रोळोमाचग्यो ।

महादेव जी नामक धोळ्योड़ा हाथा ने भटकावता काई जाणे किसे मसा रे कमरे स्यूं निसर'र जाव । किताबा काख म दाब्योडी है, अर हाथा ने इया छोडा कर राख्या है'क जाणे छिन एक पली कोइ मैम वियाण र आया है ।

पोणे छव फुटा छरहरा जवान । सफाचट गोरो मूडो अर गन्रायोडो सरीर । अपूठा बायोडा छल्लेदार बाळ अर थोड़ा घण्प गाभा मे फिल्मी हीरो सा लाग । उमर आई कोई तीस'क र नेडे तडे । स्टाफ रूम म बडया अर काख मैं दाब्योड़ी किताबा मेल'र गुसलखान कानी चलेग्या । टूटी स्यूं हाथ धोय'र मटके कने आय ज्यावे । पाणी पीवणा चाव हा'क हैडमास्साब बठीने ही ज आग्या ।

पाको उमर रा श्री गगाराम चोधरी अठे रा हैडमास्सा'ब है । टटा स्यूं कोई डलेक' इच ऊचा धोळो पायजामो ना ही चोकडीदार आसमानी कुर्तो अर पगा म पम्प शू । मुह टोडिय ज्यूं उभराय राख्यो निजरा नीचे पडेहि नी । धमडीज्योडा दूत्ता'क सावळ मुह कीने ही नी बतळावे ।

था, महादेव जी न देखता इ काळज टूक्योडा रटया रटाया सबद उगळ दिया 'मास्साब आपरो घटो नी छोडणो चइज ।'

महादेवजी ने बात आकरी लागी । पण चुप्पी साच रे बोलया, हण'इ जाऊ सा । पण हैडमास्सा'ब धीरज किस्सोडे आळे स्यूं ल्यावे, जावो'क नी ।'

महादेव जी रे जाण मिनिय बटको भर लियो । एकर ओरू खीची, हण'इ जाऊ सा" अर पाणी पीवण लागग्या ।

हैडमास्सा'व र काळजै लाय सी लागगी। धय पछे भी ढीठ होय'र पाणी
पीवण लागग्यो। बान हुक्म उद्गी त्यग र चिढाळी घग्गी। बारो फाड'र गरजा
जातो न नी ाळ देर थोड बात री है।' 'थान सातातळ बार बात री है।'
मा'ग्यो जातो देख र मिनख र हाथ स्यू काण कयदे रो पल्लो छूट ही ज्यावे।
थांरी कक्षा म टाबर हावण लागग्या है। अर अठे थे मटर गश्ती करता
फिरो हो।

पाणी पीवण र मटरगश्ती रय बाइ।'
इम्मरजेसी है मास्साब त्नीच्या हि की नीमरोला।
पाणी पीवणे माथ भी इम्मरजसी है। पाणी पीवणे म किसा दस बी
मिनट लाग।

हू किसो घर माइ'र बठयो हू। जे नोकरी करणी है तो कक्षा म जाणो
ही पडेला।

नटे पुण है। पण नोकरी कर सका। गुलामी को होव नी।'
जे मानखे रो स्तो इ घणेपो है तो नोकरी भी नही करणी चइजे।'
आप घणा भणिज्या पण प्रेमचन्द नही पटिया। नोकरी अ
गुलामी म हाडो – अळगाव हुव सा। करमचारी अर अधिकारी दोनू एक ही
कायद स्यू बन्धोडा हुवे।'

अब थ कांट बात पूछो। हैडमास्सा व रे बळितो सो लागग्यो। आल्या
गाजर स्यू लाल हैगो। तरणायटा खाय र बोल्यो म्हाने कायदा सिखावो,
भाडो आवे नी अर थाडागर वणो। मास्सा व थे कक्षा म जाओ परा। म्हारे'ऊ
अवे जोर सेण कानी हो मक।'

तल्वारबाजी चोखी पण दातबाजी मोटी। इस्यो हाबो पाटयो क बीजा
मास्टर इज बठ आय र भेळा होग्या। चोफेर स्यू पढेसग्या री निजरा बीने इ
तकाव ही। महादेव जी रा मन खाटो होग्या।

हैडमास्सा व भी आपरी इज्जत रा सवाल बणाय लियो। जे आज
निवग्या ता कदेइ ऊवराला ही ज नी। मादा मिनख ने तो मरिया
नी धारे।

दोनू इ आप आप र मानस सारू अड'र उभग्या। सगळा टकटकी लगाय
बान ही तकावण लागरया हा। जे कोइ लार हट ता निया हट।

आप जाजोला क नी। बुगाप म बम बन्ळ सक्मण नी। नही डूबतो
सीवाळा म हाय घाल। नोकरी जासी परी ना काट हासी। सोने रा सलो पट म
राखण न नी हुव। हण इ हाड गोडा थोडी टूटग्या तगारी ढाय र ग्याय मका।
मिनख तो मानस स्यू इ जीव। प्रेमचन्द रा सबद बीरी मापडी म गू जन लागग्या।

6/रेत रो हा

अपमान तो गुलाम'इज सैण कर सक। वीरी दिमागी गुलामी पली हुव अर सरीर पछ। चपडासी ने एक कोरो कागद ल्यावण रो कय'र महादेवजी स्टाफ रूम मे चलेग्या।

हैडमास्सा'ब भी आप रे दफ्तर माय गया परा। घंटी रो टरणाट उपड्यो तो एक चपडासी वठी न भी भाज्यो।

चाण चक्की जिदोरी होवण री लिख'र महादेव जी छुट्टी साम्ब अर्जी दफ्तर माय भेज दी अर आपरे घरे आयग्या।

इमे दो बात नी हु सक'क मदरसे रो माहोल जे सातरो हुव तो पढ़ण पढाव-णिया ने कोडायला बणा देवे।

मद् पिचोत्तर स्यू पली इ मदरसे रा ठाठ की जबरा हा। दिनूगै गूणी सात बजे र टेम। जग के अगूण पासे लाल मुरज र पळके स्यू पळपळाट करते मदरसै री बावळ मे पढ़ेसरी टाबरा री टोली कतारा मे खडी प्राथना गावती। फला री खुश्बू स्यू महकयोडी मीठी-मीठी बयार आवती तो पछी तराना रो मन गायण लाग जावता। डागळ मोर न आपरी पाखा रो छत्तो ताण र नाचता देख'र मन रा मोर इज नाचण लाग जाव।

हैडमास्सा'बश्री नित्यान द जी सगळा मास्टरा री सलाह मसवर स्यू योजना बणा'र भाइ चारे स्यू काम करावता। हेत री हाती हथाळी मे ही भली। मदरसे मे पूरो लोकत तर हो अर पढाइ लिखाइ सातरी। पढ़ेसरया मे नी तो धरमेन्दर कट हा अर नी राजेस कट। घणकरा गाधी कट ही'ज हा। इतजाम इसो सुणो क रामराज ही हा। सगळा आगी सेन स्यू समभता।

अर जद गमिया री छुटटी र पछे जुलाई म मदरसा खुल्या तो भचाके ही नित्यानन्द जी रो कम्पलसरी रिटेरमेंट रो ओडर आय'न माथ लग्यो। बारा कसूर ईतो हीज हो'क वे लुगाइ नेतावा री धिगाणपणी मदरस मे नी चालण देवता। अबे बारी टक ग्यारी जमात वणगी ही अर राजकाज रे आगणे ताई बाह पसरती ही। सगीफ मिनख तो बात स्यू ही मारयो ज्याय। नित्यान द जी रो मूडो ही'ज उतरग्यो।

बारे वल्ल अ चोधरी मा'ब आय धमक्या। पाच रिपिया मे चरितर परमाण पतर टी सी दीठ दस अर भर्ती रा पच्चीस। एकोएक रा भावनाव धर दीज'या। चूं चपड़ माय इम्मरजेंसी लाग्योडी।

डर हो जठे ई दिन धमग्यो। पूनियो पियोन बुक र साग लिफाफो लिये खडयो हा।

'कांई बात है रे पूनिया।'

'सा'ब हैड मास्सा'ब ओ कागद भेज्यो है।'

महादेव जी कागद रांच र नाम हाथा। की टैम ही मुत्र स्यू उपनिजोगा मन्रस पूछ्या। आधी छुट्टी होयोड़ी ही अर पणरा मास्टर ई भमन माह इत बतळावण करण लागरया हा।

महादेव जी नावा-नावा डग भरता गीया त्यार म जाय बडया, हैड मास्टर कु राट न बाट दवण माह छुट्टी लय र गयो हा नी'क बडावणन। पे बळती म पूळा नारियो है। बाडिय रा लाय म भाद बळती। जिरा रे शांच रा महल माळिया हुय व दूजो र पर माथै भाटा नी वाय। आ नी साध्या क इमर जसी र हुवै स्यू द याव र सामी लग्णिया हर ज्यावैला। इमरजसी कोई हाउ पोनो क जिको रा ज्यावेला। ह्रै तो बहाव रे सामी तिरणो ई ज सीरयो है, पाणी रे साग साग तो ह्हासा वव। इमरजैंसी के सगाई रवला। आ वाडला री छिपां किताब दिन री। वी वगत लारला मगळा हिसाब चूकीजेला।

आप मरे सामी टोको माडण आया हो।

डाबा वास री हाट घोडा ही कर राख। बापरला जठ तो विगरैला ही। थे म्हारे लारे कागदी घोडा मोटाओला तो म्ह काई घूडयां वैर राखी है म्हारो डरावण धमकावण रो मोद मतो नी पण आपरी बात रागण रो हक तो म्हान इज है। कसूर आपरो हे। आप गळत तरीकै स्यू म्हान ढीठियो। म्हे फर ई खेंची। आप म्हारी नरमी ने कमजोरी जाण र उल्टा माथे आय चढया अर म्हारो मानखो मूडणो सरू कर दियो। थे जे इण असलियत न मान ल्यो तो राड अठइ मुक ज्यावली। आग थारी मर्जी। कय र महादेव जी स्टाफ रूम मांय गया परा। कागद न एकर ओरू वाच्यो। वारी अर्जी ना मजूर कर र हाजिर होवण रा हुकम हो।

बाकी सगळा मास्टरा आप आप री अटकळा लगाइ पण बात री बतगड ही ज वण्यो। निरी नायणा जायो इ बिगाड।

आधी छुट्टी पछै महादेव जी कक्षावा म आवण जावण लाग गया। पण पढा वण न मन की रो कर। दिमाग तो उळझण म उळज्योड़ा हो। उल जलूल बात्या स्यू माथा मरणाव हो क ओरू पीयोन बुक माथ चढ'र कागद आय गियो आपने प्रधानाध्यापक के गरिमामय पद पर आरूढ निम्न हस्ताक्षरकर्ता को अपमानित किया अवज्ञा की अन्य अध्यापकों का अवज्ञा करने के लिए उक-साया छात्रों के समक्ष अनुशासनहीनता का उदाहरण रखा क्यों न आपके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाव।'

जै इया थोड इ मानला। जो हुवला सो देख्या जावला' बडबडावता जडवडा वता महादेवजी कागद कलम ल्या र लिखण बठग्या अर कागदी घोडा री मोड

सरू होयगी । अब तेरा वध ने मेरा ! हैडमास्सा'ब आरोपा री लड़ी लगाय दी । महादेवजी, आपरै बचाव सारु दलीला देवण म की ओछ नी घाली । सतरज रो ख्याल मंडग्यो । कदेई बारा पदल, कदेई घोडा अर कदेई वजीर तकात श देव । ठाकरां रा हुक्का कुण नी भरै । आ रा माहरा कद नै देव । अतो बादशाह न बचावण सारू ही लिया फिर । एबर पासो इस्यो पळट्यो'के एक ही चाल स्यू दा काम होग्या । आपरी श भी बचग्यी अर सामल र श भी लागगी "आपने विभागीय अनुमति के लिए बिना जनता से च दा एकत्रित किया और उससे बिना निविदा के कुर्सिया खरीदी । मैं शिक्षा निदेशक जी के लिए इसे अग्रेषित करने की कृपा करें अग्रिम प्रतिलिपि सीधो प्रेषित । 'हैडमास्साब रै श बचाणो ओखो होग्यो । पानी बाचत'ई हाथा रा तोता उडग्या । माटी री भीत पडती जेज ही नी लागी । इस्या करसा'ब सबडी गळी अर मारवणी गाय । सातवो डको लागत पाण मास्टरा नै स्टाफ रूम मे भेळा होवण रो नू तो आयग्यो ।

स्टाफ सेक्रेटरी वेगो सो आय'र महादेवजी स्यू मिल्यो 'अर भाइ हमैं बात न नीच ना पडन देः ।'

'आट म आयोड़ी रैह सेवट ही टूटे, आप फिकर ई नी करो ।' महादेवजी कयो।

समूळी छुट्टी री टणटणी बाजगी अर बठक सरू होयी । सेक्रेटरी जी बोल्या 'भणिज्या गुणिज्या साथियो, आज दिनू म स्यू दोफारै रो बगत घणो'ई भूंडो तपियो । अब सिंझ्या ताई जाय'र ठड पडी है । हैडमास्सा ब बडेरा है, इण सारू आस्यू ही आ अरज है'क 'क्षमा बडन को चाहिये छोटन को उतपात आळी तुल्सी बाब आळी बात न हिवड म राख र ई बतगड नै मुकावणा है । अबे हू महादेवजी स्यू अरज करू क ब आपरी बात न सगळा साथ्यार बीच कव ।'

महादेवजी ऊभा होय'र बाल्या, 'मानीता साथियो, कक्षा म जावणो म्हारा काम है पण मन जिण भात कयो गयो, म्हारो मानखो लेवण री कोसिस करीजी, बीस्यू म्हारै काळजै म ठेस लागी । जे अ मन आप'र परिवार रा जाण र की केवता तो ईया बात रो बतगड नी बणतो । हू मफा वेरसूर हू, पण राड मुकावण सारू आ बात दोना न ई मानणी पडैला'क, की गलती म्हारी ही अर की थारी अर की दोना री ।'

महादेव जी र बठता पाण हैडमास्सा'ब आपू-आप कुर्सी माथ बठयाई बोलणो सरू कर दिया 'साथियो, किस'ई काम न करण सारू आपर नीच काम करण आळा न कद'न कद की न की केवणो'ई पड ज्याव । इन हू गळती नी मानू पण कया कर क ठाड रो ठिगो सिर माथ । हू बात र ई बतगड न रफा-दफा करण सारू सगळी कागजी कारवाइ पाछ लेवण री, आजूजी न कह देस्यू ।'

पछाड़ मटाऐपजी बालण साम्ह गदया श्रीयण ल्याया थ गार— मास्टरजी अगर'र बिठायलिया, 'थांरे ग्यारी सागर, मुण्ड माथ मूड नाग्या । तालियां स्यूं बसरा गूंजग्या ।

हूर बगर टावरां म रेवणिया गिरधाधारी टावरां ज्यूं नन्'र पूठा राजी होग्या । □

छोटूसिंघ

भीखालाल व्यास

मोटी मोटी मूछा, गठीळो सरीर, गुरमो आज्योडी आख्या छाटा छोटा बाल, खाकी बूट खाकी पैंट मे खोस्याडो खाकी कमीज—ए सारा ईं लखण जिका वे एक पुलिसहाळा म व्हणा चाहिज छोटूसिंघ म ह। हाथ म छाटोसीक कुतको लियोडो अर माथा माथ टोपी घाल्योडा छाटूसिंघ एक मामूली सिपाही भला ई व्हो पण गुरू न यो हमेशा थाणदार री बाप स्ज समझ ।

छोटूसिंघ कद म छोटा है इण वास्ते स्यात् उणरा मा बाप बालपण म उण नै छोटियो केय'र बुलाया व्हैला अर इसबूत म नाम निखावण री वळा उणरो वो ईज नाम हाजरी रजिस्टरा मे चढग्यो व्हैला अर यू छोटियो छोटूसिंघ बण ग्यो व्हैला। हम मिनखा म वो छोटूसिंह र नाम सू इज जाणीज।

दुनिया रो स्यात काई नसो इसो नी व्हैला जिको छोटूसिंघ नी करियो व्है या नी करतो व्है। भाग हाळा भेळा पसको भगेडी दारूहाळा भेळो पक्को स्याह हियो, असल धावा च्यार पी जावै अर ऊपर सू फेर बिरकी' म्हारी पल्राव। पण इतरो नसाबाज व्हैता थकाई उण हालताइ एक पइसो ई नसा माथ खरच नी करयो। उण रा सिद्धात क—ममाण कदई नी गळ आया गिया मुडदा इज बळसी । ।

म्हारा मकान मालिक जद नीचली एक कमरो छोटूसिंघ न रेवण वास्ते भाड दियो तो म्हन एक रात नीद नी आई। आ कडी खाती पीती डाकरी अर घर म घाल्यो घोडो। कडी दण व्ही। चारा रा अर पुलिसहाळा रो काई पतियारा। तो आप र मग बाप रा इ नी व्है। मापा र कडी मासिया।

उण न आया र च्यारक दिन पछ री बात म्है सीढ्यिा चढता हो के उण आवाज दी—

—नमस्कार मास्साब

—नमस्कार । वा सा मुनीजी कांई हाल है । नी चावता थकाई म्हन मुळन र पडूतर त्वणो ट पड्या ।

मुनीजी मवाधन गुण र वो फून न कुप्पो व्हग्यो । आपरा वाल म मिसरी घाळतो वो बोल्यो—उम मै र वानी है । आपरी न्या चाहिज । पधारो वयू नी मा । अर उण पीळा पीळा दान काढ या ।

म्है उण रा कमरा माय गयो । एक माचला माय फाटोडी गान्ही एक मैलोतीय पाजामो अगरजी रा जाळो वणियोडा उतारयो ज्यू ई पडियो थको अर एक मनी घिस्ट लूगी खूटी माय लटकती जग जग बीडिया रा अधवळियोडा टुकडा फेंक्योडा । एक जूनी बूटा री जाडी खुणा माय उतारयोडी । बस आ इज उण री सामान । माय तीन अक्टराणिया रा अधनागा फाटू भीत माय टरयोडा।

म्हन उण माचा माथ बठण रा कह्यो अर बीडी धामी । म्ह माचा माथ वठग्या । माचा माथ विछियाडा गूदडा माय मू मल अर तल री बदवू म्हार नाक माय भरीजण लागी अर साथ ई भरीजण लागो कमरा माय गटाटोप ह्योडो बीडिया री धुओ ।

—कियर जमग्या म्हे सिष्टाचार निभायो ।

—हा जमणी हम काई ठीक है न्नि काढणा ह अर उण रा मूडा माथ फीकी हसी आयगी ।

—टायर छोड नेय आवो हम म्हे वात न आग बढाई ।

—टायर छोड तो हमे निण रा लावा एकलो जीव हा वठ ई पडियो रवणो है उण हाथ हिलावता कह्या ।

—वयू लुगाई टावर ?

—कोई कानी । वो उम्मास न्हाख्यो ।

म्है हालानि पला परिचय माय घणो नी घुलणी चावतो हो पण वात अ डी छिडगी के न्तरी वाता पूछीजगी ।

—फेर आवूला कन्ई वेय र म्है उठण लाग्यो ।

—चाय मगावू

—नी वस हमे चालू थोडो जल्दी म हू वेय र म्ह उठग्यो ।

—फेर पधारजो केवता उण म्हन हाथ जोड दिया ।

जी छोटूमिष मू म्हारी पली परिचय । उण पछ तो मामी अपूठ कई बार मिलणो हियो पण म्है उण सू घणी वात करण री कोसिस करी कानी पुलिस हाला मू तो आगा इज भला राजा जोगी अगन जळ ।

छोटूमिष छोटा व्हैता थका ई उण री मान घणो माटो । थसकोल र सन टाळी जाट र नीच जठ म पटवारीजी दाय माचा विद्याय अर आगो न्नि ढान-वाछ

सू माथा पच्ची करता रव, छोटूसिंघ एक माचा माथ टागा पसार'र सूता रव। आयौ गियौ इण घाट रा देवता न ज माताजी री जरूर कर। जो कोई मन हाय'र जावण री कोसिस कर तौ छोटूसिंघ उण न आवाज देव—कुण जाय रह्यौ है र ?

—आ तो म्ह हूँ सा मावनिया !

—मा व नि या ?

—हा सा ज माताजी री सा ।

—ज माताजी री यू आगा आगा किकर चाल भाइ कवतौ केवतौ छोटूसिंघ सूतौ सूतौ इज घाटकी ऊंची कर न आडी मीट मू देख।

यू कितराई चालण हाळा मावनिया मन मू वौ बीडी, सिगरट, अमल अर दूजी चीजा री वसूली करें। मिनख ई जाण ये इण चाकी माथ चुगी चुकाया बिना पार नी पडला ।

छोटूसिंघ म एक गुण फेर है—वा घर री ममस्यावा सू लगाय र राजनीति ताई सगळी वाता माथै लेक्चर देवण न हर टम त्यार रव। दोय तीन मिनख मेळा व्हैता ई वौ आपरी टेप सरू कर देव—भोपजी। आ मूरख इज इसी ह के र सिवाय मान ज नी ए जाण राज आयग्यौ अरे राज करण न अक्कल चाहिज, हुसियारी चाहिज न थार अक्कल कठ न थार माय कुण पढ लिख'र हुसियार बण्यौ ? आज ताई राज तौ इज करयौ। हजार वार गगा नहाया सू कदई घोडी बणी काई औ वालो क्यू नी राव जी अर जीमणी आख मीच'र सामला कानी देख।

म्हे वठ थाण म ही जर एक थाणादार आयौ दूजी कौ थाणदार व्हियौ ता काई व्हियौ अक्कल न हुसियारी कठ सियाळया कद मिंघ जलम्या जो म्ह वठ नी व्हैतो तौ बापडौ अधराळ नौकरी छोड जावतौ। पण म्है उण न कह्यौ, थू सोच क्यू कर भाई ! म्है थार साथ हूँ जितर थू परवा ई मत कर। जठा ताई छोटूसिंघ जीवतौ है थन पट रौ पाणी ई हिलावण रौ काम कानी। थू तौ निरभ लटठ बजाव । अर आप विसवास मानो पराय मूड हुकारा देराव हूं पण जद उणरी बदळी व्ही तौ उण म्हारा पग पकड्या छाटजी, जा थे नी व्हता तौ म्है अठ कदै ईनी रय सकतो। आप म्हनै जो अपनापा दियौ म्हैं जिन्दगी भर नी भूल सकू। अर उण पछ म्हे वठ यू करघी—उठै यू करियौ अर आपरी रामायण सामलो जवाव दवतौ इज थाक।

गाव री काई वात इसी नी व्हे जिण म छोटूसिंघ टाग नी अडाव। गाव र भगडा रौ निरण छोटूसिंघ र 'कोरट' म व्है। वौ दाय थापा अर बार गाळा काढ'र वात कर अर फसलो देव। इण र अलावा कद कद लडावण भिडावण रा काम ई वौ करतौ रेव।

गाय दुज मी पूरा म्हारा म बाद थाग । ता छोटूसिंघ आपरा राग राग।

—ननजी ए गामडी र माड ल्यो । सिगरा बातो कर।

पट छोटूसिंघ आतमा—बाद ननजी ए हा बात म्हार गा आया हा। म्हन बचरा हा क बात म्हूणा ।

भलाई छोटूसिंघ ननजी न जाण ना ह नी स्ो पण हर बात म गुदन बीन जरूर लागता। जाण सगळाई काम छोटूसिंघ री सलाह सू इज व्हता व्है।

—आया गढ ! बय र दसायरा सू आयोडा बाणिया र छोरा गन सू छराय, सिगरट र अबाया जो बन बन रावड रिपिया ई बगूर बर सद।

—आज तो सठा मिठाई तिलाय दो।

—हमर ना पणा ल्ना सू मिठ्या ।

—रशावर हा बाई ?

—पिण जग

—रंगलोर सू डापा बण्ब तो म्हारै ई बाद लावो ! हमर पनाणा चीज जरूर लाइजो ।

अर कद कद दूजो रूप

—बयू र बाणिया यू बरडो गरडो बिचर फिर है ?

—ब्याव में विनरोन माल लूटिया ?

—म्हैं मीठा मूडा सू इ गिया ठीक ठ आवण दा बन्नाई बरा म गेंग बढाय दूगा लादोडो पणा ल्नि ल्ब्रिया है घाट म घी लावता ।

अर इण तर सू उण रा तीर निसाण लागता।

छोटूसिंघ म्हारो पडोसी होवण सू दिन म एकाध बार तो राग सामा इ इज जावता अर कद कद म्हन ई उण री बीरता री बाता सुणणी पडती।

तीन वरसा ताइ वी बठ रह्यो पण उण कदई आपर भरै धुजी काढ र सीगन नी मागी।

—काई सा जीम लिया म्हू कदइ कदई उण नै बूभतो।

—हा अर उण रा मूडा माथ देसी घी री चिगट चमक जावती। मातो मलवाळो गाम भाऊ पाडी व्है जडो व्हियोडो छोटूसिंघ मूडा सू जिनगी पाटो बोलतो, मन रा उतरी इ भाळो अर भलो व्हला जो म्है कद इ साच ई ना मणतो हा। वात वात म मा—चन सू सबध जोडणियो छोटूसिंघ आपर हिय म दरद रा भरया समदर लिया व्हता उपर सू मुळकणियो माथ रा माथ रावतो व्हला आ वात म्हन ठा ई नी पडती जो उण दिन वो म्हार पडोसी रामसरण न इतरो काम नी आ जावतो।

वात यू व्ही क म्हार पडौस म रामसरण री लुगाई आपर डिल माथ घासलेट छिडक'र तुळी लगाय ली। माफ हत्या अथवा आतम हत्या रो केस वणतो। पण छोटूसिंघ न ज्यू ई आ ठा पडी वो झट दौडतो आयो। फटाफट स्टोव भगोली, चाय-खाड रा डिब्बा लाय'र अठी उठी विखेर न्हिया अर थाणदार साव जितर ता इण तरै रो, रासो कर दियो जाण चाय वणावता वळी व्है। रामसरण ता दुकान माय हो उण न ना वापडा न ठा ई कोनी ही।

थाणदार आय'र पूछताछ करी तो छोटूसिंघ हर तर सू उणन पूरो विसवास दिरायो अर केस सुलझाय दियो।

म्हन जद आ वात ठा पडी तो म्हन विसवास नी हिया। म्ह साच्यो के छोटूसिंघ खासा हाथ मारिया व्हेला। अर आखिर एक दिन जद रामसरण री वात चालती ही ता म्ह पूछ इज लियो—किस्तर सा छोटजी रामसरण र वठ कितरो क हाथ मारियो?

वात समझ र छोटूसिंघ आपरा पीळा पीळा दात काढता हस्यो—काई भाळी वात करो माडसा एक घर तो डायण ई टाळ। तक पाई ई ली व्है ता गऊ र रगत बराबर ।

—आ विचर व्हू मर्वं ? म्है ता ई पूछ्या।

—आ ई व्हैगी वस म्हन औ मत वूझा क आ व्ही किकर । छोटूसिंघ ठा नी काई ध्यान लगावण लाग्या। उण दिन प'ली वार म्है उणन गम्भीर व्हेता देख्या।

—ता इ ?

—म्हारी लुगाई ई एक दिन इणी तर सू घासतेल छिडक न इज वळी ही। केवतो केवतो छोटूसिंघ गळ गळा व्हैग्या। □

दायजै रो घाव

रामस्वरूप परेश

धाती रा टगडा पायचा मू पसीनू उपाडी पोडया ताणी पूगगा हो । अर डील मू चिपडी बडी माय सू मगर चिल्कवा लागग्या । दोपार हुया पली दज ज हेवाळ होगग्या ता माम पडयो साळा दिन कियाणी निसरसी ? केसू एक रूल र हेट रिक्स्या टाब न माथा र बधीजेडी साफी सू नाड रा पमेव पूछया । सूकता गळा माय दाय घूट पाणी री राळबा सारू कन हाळी प्याऊ माथ थोबा वाटयो इज हा क उणन सुण्या–

रिक्स्या !''

वा दाय घूट वगा वगा गिट'र जापरा रिक्स्या कानी भाज्यो ।

सारला तीन बरसा माय इण महर माय उणरा आई नाव रयग्या । जर वा ाण नाव स् आळसीज रागा । गाय माय हो जद विणी रा बावो हा ता विणी रा वाका पण रिकस्याळा नी हा । नारना तीन बरसा माय उणरी जिनग्यानी पहिया माथ भाजती रयी पण गाव री सुध उणरी लार नी छाडी ।

पाच वत्ती चाल हे काई ? एक मिनख येला लिया उणर स्यामी उबो हा ।

वठा । वा पान्दळ माथ पग सावळ मनता कया ।

कतरा पीसा लसी ?

तीन रिपिया'

तीन रिपिया ?' जातरी उण कानी जात्या फाड र कयो–'मैं थाई नूवा थाडा द जाया हू अठे जका तीन बताव, दाय रिपिया माय चाळणू ह काई ?'

केसू कया– आवा वठा ।

वो जाण हा क जिया जिया दिन चढ ह लाय बधता जाय रयी ह । वळया वळया री कमाने ता मून रज है नी । पच्यामी रुठेना मिनग मिळगती मडका माय कतरा क दिन मक मने ।

मडक माथै घणी भीड भीग ती ही। कद जीवणा पाइडळ हाळा पग ऊचा न घणा वावा पग। उणर जीवन र घटना क्रम र दाई सिळगती सडक माथ गुडता रिक्स्या रो पहियो सहर माय उणरी जातरा इण माय इज समटीजगी ही। राजीना रो गाई केसू आज भी आपरो रिक्स्यो भाग पाटया ? गाविन्द दवजी रै मिन्दर र बार ढाव दीनू। अत्यारा मिन्दर आगाळा जावाळा माय दो च्यार असवारी मिल इज मव। वा रिक्स्या माय वठया वैठया इ वोडी मिलगाई। लारला पहिया माय डण्डो पडता इ वा लार जायो। सिपाइ नै देखता इज एकर तो वो डरगयो पण फेर हाथ जोड न कयो— बिराजा कोतवाळजी, वठे चालणू है ?'

सिपाइ लाल लाल आख्या काडता क यो–'बूढळा मरवा रा जूण कर है कई ? लारला दो दिना सू तू वठे दोरयो ए कानी, सा हकडी भूल ज्याव ला ज रिक्स्यो कातवाळी लेज्यावू लो ता।'

केसू हाथ जाडतो दीन सुर माय कयो–'आज भूळ नी होव साय। आज जरूर आपरी हाजरी माय पूग ज्याम्यू। दो दिन सू रिक्स्या रा धणी रो भाडा भाडो इज द सक्या हू। बुढापा माय आप जाणा हाण भी सो कम इज काम कर। आप विस्वास राखो।' सिपाइ आग कथ न किणी दूजा न स्यारै लागा। केसू जद आपर जीवन माय पली वान रिक्स्या हाळो बणवा सारू आपर भायल सागर कन सहर आया हा वा पली अर काम री वात आइ कयी'क केसू, रिक्स्या चलावा सारू सहर री आखी सडका न गळया री पिछाण इज मावळी कोनी। वा तो जी नै जाणू हाव वा जातरी इज बतादे पण धन्धा चलावण सारू पुलिस हाळा न राजी राखणा घणा जरूरी ह। अर उण न राजी राखण रो एक इज तरीका है वा अगूठा माथ आंगळी मळ'र मळदार रा इसारा करयो।

सागर जकी बात पैलै दिन गुर मन्तर री दाई कयी ही वा आज भी वतरी इज साच ह।

एक ट्रक सू बचवा ताई वा उतावळो सो ब्रेक लगायो। रिक्स्या माय बठया जातरी र भी झटका लाग्यो। वा कयो–'बाबा इया काई कर है, मारसी के।'

केसू री विचार धारा तूटी। वा एकर लार जोया। वा फरसू एक हाथ सू ग्रधडी डाढी रा पसीनू पूछ्या। सिपाई रा आखर उणर काना माय गूज रया। सिक्या ताणी उणरा भेंट पूजा करणी। दस रिपिया रिक्स्या रो भाडा अर रोटी, बीडो'—पाणी रा पीसा न्यारा चइज। घरा भी ता

गाव'र घर चेत आवता इज उण रा मन घणा उदास हाग्यो न। पाइडळ री ना मातावळी साव होळ पडगी।

पाळी र बार नीमडा री सीळी छया माय बठन हुक्का गुडगुडावा अब कठै ? वा हरया भरया खेत माथ सू पसरती साळी पून तारा छायो आभो न एक दूजा

माय प्यार रा अपणेस।

सारास्र नौमरी माटर सादनिल रा पट्ठाल री घूणी री वाम क्सू रा काळजा माय उतरगी, नितकी ड पट्ठाल गू घुटेडा बार्वामडळ म या जागे न सा पग पाइडला माय फिरता रव न पट्टिया सडय माय। थव पूठा गाव जावण रा आसार उणा नी दीस एक पीडा उणरै नेणा माय उभर लागी।

आभा माय बादळी घिरयाई अर गडन माथे भी छया ह्रायगी ही। लार बठ्यो जातरी जवा अजेस चिप च्याप वठया हा कया—बावा, इ उमर माय रिक्स्या बियाणी चलाव है? आ ता राम राम करण री उमर है।

क्सू एकर मुड ने जाया अर एव निमामा राळता उदास सुर माय धाल्या बावूजी य स्याणा हा मजबूरी भी उमर दम्या कर है क? राम राम करवा री उमर उणारी हुव जिण र गातू जज री राटी रा जुगाड हुव। नी गाव छाडवा री किण न साख आव ह के?

जातरी न केसू रा हैवाळा माथ दया आयगी उणन लाग्या इण मिनख र हियारी डूगाई माय पीडा रा समदर हवकोळा मय रया।

पण थार स्यामी असी का मजबूरी ह बावा?'' जातरी बूझ्या।

केसू कयो— लाडेसर डावडी रा ब्याव ईज गाव सू म्हारा पज्या उपाड नाख्या। गाव माय म्हारी इज्जत ही बावूजी। खेत री ठाड खत भी हा। भस ही ऊट गाडा हा अर दा यू जून राटी भी। मिणत सू कमा लेव हो। मैं रिक्स्याळो ता लारला तीन बरमा सू बाजवा लाग्या हू इण सू पली तो मैं क्दे सहर इज नी दख्या हा।' केसू र उणियारा माथ पसरडी पीडा अर चिता री बादळी री पतळी सी पडत लार बठ्या जातरी न नी दीस ही पण बा उण रा सुर सू उणरी पीड न आळख हा। केसू कया— बापडी चम्पा रा कई दास। अर आगला भी पली ता कयो म्हान की नी चइज पण पछ उण रै मन री खाट भी आखरा माय बदलीजग्यो। खडी चोट एक मोटी रकम माग ली। म्हारी भी इज्जत रो सवाल हा जात बिरादरी माय। ज पली मन बेरो पड ज्याता ता करता साइ करता। पण मजबूरी ही बावूजी। छारी रा हाथ पीळा करणा हा। जे बिना ब्याया जान चली जातो ता गाव मे म्हारी नाव कट ज्याती। फेरा हुया पण पती जमीन गण मिलीजी। चम्पा रा हाथ पीळा हुया पण बुढापा माय गाव छूटग्यो। ऊट बिक्यो। एकला गाडा सू काई फायदा, वचणू पडया।

आभ माय घिरेडी घटा सू छाट ओसरगी। क्सू र मन पर मत माय पूगगो। पण अब बरसा भळाई भता बरमा। बा आपरा आला मूडा न पूछवा रा भाना सू आली आख्या पूछली। एक दिन हा क बाल्ळी आभा माय दीसी र टळमातिया रा सपना सजोया पण अब ता बेटी र दायजा री पीड रा घाव भरया

पलो शतराई मह् घरमा थाई सपना री ऊळ मक। अब ता आ चिंता 'र सिंग्या सिपाई न थाई थस्यू न रिक्स्या रा धणी नै दस रिपिया दिया अर आप'र रोटी खावा रा पीसा बचगी थ री

मह् जार रो आसरग्या। आली सडक माथ पहिया अजस भी भाग रह्या। आला डोल'र बायरा रो फटकारा—थसू रा डीन सी सू धूजवो लागग्यो। पाच बत्ती माथ लाल च्यानणा हा चिनक केसू रा पग पाइडळ माथ'ढव्या। अब च्यानणा पीळा हुग्या हो। थेमू न लाग्या क आ च्यानणा नी चम्पा रा पीळा हाथ है। इण जज ज सार बैठ्या आतरी देग सकता ता केसू ग उणियारा माथ सन्तोस पसरेडो निजर आता। उणन लाग्या क सडका माथ आगा इन रिक्स्या घोसआळा आपा लाग दायजा रा घाव भरवा मारू भूक पट रिक्स्यो चलाव'र चोरावा रा पीळा च्यानणा न जोय न आपरो थट्या रा हाथ पीळा हावण रो सन्तास कर लव।

था राज मिनर थारो मोड'र रिक्स्यो ढाब दीनू। 

भाग्योदय

पुष्पलता कश्यप

घी दिना मू उणरी ग्रहदसा खाटी चाल। काई चाखा ज्योतिषी मू ग्रहदसा साव लुगाई नित उणरा कान खावै। पण वा कानगिनारी वर दव। उणन इण बाता माय जगाई विस्वास नी। छनापण दरदवाण। काम पडया गध न इ बाप बणावणो पड। मुसीबत री मारयो मिनख काई नी कर? व्यारूमर सू हारया पछ आतमसताप सारू कोई न काई सहारो मागणा ई पड। उठीन लुगाइ लार लाग्योडी ही। सवट उण ई मन न समझाय लियो—चालो औई टोटको अजमाय लो सायत मामलो थाळ पड जाय।

अेक दिन वा आपरी पत्नी साग नगर रा अेक मानीता अर प्रतिष्ठित ज्योतिषी र दफ्तर म पूगो। ज्योतिषी महाराज बुगल री पाख जिसी सफेद-झक्क पोसाक पहरया आराम कुरसी माथ बिराजमान हा। मावल मवर लाव केसा साग गाळगट्ट गोर चेहर माथ लाल तिलक जणूतो फाब हो। काच री अलमारिया म माटी माटी पोथ्या सुथराई मू मजी थकी ही अर दा तीन मजा माय भात भात रा जतर मतर पडया हा। वान आया दख र ज्योतिषीजी व्यस्तता री नाटक करता बोरया—'आप मिळवा री वखत बुक करायो है के नी?

नी सा म्हे ता यू इ आयग्या।'

आपन पली म्हार सू टम त करणो हो। म्हार अठ मुलाकात री ओइ नम है। यू म्हन फुरसत ई कठ! पण खर थे आ ई गया हो तो अब दख लेमू।'

धणी लुगाई री हालत अपराधिया जिसी हायगी। व भेळा भळा हावण लाग्या ज्योतिषीजी घडी म टम देख'र कागद माथ नाट करी अर पछ थाणदार री मुद्रा म गरजता थका बाल्या—हारेस्कोप साग लाया के नी?'

वो बोल्या—'म्हारी ता जनमपतरी इ कानी वणी।

ज्योतिषीजी उणरै सामी इण भांत भाळ्यो जाण वा कोई साधारण कीडो मकोडो हाव । पछै उणनै पूछ'र जनमतिथि लिखी, कपूर वाळै'र अेक पपरशीट माळी मरी, उण माथै उणरी दो यू हथाळिया रा छापा आगळिया अगूठा समेत लिया । उणमू कोई जेब आव पूछ र रागत माथ मोट लियो अर कह्यो— काल ठीक इणी ज वगत आ जाइजो ज्योतिषी फत्र त्यार मिळसी ।'

वा उठण लाग्यो तो जुगाई सुणी रो टल्ला दवता उणा इसारो कियो । वा समभग्या अर सकीजतो थको बाल्यो—'पडतजी आपरी दिखणा ?'

'म्हारी साधारण फीस इक्यावन रुपिया है ।' पडतजी अविचल भाव सू बोल्या ।

वा बजार स् की घर सामान खरीदण वास्तै जेब मे पच्चीसक रुपिया घालन आयो हो । इक्कीस रपिया ज्योतिषीजी र चरणा म अरपण करतो बोल्यो—'इण वखत तो फूल री ठौड पाखडी स्वीकार करो महाराज ! ग्रहदसा चाखी आया बाकी कमी पूरी कर देसू । इजाजत होव ? केई हाजर होस्यू ।'

'आपर ग्रहदसा घणी मोटी आयोडी ही—' पडतजी गुरगभीर वाणी मे बोल्या—'ऊपर वाळ री मेहरवानी स थे बचग्या पण अब फिकर री जरूरत कोनी । आगल मगलवार सू थारो भाग्योदय हावण वाळो है। जठ ताई थाडी सावचेती बरतण री जरूरत है ।'

उण दिन गुरवार हो ।

सोमवार री रात सोन रा सुपना अर उज्जवल भविस री उडीक मे बीतगी, सूवौ प्रभात भाग्योदय रै साग आवण वाळो हो, उणर स्वागत री खुसी म उणन रात भर नींद नी आई ।

मगळवार न वो भाभरक उठ्यो । निपट-निपट्ट न माळा फेरण न बठो तो घणी भगती-भावना अर श्रद्धा साग भगवान न याद कीनो ।

उणरा दोयू टाबरिया बबलू अर बटी रात भर सं स करन खासता रह्या । लारला की दिना सू वान जोरको जुकाम हुयोडा हो । टाबरिया री मा उठता ई उणन बतायो के दोनू टाबरा न जोरको बुखार चढयोडो है ।

थोडी क ताळ म उण दोयू टाबरा न उल्टी करता देख्या ।

उणनै वा र साग अस्पताळ जावणो पडयो ।

अस्पताळ म घणी भीड ही । मौसम र बदळाव रै कारण घर घर बिमारी फल्योडी होवण सू अस्पताळ म पग धरण न ई जागा नी ही । उठ डाक्टर न मिलता अर दवाई लेवता नव बजग्या । टाबरिया न ठिरडतो, नाठतो-दोडतो वो घरा पूग्यो । अब राटी जीम जीतरो बखत नी हो । जे बस निकळगी तो पूर दिन री छुट्टी लेवणी पडसी । अफसर उण माथ यू ही नाराज हो । इण वास्त वा

टमगर दफ्तर पूगणी चावतो ।

बस र अड्डे माथ पूगां टा पड़ी के पली रम ता निकळगी । दूजी बस वास्ते उडीकण र अलावा दूजो कोई मारग ई नी हो । टकसी म जावण रा विचार करतो तो पूरा पाच रुपिया री गरजी ही । टाबरा मारू दवाई अर फल-फूल माथ आज चाळीस-पचाळीस रुपिया गरच हुयग्या हा अर हाल म्हीने रा बीस दिन बाकी हा ।

दूजोड़ी बस आई ता वा ठा भरयाडी ही । हत्थो पकड़ न फुटबाड माथ उभण री ठौड़ जग मिळी । ग्ण उपरा ई जेर मुसाफर गू भीड़ होयगी अर धवना मुसरी म ठौड़ पल्तो पड़तो बचगो ।

आफिस पूगता ई चपरासी उणन बतायो क पुलिस रा जेर आदमी सा'ब र कमर म बठा उणन उडीक ।

डर अर वहम सू उणरी काळजो धड़कण लाग्यो । सगळा उणर मानी ओपरी निजरा सू देख हा ।

सा'ब र चैंबर म पूग्या उणरी मुलाकात जेर पुलिस र सिपाही सू हुई ।

'जेक वारदात र केस म पूछताछ सारू आपन म्हार साग थाण ताईं चालणो पड़सी । वो जेक भूर रग रा लिफाफो पकड़ावतो बोल्यो हो ।

वारदात? किसी वारदात ?'

बा ता उठ चाल्या पछ लाम जासी ।

पुलिस वाळ उणरी वात बीच म ई काट दी ही । थाण गया पछ लाग्यो के केसव उणन जेक झूठे मार कूट र केस म फसावण री कोसिस करी ही । लारला केई दिना सू किसन साग उणरी दुस्मणी चाल ही ।

गवाहिया अर वकील र चक्कर म पूरो दिन बीतग्यो । आखे दिन म चाय पाणी छोडन पेसाब करण री ई फुरसत नी मिळी ।

वा थाको थकयो हैरान हुयोडो रात न आठ र लग टग घरा पूग्यो तो लुगाई बठी उणरी वाट जोव ही अर टाबरिया सूयग्या हा ।

लुगाई बोली—'आज तो घणो अवेळो कर दियो ।

उणरा उतरयोडो मूढो देख र लुगाई फेर बोली— तबीयत ता ठीक है ? रोटी परूस दू ?'

'थू पली चाय बणाय ला ।' वो धीरेसीक बोल्यो ।

लुगाई गतागम मे पड्योडी रसोई कानी गई । चाय साथ उणन केर भूर रग री लिफाफो ई मिळयो जिको रजिस्टड डाक सू आयो हो ।

खोलन वाच्यो ता मकान मालिक रो नोटिस हो । लारल च्यार महीना सू वा मकान किरायो नी देय सक्यो । बन र ब्याव म उण पार मार्च जिको करज लियो ही उण पेट आधीक तनखा ता यू ई कट जावती ।

मोटो बगलो

मुहम्मद कुरैशी

देखो जी ! आज जीवण काका जी रे लटके जीवण काका जी न फेरू ठोकिया । डोकरो भरवि रडा कर देखण ही कोनी आव—ताजू री बाई अफसोस करती थकी बोली । अर फेरू कहयो कि भगवान री मरजी है उण घर री कमाई एहडी हीज व्हैला ।

भगवान रे घर री कमाई नी है आ भागवान ! आ ससार री हीज कमाई है । जीवण काको आपरी जवानी म आपरे पिण्ड सू आगे काई सोचियो हीज नी, अर की न ही काई नी गिणिया । बस रिपिया जोडिया अर मकान आद बणाया न एस मौज करी । छोरे र बात बात म जूता लात करी ।

ताजू री बाई बात काटती थकी बोली—तो काई व्है ? करिया ता मग औलाद वास्ते हीज । माइत हा ठोका पीजी करी ता काई हुयो ? व्है कोनी ठोका काढ ताजू ने ।

अरे ! म्हारा ठोकणा ने जीवण काका रा ठोकणा म घणो फरक है । व्हने काइ ठा ? छोरे न नी तो पढायो लिखायो नी छाको परायो आढायो बस आठू पौर बत्तीस घडी ओ कर ओ कर करतो ही ज रहयो । अब है बातां पाछी लडणो साची सातरी देय रियो है । भान म घालता तो ए बाता नी व्हैती—करीमो कना तरीके सू सोच साच'र अ बाता कही ।

बाता मती करो । घर रे घर यू है जामी पट ठा पडला—ताजू री माई आगम विचार'र बोली ।

घर र घर आ कदी नी व्है सकेला । म्हार ताजू ने म्हैं मिनख बणाय रिया हू ।

जीवण काका जी काई लडके ने मिनख नी बणाय ढाडा बणायो है ? काळू जेठजी रो भूरियो काई जण्यो है ? वो रे भी ता डाकरी राटी राटी करती फिर । ढाळा हीज बिगड रहयो है ससार रो—ताजू री बाई राग बोतो देखी जैडी बताय दी ।

अँ काम तो छोडो ही नी कर अर अ नटरो रर जन् पछ काइ है ? मिनख बणायां म मां बाप न आपर वास्त की नी रर टाबरा र वास्त रणा पड त्याग करणा पड, कोरी वाचो माय न टाबरा न पन्नावो गुणवा करणा पड प्यार साबा दुनिया रा ध्यान राखणा पडै, सुख रा सुख छाड र टाबर रा मुख देखणा पड घर री लुगाई मू भी आटी टाटी बात तो टाबरा र सामी नी करणी पड इज्जत सू चाल, व्यारी, सू वाग नी कर आपरा मां बाप रा किया कथन कर म्हारी मवा कर जद ज्यार कोई टाबर मे मिनखपणा आपरा मां बाप न करता देख र आपर। यहा लोगा केवत मही है नी— बारह बरस रा जोबन गाळ्या र एक टाबर पाळ्या।' मतलब एक टाबर ने पाळवा म कम म कम मां अर बाप न बारह बरस ताई जवानी रा जोवन खपाणा पड जद ज्यार टाबर जिनगी जमार रा ध्यान कर सक अर मिनख बण सक। करीमा आपरी मान सू रहवता हीज गया।

म्हे बाई कर लिया ताज र वास्त ? एक स्कूल म काइ घाल दियो कि मान ले रहया हा। रहैवा रा ता टापरा ही नामा। बठाया मुजर री करा—ताज री बाई ताना नागी करी।

करीमा घर आठी रा चूगटिया न आगाज न जोनिया— म्हार दोनी पोडो हा नागी मा। जिम्या तिम्या मायता रा मरणा भपडा ह हीज। आछी म्हारी टाटी माळ थी बाटी। बहरा ही दण म गळगा ओर आप ही गळ ज्यास्या। पाल न ताजिया पढ गुण ने मिनख बणगिया तो वसूल हा जासी। आपा न ताजू न मिनख बणावा रा मूल करणा ह। आपा र काम करणो टाबरा रो। स्कूल माळिय तो मोटा नाम रहव। म्हारा कहैडा हीज भाग। जीवण काका काई म्हैर म्हाळिया कोनी बणाया था ? पण सुख कठ ? इण बाता म सुख नी ह। टाबर मिनख बणमी तो म्हैरा रा सुख इण टापरी म ही ज मिल जासी। नी तर नी खण्डया म्हल म ही कोनी मिल ? ताजिया री बाई रे की समझ पडी अर की नी पडी। म्हा तो दुकर दुकर आपर घर रा धणी रो मूडा जावनी हीज रहगी।

जद ताजू री बाई रे काइ समझ म नी आई ता कहैवण लागी— अं! जय जीवती रहा तो म्हे ही देख रू के किणतर थे म्हारा ताजिया न मिनख बणाचो। 'घर म खानी अपत रा बीज अर म्हार मेले आगा तीज' जाता तो मारी माटी करो हो। आज कित्ता किता दिन हाय गिया है अर छोगो ग्यारवी'री फीस मांग रहचो है, हा ना बण दीनो पडी ?

हा ऽऽ र ऽ! ताजू री बाइ म्हें ता वात ही विसरगियो। म्हे अबार ज्यार म्हौरा जी मू सौ रुपिया ब्याजूणा नर आऊ। म्हे फिरमू गिया जद व्है आज रो वादा करिया। व्हैं ठीक याद दिराया। अब म्हारा ब्याज बट्टा सम्मेत तीन हजार व्है गिया है। मालिक करगी जो ठीक है।

"याओ जिरा ना ठीक है पण पाछा स्वण रा कांइ उपाय'करा हा ? ताज री वाई इरनी धरी पूछिया।

अर भागवान ! थैंकी री जिया कानीमर री मैंग मजूरी मू ब्याज चुवाय देस्या। जार ता हा र काइ है ? ब्याज ता उतार ही देस्यां। मूळ मालिक रै आसर रैवैगी। म्हारा मालिक च्हाया ता म्हारा रिपिया रा म्हे पाछा उतार देसी।

आज भाव रा छारा रा की भरोसो नी है ? म्हारै रिपियां र काम रो पोसा ने लिया ता काइ पगला ? मधरा दरसावती ताजू री वाई बोली।

ऊमाय ने भरोसा कह्या—ताजिया म्हारा ताजू मू माटा देवण रा सवाल ही कानी ! म्हन ठा कानी रा ' पाग्गी माल दमवी म ही पहन लम्बर मू पास हुया। ताजू र माट मास्टर म्हन इस्कूल म बुलाय न साबासी दीनी। ताजू री वाई, म्हारी छाती फूलगी। मास्टै मास्टर बताया कि ताजू ताजू नी है गगा रा ताज है गिर माइ है। आग भी अच्छा नम्बरा मू पास हामी।

वहा म्हा घणा प्यारा ममी जाम म थूकिया हळर म आग पड। पीस रा उपाय करा। थाडी डपरनाडी ताजू री वाई लताड वताई।

म्हारी छाड म्हारा बगण करता पाच छ बरस बद निकळ गिया ठा ही कोनी पडी ! नाग नुगाई रात दिन एक कर न मनत मजूरी करता ने ताजू रै पढाई री बन्दोबस्त करता। "हौरा जी रात दिन छाती फाडता, तकाजा करता पण रिपिया कठ हा जिका चूकता ? हा दस्यां हा लेस्या कर कर ने जिणनर ही टाळता। जिना थोडा बीघा दो बीघा क्यारा हा वहै ही "हौरा जी ने मीठा करणा पडिया। अब ता कण गर्व जाम माथ घर धणी नाग गिया कै मेनत मजूरी कर नें पर काट काट ने वेट री वाट देखता। कर ताजियो डाक्टर बण ने आवता नैं अ कठ र कटैना। पण हिम्मत नी हारी।

सम जावता वार यार लाग अे पाच छ बरस ही निकळ गिया। आज ताजू डाक्टर री परीक्षा देर घरा आसी। धणी नुगाई स्वार रा ही बेटे ने उडीकै। रम रजिया मू आपिया री मीट मिलिय मू अटक रही है पग मोटर तो डाड रजिया आव जिकी टम माथ ही ज आसी। पण मा बाप रा जीव है, काई कह्यो नी जाव ? टेम हाना नी हाता भरोमो तीन दार इस्टेन माथ जाय जाय ने आयगो। दस बजता बजता ता दानू स्टेसन माथ आय गिया। मोटर र आवता हीज दौडिया नें ताजू र हाथ सू बीटा पकी काम लिया। ताजू री बाइ ने तो की आसाण ही नी बधिया। "हा तो पेगी पटक र ताजू नें बाथ में भर लिया। मा बाप र हरख रा आसू रळक गिया। छाती ठण्डी हायगी। ताजू ही मा वाप नें भुक भुक न सलाम करिया। ताजू मगर पच्चीसी रा जोध जवान साफ सुथरा कपडा पहैरिया सामी ऊभा मा वाप ने खुसी मू रोवता देख ने आप ही हरख सू बावळा हाय न हीवडा

रा मोंनी ग्ळरावण हूवो ।

ताजू डाक्टरी पास कर ने आयो है आ बात सग नाग जाण गिया । महिनो सवा महिनो हरस उमाव मे बीत गिया । घणा ही नाग ताजू रा कना सू दवाया लीने फायदो उठायो । मळो लाग जावता । नाग लुगाया आसीस देवता नी थाकता कैवता—म्हार करीमा रा जोध ! थ्हारी हजारी उम्मर हाव । थ्हारा जिम्या पूत मरद मसाण रे हाव । करीमा न ताजू री बाई सुण सुण ने फूळिया फूळिया फिरता । नटता कर कर ने बेटे री हाजरी म ऊभा रैवता । ताजू ही आपरी वाई बापू रा मान राखता नी थाकता ।

आज तडके पैली हीं ताजू आप री बाई कने आय ने बोलिया—बाई ! म्है म्हैर जाऊँ । आज म्हारा फन पास रा परच्या मिनखो अर म्हारा मोटा गुरुजी डाक्टर साब ही म्हन बुलाया है ।

ताजू री याड बाई पड़ैवती ? बोली—थू सीरावण कर र जा । सज्या जाणें थूँ कद आसी ? थ्हारा बापू तो तडके ही मजूरी माथ गिया । थूँ टम सू जायो रहीज । थ्हारा बापू माथ करेगा ।

म्है थाड टावर हूँ बाई ! म्है सैंग समझू । म्हैं थारा थ्हारा कराजा सू उरिण हा सकू ? कर्दे नी हो सकू । सग जावण दे उतरवाई आगिया सू ताजू आपरी बाई ने समझाई ।

सज्या करीमो आयो ता ताजू ने नी देख र बोलिया—ताजू री माइ ! ताजू कठ गियो ?

'म्हैर गिया है उण रा बडा डॉक्टर उण ने बुलायो बताव—ताजू री बाई पडुत्तर दियो ।

मोट डॉक्टर बुलायो ह है !! किणतर ही ताजू अब नौकरी माथ नाग ज्यावें तो सैंग मन री भुगता पूरी हो ज्याव । म्हैं ताजू री बाई ! म्हारो ताजू म्हारा सपना रा ताज म्हैल वणियो कि नी । ऊभो रै जठ ही रिगिया परस । जब बता म्हारे बट्ये म्है मकान बणावता ता बाई आ ताज म्हैल खडो हावता ? अर परा रै मिनख नी बणावता तो जीवण काम उडैडो हुवता होवता कि नी । आ रिपिया रो कवडो किणतर हाथ लागता ? बाप दाद रो नाव उजळ गिया ।

अ वाता धणी लुगाई करता हीज हा कि ताजू हाथ म एक डब्बी ने एक कागद री भुगळी लिया नाडिया आया न मामी आयोडा मा बाप ने बाथ म भर लिया । खुसी सू बावळो हुयोडा बोलिया—बाई ! म्है पूरा राज म पहला लम्बर आयो । इण वास्त म्हन आ डिगरी पान न सोने रो बिल्लो मिलियो । काल म्हन नौकरी माथ मोट सफाखान जावणा है । उठ म्हनै बगळो ही मिल गियो है । म्है काल जायने आय जाऊँ । पछ अदीतवार र दिन बापू न थूँ सग चालस्या ।

उठ वगळे र माय हीज रह्म्या । नाग अब उण वगटा न म्हारा नाव मू शाटर नाजूगे वगटा रहैमी ।

करीमा न ताजू री वाई गद् गद् हाय गिया न मन म मालिक रा सुकर करता टवहवाई आगिया मू दानू ग्वण माथ जोनिया—म्हारा ता माग वगळा थ्रू है ।

करीमा आपरी लुगावड़ी सू हरस सू वालिया—स भागवान ! थ्हार म्है 'माग वगळा' जणाय दिया है ।

ताजू री वाइ ऊमाव र माग वह्या—जाओ जाओ । माटा वगळा रा धणी उण माटा धणी री मसीत म ता दिया कर जावा ।

हाँ असली मोटा बगळो हाय लागो है । अब उण देवणिया रै अधारा म वयू रासू बहैवता दोडता ही ज करीमा मसीत पूगा । □

अधारो

मोहनलाल जत्री

रामनाल ! हा रामलाल ईज ता ! आ ईज नाव तो चाल रह्यो ह उण रा कालज मे। कलास अर कॉलिज रा सगळा यार दोस्त उण न 'रामलाल' कय'र वतळाव है पण अठ गाव म सगळा लागवाग 'रामो' कह न बुळाव है बाई बापा ई 'रामा' कव। 'रामलाल' नी मइ, रामो इ सई, की फानी ! पण गाव रा की भाई ऊचा लाग उण'न 'रामलो' कव तो उण रा माथा भनाट करण लाग जाव ह।

वो उणा र खिलाफ की कानी कर सकता क्यू क वो खुद जाण क इया लोगा री खिलाफत करण रा मतलब माथा भार करण सू कह है। कई वार गाव म मामूली बात माय माथा फाट ग्या ह। चाकू छूरा तक निकळ ग्या ह सवट जा समझ लियो ह क गाव म रणो ह तो सामन्तवादी तत्वा री जी हेजूरी करणी व्हैला भळ ई य दूजा र टावर न छोरा कवे अर खुद र टावर न 'कवर सा' क'राव मवट फरक तो की कानी पड पण आ मन समझावण री बात है।

देस री आजादी र बाद सामन्तवादी तत्वा री ताकत की कम हुवणी चाइजती ही, पण अठ उल्टी गगा चाल री है दिन दूणी अर रात चौगुणी आ ताकत वध री ह। किणी नता रो चुनाव म जीतणो सारो कानी जद ताई वो नता गाव गाव रा ठाकरा सरपचा न राजी कानी राखै न अगर ठाकर सरपच राजी व्है ग्या तो समझ लो क उण गाव रा सगळा वोट नता रा है। अज गाव म ठाकरा अर उणा र भाई बन्दा रा रौब है अर उण रौब सू गाव री जनता आज ई उणा रा गुणगान कर री ह।

आज वो घर आयो है। दीवाली री छुट्टिया बितावण रा मतो कर'न अठ आयो है। यू उण रा मन गाव मे आवण रो नी हो पण मोच्यो क तीनक साल सू गाव री गैवानी कानी मनाई है, अबक मना ई लू !

यू धारासा न राम लि है पण माल आप पता मता गए । बगत म माग ग्या है । गाव री दालिया अर मुनाग्यां पर आगन्या लाल गारा पागा गाम मारा भग्या र मार मार आरदिय नाई जाव पता है । कई वर्ष दालिया ना आरदिय मू पना अजवी जाव र पाठा बाग पार है ।

उण र घर आवण न बाद थाणा री मुग हुवगा पान्जरा हा, पण उगा दावा रा मूडा बी उगरपाटा लाग रह्या है । पर आवता दू वा गागण लाग ग्या है क बाप-दादा रा मूडा उगरयोग बय है ।

बणार पछ वा आडाण पाडाण र लाया म मिलण र ग्या ला उण न ठा पड ग्यो क उण र बाद गाणा उणाग जबरण आ रह्या है ? वा पाणा र गाणा आयजा र घोष मू उठ न घर आ ग्या । आवता ई थाणा न आद हाण लिया— म्हन नगर मना आ रह्या है क थ थाण वय ना ग्या ? रिपाट ता लिखवाणा ई चाईजती ही ? '

' म थाणा थारा थान कर रह्या ? पुलिस वाटा आपा रा भाई बाटा ? पती जद गारी बराबर पछ थाणदार पेर हुवण आदण वाला री कानी न्हजर आयरू माय पट्टा लाग गयाई म वा अलगा ' राणा उण न नमजायण लाग ग्या ।

हुवण जावण वाला बी र कानी ? पुलिस वाटा पूरा साठ ता करसी ई ? इण रात ई थाण म रात लिया ता नगत ना क घर बदर्द अडा हिम्मत आ गोगा रा टाबरिया कानी कर सकला । वा गागा पीटा हुवण लाग है ।

यू रानी जाण रामा आपा न गाव म रणा है य नागारम्बार है पुलिस बाटा द उणा मू धूज है पछ आपा री काई हैसियत ? ''

इण रो मतलब आ हियो म आपा अत्याचार र खिलाफ मू तराल री परा, ज्यू चाल रह्या है, चालता रव । पला आपा गुलाम हा पण अब आजाद हा आजाद दम म ई आपा री आ गत । आपा न आज ई जाय र थाण म रिपाट लिखवाणी चाईज '

यू जिद मत कर रामा उणा रा की कानी बिगडला हालताई ता बात ठण्डी है, थाण ग्या पछ आ बात हवा ज्यू फल जावला अर जिण न ठा नी है उण न ई ठा पड जावला आपा री ईज्जत रा सवाल है ।'

बापा सू मगजमारी करण रा की मतलब कोनी । वा बापा कन मू उठ न घर ढाळिय म जाय'न मूज र माचा माथ आडो व्हे जाव है । सूता सूता इ वा की गनागम म पजग्या है ।

इण तरिया ता नीचल तबक रा लाग बाग माथा ऊचा कर'न चाल ई नी सकला । आ काई बात व्ही क एक चालती छारा री ईज्जत माथ काई हाथ नाख द उण री बन गवरी पाठा बीणण माख आकड़िय मू अलघी ग्यी परी

मुनमान जगै दम'र उण री इज्जत माथ आ नागा रा छारा हाथ नाग्र ल्यिा ईज्जत लूट ली। आ काई मजाक ह। आजाद दम म मर्जी आय जद काइ किणी री ईज्जत आवरू माथ टाको डाल सक।।

वा थाणै जावला आ नागा र छारा र खिलाफ एफ आई आर दरज करावला आ काई दादागिरी माट राखी है देस र आजाद हुवना उणा री जागीरा उखड़ ग्यी जद काई है। काई माग है। घर म जिका भी है उण माथ दारूडा पीवो अर मारूडा गावो। चानतो बन बटी री ईज्जत लवणी ठीक कानी नीतर नीतर काई कर देवला वा। गाव म रैणो है तो आ लागा अर उणा र दूध धावता टाबरिया न जीकारा मान दवणा ई पडला।

उण न ठा है क आज ई गाव म नाइ भाजी मेहतर तवात उणा री बगार कर अर पाव है—दा टम री रोटी। आज ई गावा म नीचल तवक रा लाग वाग आ नागा अर मेठा र घरै मामेडी है। व ई उणा रा मार्फत है। उणा र खिलाफ चू तकात करणो पाप है।

पछै वा अेकलो उणा र खिलाफ थाण जावला। थाण ग्या पछ काई हैला। अरे हैणा जावणो काँनी की परमा थाण वाला पटकाय लेवला अर फैवला, सब ठीक कराला पछ। पछै काई? गाव म हाको फूटला क रामल री बन गवरी साथ आ लागा रा छारा बलात्कार किया। बापा ठीक कय है क हालताई जिण नै ठा नी है, थाणै ग्या पछ उणां न ई ठा पड जावला वा रा ता की भी हुवण वाला नी है बाइ री ईज्जत खराब हुवण री बात आजू बाजू रा सगळा गावा म पूग जावला। भविस मे सगपण ई हूवणो दोरा हा जावला समाज म जीवणा दोरा हो जावला सगळा गिनायत ठाला देवला।

ता काई वा थाण नी जावला? हा वो नी जावला पाता र घर अर बन र भविस खातर ना जावला ता काई आ ईण'ज तरिया चालता रवला? अधार सू जूमण वालो मरग्यो काई? हा, मर इज ग्यो दीस है। उण र मन म अधार र खिलाफ एक गूगा गुस्सो आकार लेवण लाग ग्यो। □

माटी भखै जिनावरा

जनक राज पारीक

रुकमणी री पगथळी र पाछण सूं टांच'र मिरग्गार गीगडी थी'र ऊपर चढाइ अर सीगडी र दूज गाम न मूड माय घात र बार री ओट सूं सूसण लाग्यो। पाछण री ताजादम चरीटा र बट सूं माय लिपाव पडग्यो। रुकमणी पगथळा माय हुयती पीड सूं सिसकारा भरया, ता मिरग्गार बी न थ्यावस बँधावत कया, 'गन्दा पाणी है, माइ' चार मागडी म लीच के सणफ रो बीमारी जड मैं रादूंगा।' कह'र आपरी थाळी सूं दूसरी सीगडी ढूंढत सिरदार जियां थान न फेरूं बधाइ मेरी माना ता माई पीडिया पर छ छ जावैं और चढवाला। बाळा सूं निकस जावगो, ता समभयो जस मणफ कभी चली ही नी थी।'

सिरदार री बात सुण र रुकमणी बोली ना भाई, ना। जाबा सूं ता मनै बडी सूग आव, मर ता आर नाम सूं ई धडधडी छूट जावै। पीडी पर चढावा तो सगळ डील म रीळ चालण लाग ज्यावै।'

ओ तो तरा वहम है माई! तू किसी अनाडी म चढवाई हागी जाक। मेरे पास बा जोहड-तलाब म पकडी हुई जाक नही ह। बाहर स मँगवायाडा जिनावर ह-असली। आदमी सैं बी ज्यादा समभदार। साफ खून कूं मूं नी टालैंगी, गद की बूंद नी छोडैंगी एक। पिडली कूं पकडैंगी तो चीटी क काट जित्ती पीर नी हागी। बस थाडा वदन कूं यूं लगेगा जस कीडा रेंग रिया हा।

के हिसाव सूं लगाव, भया ?' रुकमणी बूझ्यो तो जाबा माय बी री दिलचस्पी ओळखत सिरदार सहानुभूति जताई, बीमार आदमी स काह का माल भाव माई! मेर पास अगरेजी डाक्टरण वाली लूट खसोट तो ह नइ। आठ आना जाक क हिसाब सैं लूगो। दो आने कम द देगी ता यहा कौन ज्वाले न शाह हावणा है।' कह र मिरग्गारा रुकमणी री दूजी पगथळी टांचण ढूक्यो।

आठ आना तो घणा है, भाई। बा रा जाबा रा हुया छ रिपिया अर फेर

माखिया रा दो त्याग । आ तो बळी गणफ नी हुई, गळिया री तरै हुया ।'

'दूसरा भी बीमारी मू पीन या ता जिनावर है,' माई तेरी गणफें भीवंर पब शहतून सी गिर जाएंगी—अपने आप । जित्ता इनसे वैसाता हू उससे चेरी तो इनकी दख भाल म लग जावे ।' गिरदारो भी सोचतो सा फेर बोल्यो, 'रास्तो काम तो या है माई, कि किसी ठग्गू बूचिय सें पिडलो टचुंवा'र उदूरा खूब मूल भरवा लती । सात दिन के लिए तो गणफें खतम, पर आठवें दिन जब चलगी, तो काळी-पीळा आंधी आवेगी ।'

थोडो थम'र गिरदारा रुक्मणी न समभावता सा फेरूं बाल्यो, वा चीज बीमारी को दबाती ह माई, और यह बीमारी को खाती है । फक बस इत्ता ही है । जाग जग तुम्हे जेंचे । गाहक के साथ ताई जोर जबरदस्ती तो है नइ ।'

'ठीक ह भाई, तू जेंच'र लगाद चार चार जाव । सीगिया सण ■ रिपिया द देस्यू । गरीब रा हक रा'खर तो हू थी राजी कोनी ।' कह'र रुक्मणी आपर धापर री लावण पीडिया ताई सरका लिन्धी । जावा चिपा'र सिरदारै आप री रानी सीगरू या काळी माय घाती अर बीडी सिलगा र रुक्मणी सू मुखातिब हुया माई, तर परा म स्वून रह नी गया है । गदा पाणी निक्सा ह । यू तो घर अपणे गाव हो क्या है, आजकल । सफेद खात की सब्जिया और विलायती खात का नाज । पैहले के टेम म घर पर आलू का साग बनता था, तो पडासिया को पता लग जाता था क आलू खाने है । आजकल तो भिण्डी खाओ या टिण्डी, स्वाद तो नमक मिच का ही आना है ।' कवत कवत सिरदार रुक्मणी री पीडिया सू जाव उतारी अर अगूठ अर आगळी र बीचाळ दे र निचाडण ढूक्यो । खून री पतळी पिचकारी आगण ऊपर मडगी । कुलडिय म जावा घात'र वी रुक्मणी रा दियोडा छ रिपिया आपरी बडी री गोज माय घाल्या । भोठी लाठी माय घात'र खूब ऊपर टिकाई अर जाका रो कुलडियो उठावतो रुक्मणी न बोल्यो 'अच्छा चलता हू माई । मालिक प भरोसा रखना, भली करगो ।'

चूतर मू उतर'र, गळी म आ'र वीं आपरो सागी हला फेरू पाडयो 'का ऽऽट सींगी लवा, जाका लवा ।' आज बी री भेळी छ रिपिया री घ्याडी बण्याडी ही । बा री वडी री जेब माय जिया काई सिलगत आरण छाण रो निवास हो । थम थम'र वी रो हाथ गोजी ऊपर जाव हो अर ज्यू आपू आप मूड सू हला नीसर हो, 'का ऽऽट सागी लवा, जोका लवा ।'

गळी गळी रया ई हला पाडतो वो ढाई कोस रा मारग बीत'र सिज्या जणा डेर पूग्या तो दो सर गीवा रा आटा, आध सेर गुड अर चाय पत्ती बी साथ ई लग्या हा । टापर म वडताइ सगळा सू पली बी री निजर रावत ऊपर पडी, बा माटी छा माय बाजरी रो आटो घोळ'र गबडी ताई खाटो ओल हो । रोट्या रा

माटी भखै जिनावरा

जनक राज पारीक

रुक्मणी री पगथळी न पाछण सू टाच'र सिरदार सीगडी बी'र ऊपर चढाई अर सीगडी र दूज पाम न मूड माय घात र वोब री आट सू चूसण लाग्या। पाछण री ताजादम झरीटा र बट खून माथ खिचाव पड्यो। रुक्मणी पगथळी माय हुवती पीड सू सिसकारा भरया ता सिरदार जी न ध्यावस बँधावत क्या 'ग दा पाणी है, माइ! चार सीगडी मे खीच के सणफ की बीमारी जड मै टा दूगा।' घह'र आपरी थाळी सू दूसरी सीगडी ढूढत सिरदार जिया वान न फेरूँ बथाई मरी माना ता माई, पीडिया पर छ-छ जावें और चढवाला। काळा खून निकस जावगा ता समभयो जस सणफ कभी चली ही नी थी।'

सिरदार री बात सुण'र रुक्मणी वाली ना भाई ना। जावा सू ता मन बडी सूग आव, मेर तो आर नाम सू ई धडधडी छूट जाव। पीडी पर चढावा तो सगळ डील म रीळ चालण लाग ज्यावै।'

जो ता तरा वहम है माई! तू किसी अनाडी सैं चढवाइ हागी जाक। मर पास बा जोहड–तलाब म पकडी हुई जाक नही है। बाहर स मँगवायाडा जिनावर ह–असली। आदमी मैं बी ज्यादा समभदार। साफ खून कू मू नी डालेंगी गद की बूद नी छाडेंगी एक। पिंडली कू पकडेंगी तो चीटी के काट जित्ती पीर नी हागी। बस थाडा वदन कू यू लगगा जस कीडा रग रिया हा।'

के हिमाब सू लगाव, भया ?' रुक्मणी वूझ्या ता जाका माय बी'री दिलचस्पी आळखत सिरदार सहानुभूति जताई, 'बीमार आदमी सैं काह का माल भाव, माई! मर पास अगरजी डाक्टरण वाली लूट खसाट ता ह नइ। आठ आना जोक कं हिमाब मैं लूगा। दा आन कम द दगी ता यहा कौन ज्वाल न गाह हावणा है।' कह र सिरदार रुक्मणी री दूजी पगथळी टाँचण लूक्यो।

आठ आना ता घणा है, भाई। बा'रा जाका रा हुया छ रिपिया अर फेर

सीगिया रा दा न्यारा । आ तो बळी सणप री हुई, गठिया री बाधें हुया ।'

दूसरा वी बीमारी सूं पीन वाला जिनावर है माई, तेरी सणप पीवै'र, पव शहतूत सी गिर जाएंगी–अपने आप । जित्ता इनसे कैसा तो हूँ उससे वेसी तो इनकी देख भाल म लग जावै ।' सिरदारा वी सोचतो सा फेरूं बोल्यो, "सस्ता, नाम तो यो है माई, कि किसी ठग्गू बूचिय सें पिडली टचकाइ'र चदूर का सत्व भरवा लती । मात दिन क लिए तो मणपें खतम, पर आठवें दिन जब चलगो–लाळी–पीळी आघी आवगी ।'

थोडा थम'र सिरदारा रुक्मणी न समझावता सा फेरूं बोल्या वा चीज बामारी ना दबाती है माई और यह बीमारी को खाती है । पक बस इत्ता ही है । आग जस तुम्ह जँचे । गाहक के साथ काई जोर-जबरदस्ती ता है नइ ।'

'ठीक है भाई, तू जँच'र लगाद चार-चार जोक । सीगिया सण छ रिपिया द देस्यू । गरीब रा हक रा'खर ता हू थी राजी कोनी ।' कह'र रुक्मणी आपर घाघर री लावण पीडिया ताई सरका लिधी । जावा चिपा'र सिरदार आप री रीती सीगड्या झाळी माय घाती अर बीडी सिलगा'र रुक्मणी सू मुखातिब हुया, 'माई, तर परा म खून रह नी गया है । गदा पाणी निकसा है । यू तो सर अपणें न्याय हो क्या ह, आजकल । सफेद नात की सब्जिया और विलायती खात का नाज । पैहले के टम म घर पर आलू का साग बनता था, तो पडोसिया का पता लग जाता था क आलू छावे है । आजकल तो भिण्डी खाओ या टिण्डी, स्वाद तो नमक मिच का ही आना है ।' कवन कवने सिरदार रुक्मणी री पीडिया सू जोक उतारी अर अगूठ अर आगळो र बीचाळ दे र निचोडण ढूक्यो । खून री पतळी पिचकारी आगण ऊपर मडगी । कुलडिय मे जोका घात'र वी रुक्मणी रा दियोडा छ रिपिया आपरी वडी री गोज माय घाल्या । झोळी लाठी माय घात'र खूवें ऊपर टिकाई अर जोका रो कुलडियो उठावतो रुक्मणी न बोल्यो अच्छा चलता हू, माई । मालिक प भरोसा रखना, भली करगो ।'

चूतर सू उतर'र, गळी म आ'र वीं आपरो सागी हलो फेरूं पाड्या, 'या ऽऽट सीगी लवा, जोका लवा ।' आज वी री भेळी छ रिपिया री ध्याडी बण्योडी ही । वी री बडी री जेब माय जिया काई सिलगत आरण छाण रो निवास हो । थम थम'र वी रो हाथ गोजी ऊपर जाव हो अर ज्यू आपू-आप मूड सू हेलो नीसर हो, 'को ऽऽट सीगी लवा, जोका लवा ।

गळी गळी द्या ई ह्ला पाडता वो ढाई कोस रा मारग बीत'र सिज्या जणा डेर पुग्यो, तो दा सर गीवा रो आटो, आध सर गुड अर चाय पत्ती वी साथ ई लग्यो हो । टापर म बडताइ सगळा मू पली वी री निजर रावत ऊपर पडी, बो माटी छा माय बाजरी रा आटो घोळ'र राबडी ताई खाटो ओल हो । रोटया रा

टिक्कड वो गव नुनया हा । चूल्हे वन वठ्या वसरा गोग री आर ऊपर हळ्ळा पल री लूपरी बणावे हो । माँ एवं टूटयोडी सी ,माचली ऊपर, एक्खानी निसासू पडी ही । भोळी उतार'र सिरदार खूटी ऊपर टागी, जोरा रो मुनडिया एकेखानी सम्भाळ'र धरचा अर रावत मू बोल्या, छ रुपिया वा भार मत्ता लाया हू । आटा चाटी म रग दे और गुड कुज्ज म दरली उरली मच्छर-मक्खी स बचाकर । मेरी टागें रह गई हैं–ग्यारह घटे की फेरी म।'

एक लाम्बी उवासी ल र सिरदारा मा सू बोल्या रावता क्या कुछ बना लाया आज ?'

मा रा हाठ री कवण न हाया ता सरी पण वात मूढ मू नी नीसरी। वा माची ऊपर कूणिया टिका'र नियाई बठी। हुई अर निसासू सी। सिरदार रो मूढो जोवण लागी रावत की वहू न भादर का चूडा प न दिया क्षान ।' माँ आ आळी जिया नीठ्ठ पूरी करी अर म्हामी माय उळभगी ।

कुए म पडे गोदाडी और ऊपर म रावता, मेरा मन ।ता उसी दिन फट गया था जिस दिन वो घर छाड के निकसी थी । छिने'क चुप रह'र । सिरदार फेर ऊफण्या अब तने मू की क्या कहू माय ! पैतालीस बरस का ता मैं । हो लिया । मेरा आगा पीछा ता कुछ किया नही तैन । लन्दे कर एक औरत रावत के पीठ लगाइ की ता उसन जाकर ढाढियो रा चूडा प'न लिया । ऊपर सें । य नगीद एसा, कि काम म मटठा और म्हान कू पटठा ।' सिरदारो रावत कानी मुडचा ता मा बोली, किस कुए मे पडे, रावता ? सवर से साझ तक गला । फाडता, भटकता आया हू पर कौन गोदन गुत्वाता है आजकल । वा ,टम रैया नी जब आरते हाथा पर अपन मर्दा के नाम और मद आधा।पर मार गुदवात थ । आजकल की लडकिया ता विधान के। डर से सून नाक और बूच कान चँवरी पर वठती है वे भला गोदने गुत्वाएगी ?' धणी बोलण मू मा खासी माय उळभी, तो न्वासनी न्यासती दोलडी हुगी बहत्तर बरस की ता भ हो गइ पर न ।नाती न पाता । मैं किस कुए म गिरू, किसके जी कू रोऊँ ?'

सिरदार कन कवण न जणा की नी रया तो बो राटिया वाळ छाबडिय कानी मुडया । सास सुळभा र मा फेर कवण लागी रावता आज कमर ।कू सिरकारी अस्पताल ले गया था । बडी बीमारी का दमर।बताया है डाक्टर न । हल्दी तेल की लापरी से ठाक नी हान का । चीरा-फाडी हागी, और। लम्बी दवाई चलगी । अवर करनी ता ' मा थमी ता सिरदार र भुभळ ऊपडी , ता दुनिया न्हाली हो जायगी ।'

थून मूढ स कळजीभ, ।मा रा काळजा काप्या ,'सुभ सुभ वाल सिरदार तरा छोटा।बीरा है । तरा जूठा दूध पिया है किसन ।

गिरनागी दवागा जायगो, नो कोई गिरवागी बामारी ही विरागी। वस बही वहा या छोटी, उदगाठ उठी है। नापरी म पक जायगी, ता नील धाग से बीधकर ऊपर आध पाव मा बाट बाँध दग। ढाई दिन म—है वही बठ जायगी। अगरजी डाक्टरन मे पास जान की अपनी औकात कौ है? फिर मेरा ठरा चार सौ बीमो का धन्धा। मुकी मेलरी जम लाया वे मात रह गय है। गडासा मार दा, ता गून की वूद नी निकस। माली सीगी मे मू म पानी भरता हू और गमे पानी के माफर निरालना हू, नो रुपिया—अधेनी मिल जाव, कारी रावत की आमदन तर म छुपी नी है।'

'कल सवेरे ही मैं अपनी मसीन बच दूगा।' रावता ण्ग नट्ग रै साथ बाल्या।

'मसीन बचेगा?' सिरदारो, रेमगे अर कारी माँ इचरज दरसावता सा साथ ई बोल्या।

वा मसीन, जिसे तन अपन हाथा म मजाया-सँवारा था?' माँ मैया अर बह'र खासी माय उळभगी।

'जिसकी चाबी निमाल' मे, बिजळी मल डाल कर तन एटामटिक बनाया था?' सिरदार बूझया।

'ठाकुर जी की मूर्ती की तर जिमकी साफ सफाई तू राज कर था, भाय।' मगरा मू छाटा केसरा बोल्या।

'हाँ उसी मू, और ये जा मर पाँव म पाँर भरी चोटी का बडा है इम मू की मल बच दूगा मैं।'

लेकिन क्या?' सिरदार भाळ कह'र बूभया।

'मैंन गूबीराम म बात कर्ली ह। डेढ सौ रुपिया म वा पच्चीस थाली, कटोरी, गिलास का मट दगा। मैं अपना धन्धा बदलूगा। रावतो बोल्या, पुराने कपडे लीतरा के बदल बासन बेचूगा। गोल डिग्गी ऊपर पुरानी धोतियाँ तीन तीन रुपिया म हँस हँस लेत हैं। फटे पूर और छीछरें चीथडे बचना ले लेगी। इस काम मे रोजाना छ सात की आमदनी है। पछी माले पडत न बी इमम मुझे कमाई का जाग बताया है।'

पर प'ल केसर नू बचाना जरूरी ह।' थाडा थम'र रावतो जिया काई अभूण भेंर सू बोल्या, 'माय को बी मारा हुआ मलिया कव तक देत रहग? सास की बिमारी विना दवा दारू के टिकेगी नई।'

सिरदारा केसर री वदगाठ ऊपर लूपरी बाँधण लाग्या। माँ, जस्त र कचाळ माय घरयोड टिकडा अन चिटणी सू जूभ ही। रावता आपरो जिग्या—हा जियाई बठ्या हा—थिर, गाळ डिग्गी अन चिळकण बामणा री दुनिया माय गुम।

सावण सू प ला माँ न बड़ जारी गाभी रा दारा पड़्या, पण वा आपरे सागरत दुःख न ई ओळमा दीरा बसर री बीमारी और गजन बी बहू मुझे नहर जावेगे। राम के घर से बुलावा आ गया है।'

सिरदार न गहरी नीद आवती ही, रावता चटाई ऊपर बठ्या हा— गुमगुम। बसर री पुनार थम थम'र गुण ही। टापर री गिनरामार सुनाड जिया माग्यान निगळ्या जावे ही ।

गिणणिया गिणण री मशीन उठा'र मुंडू अघार ई रावता टापर मू नीस रया ता सगळा गू प'ली भरया पडा लिया आवती मावतरी रा दरसण हुया। रावत सुण सामण निया। वीं री सारी साजाबा जिया गडमड हुवण लागगी ही। वणाई वीं र विलखन वा णा ऊपर सूबीराम रा उणियारा सडता दीस हा, ता वणाई पूर लीनरा वाळी माट डिग्गी अर वरी आस्या याड्यो बचता रा धर्ई गा गा'ल। वणाई माँ अन केसर री बीमारी ऊपर पूरी री पूरी कमाई लाग जावती, ता बगता ई बा उदास हू ज्याव हा। चाणचक वी र डावें हाथ लेजड ऊपर काचरा करळाई, ता वी र विचारा रा ताता टूटया। वी नै सिरदार री याद आई। बा साचण लाग्या— उडा भाई सिर ऊपर हुव ता बयारी चिंता अर बयारो पिवर। किन्नो महारो है सिरदार रो घर म' वी सोच्या अर सगळा विचार भाड न्घा।

चाँदी रा कडा अन गिणणिया री मशीन रै नाप तौल माल भाव अन हिसाब किताब माय खामा टम लागगा हो। पूरा एक सो सत्तावन रिपिया ल र जणा वा बार नीसरया ता दिन ढापार हा। सूबीराम री दुकान जावण सू प ला बी आपर टापर जावणा ठीक समझ्या। प जा केसर री बदगाठ रो इलाज, माय री दुवाई, फेर बच्योडी रकम रा भाँडा बरतण।

सूरज री चिलबिलाती तावडी अन गाजी माय धौसा र निवास माय यायाड न वी न आपरी चाल री तजा अन रस्त री लम्बाई रा ध्यान इ नी रया। सिर ऊपर बरतणा रा टाकरा हुवेला अर कान माय पुराणै गावा री गठडी 'भाँडे ले लो, बरतन भाडे।' नहीं, वी सास्या—इण पुकार म न ता वो लय है और न वा मगीत, जा सिरदार री काट सीगी लवा, आवा लवा' म है। हेर्ने मारू बी न आपर भाई सू सलागुन करणी हुव ली। साचतो—विचारता वा टापर पुग्यो। टापर आग पाँच सात आदमिया न भेळा देख'र वी रा पग पाछा पड या। फटस बडलाइ बी री निजर केसर ऊपर पडी। उपाड डील वा मद्दर हुयाडो बठ्या हो। वी'री पतली लम्बी मूछा री जिग्या अब पक्त सफाचट हाठ हा। मा री माचो एक कानी सूदी पडी ही। आगण उलारयाडा माँ र पगाण सिरदारा बठ्या हा, सिर मु डायाडा, उदास। रावता आ सौ बिरतात देख र सडया रा सडया रह्या। केसरा उठया, उठ र रावत र बाथ भरली अर धुसकारा मार'र रूवण लागग्या। माय,

माय नइ रयी र माय हमे छाड कर चली गयी रे मा ऽऽय रावतो तो जिया सूनो इ हुग्या हो। हरस-दुख, रावा कूवी वी न वी नई आवड यो। सिरदारो विथू रो विथू वठयो हा—थिर।

गळी र ई एक बुजरग रावत रो गूवो पाड'र हलाया सवर कर बेटा सवर से काम ल। जाणा तो सबी कू है। कोइ आग काई पीछे।' कह'र बी रावतं न नार्ड र आग पाटड ऊपर बिठा दिया।

'माटी भग जिनावरा' डूबत स मठा दूज कह यो।

'बहत्तर साल की नम्बी उमिर भोग ली। तीन तीन बेटा का सुख भरा पूरा परिवार छोड़के गई है अणची। गने धान वानी बात नहीं।

'स ग्यारस ने दिन सरीर छोडा है। सीधा बकु ठ म वास मिलेगा तक्नीर वाली थी।'

'पूरब जलम के अच्छे करम थे भया। त्यागा ता घडी भर म सरीर त्याग दिया। बच्चा कू तालीप नी दी कद—रत्ती भर।'

'बातें छोडो ले चलन की तैयारी करा। बेकूटी निकाला भजा गात हुए और पीछे करो बटिया मौसर जिमग लोगू कू बी पता चले कि तीन तीन कमाते कमाते बेटा की माँ मरी है।'

रावत रो सिर मु डग्यो तो एक मिनख वी न सूवा पकड'र उठायो, 'मौसर-भाज और किरिया करम के नास्ते हमार पास यो ही कुछ है, ताऊ।' कह'र रावत एक सौ सत्तावन रिपिया बूढ र हस्तु कर दिया। रिपिया न गोजी म घात'र बूढो बोल्यो, 'आक्षरी दरसन करले, बेटा।' कह'र बी कफन रो पलो ऊचायो— अर अणची रो मू उघाड दियो। अणची रो उणियारो वदळग्यो हो। आंख्या फाटयोडी अर मुह खुलो हो। देख र रावता डरग्या। पाछो सिरक'र बी सिरदार र बाथ भर लि थी 'माय, माय साल रो साल और जीती रह जाती रे माय केमरे कू खा गई माय का खुना मू केसरे कू बुलाता है माय।

सिरदारो गळगळो हुग्यो। रावन र घुघरियाळ बाळा री जिग्या सिर ऊपर हाथ फेरता जिया बी र काटा सा गडया। वण रावत र बाथ भर र छाती सू चेप लियो, 'रो मत भाय। मद के बच्चे राया नइ करत। मद के आमू अकास कू जाव और घर मसाण हो जाव। कह'र सिरदारा बूबडी मार'र रोवण ढूक्यो। कडियल जुवान सिरदार न इयू फफक-फफक र रोवनो देख'र थोडी ताळ तो रावत न इयू लाग्या ज्यू अब बो पूरी तरिया अनाथ हुग्या हुव। □

दूजौ ब्याव

रूपसिंघ राठौड

छोरा तो लंगोटियो घन हुव । डील उघाड फिरा घाय पगा उभाणा । कुवारा फिरो चाय ब्याया । काई बाड नी तोड । किणीज भात री चरचा भी नी घाल । पण डावडी र स्याणी होता पाण मा-बाप री नींद उड ज्याव । रोटी पाणी छूट ज्याव । आठू दिन रात—एक ही वात । डावडी रा ब्याव हुव अबकी म्यात । टेम माथ डावडी रा पीळा हाथ करणा भोत जरूरी । डावडया र ब्याव रा मामलो इण जमाने माय घणा करडो ।

भला सू भेटा हुजावै ता म्हर माना नी ता तरी मागगी तरा मूड हाना देर नी लाग । आछा भला री स्यान टका हुज्याव । करे कराय पर घणगरा ता पाणी फेर नाख । जूतम फाव होता टीम । जे किणी कुजीव सू पाळो पडज्याव तो उमर भरन रासो होज्याव । कई कई ता छोरी न बाळ नाख अर दूजा कई जीवती ,र पनीतो ही लगायदे । घणा कसूता टम । नेज दज रा नाका नी । आव रा बाबा माग । ओव मूड माथ नी माड र सीगा माथ ऊपर माड । रीता ता भरीज जाव पण नीचा सू लीक करणिया रा काई भरीज । सुद री छाती पर हाथ धर वदे नी मोच क– किणी री बेटी बाबल र घर नी र । बी मैं टीवरी चढावणी पड । अर म्हारी नाडी किणीज री भ् हुवला ।

घर मे चाये उदरा कलाबाजी साता फिर । कित्ताई टोटो हुव । पण बेटी रा वाप आपर वूत सू बार नगावण रो जतन कर । उपरला नाका किणीज र हाथ नी आवै । पण लोग बाग घणा हाथ पग मार । आ ठरी दुनिया री रीत ।

इणीज माथ सगलिया साग चरचा चाल ही री ही कन्हैयाचन्द दो डावडया रा ब्याव माडणा पडग्या । खडे सेजडा वेज । च्यार दिन । भोत साकडा टेम । पण मरत रा किन पग किन सिर । बया तो—हू लीक रो फकीर नी । पण लाक लाज रखण माह नाना मागो ता करणा ही पड । थागी भाग दौड

करन टीप-टाप करी । भानुमती रो बुणवो बणाय लीनो ।

टेम माथे जान आई । माडा रोपीज्या । बान बठाया । सामेळा तोरण, फेरा पाटा सगळा नेग चार हुया । जान री आव भगत करीजी । समधी रा ठण्डा मीठा बोल गुण्या । समठूणी करी । जान जुहारी करीजी । जान आपर ठेड टूरी । जद जा'र ज्यान में ज्यान आई । दूजे दिन जद टटाळी ता ठन ठन गोपाल । भाई भूरा-लगा पूरा । अडा तडा करनें जितो जोडयो गारा रो मस निन भ रीजग्या । पगरखी भडकाइ ता माटी नीसरी ।

अब लागा ने दि स-दे र जपावण री मालो । किणी न पईसा ता किणीज नै पईसा री बात । सगळी बाता री जाणड थापड कीनी । हिवडै म दबी टीस गीत री ओळ्यां नीसरी—

"समधी मिल्या उमदगिय–राखी म्हारी लाज
हरि हरि चोखी करी–सार्‌या म्हारा काज ।

तीजे दिन स्कूटी माथे स्कूल पूग्यो ता साथी मसळिया बाल्या—अब सुणावो मा ।'

हूं पहूतर देता थका कयो — काई सुणावा । सगळा काम मौज नोम सू पूरा ह्या । डावड्या नीवडी चढाय दी ।

'मास्टर सा'ब ! शिक्षा नियम प्रकाशन मांय शिक्षा विभाग आपरी रचना मगाई है । थांई नुवी नरोर रचना निपर्‍ी भेजा नी ।' इण वानी गुमसुम बठ्या हैडमास्टर सा'ब बोल्या ।

म्हार हिवडे म आनन्द उपजी—आ काई ! हूं ठेरयो इण बगत रीत माथ । दुनियादारी रा धंधा म अळभेड्यो । घोळ धप्प ! म्हानें की माचण नें टेम चाहीजै । इण टेम-वानी माथ-माड़ रो व्हायो । पण आल्त सू लाचार । क उठ्या—'अब मन्ड्यो दूजो ब्याव । सून माथ टीक नी ।' सगळा नेग चार करण खातर हूं गुदी नीची करनै फेरूं निरणे न लागग्यो ।

घासीराम गगाराम

अरविंद चूरवो

घासीराम जी माट मास्टर घणा मेहनती हा। गाढ री घनाग भणावता। आछी तयारी करता। आपर विषय रा जबरा पण्डित हता। आपरा पीरियड कदई नी छोडता। क्लास न ब धमक्षेत्र-कुरुक्षेत्र समझ नै टाबरा र ज्ञानरी अनाग सू भनभेडी लेवता। टाबरा री बतनी सुधारता। मामटा रनाग नागरण री रोशनी म बी खोड गाव म नगावता।

घासीराम जी न टाबरा म भगवान दीमतो। व सार बागबान री ज्यू म्सबून री बगीची र आ फूना न सवारता। जादू बा जिको सिर चढन बोल। विद्यार्थी आपर मूड मू कवता सा! आप पढावी जद रग घणो आव।

टाबरा न घासीराम जी अतरा चोखा लागता क जिकी क्लास म व जाव उठई टाबर वणा री इजाजत लेय न वा री क्लास बैठणा चाव। वा री लार नी छोड। सरला मनजी कवता 'घासीराम जी छोरा माथ काई जादू कर दियो ?'

लारल केई साला मू वा रा परीक्षा परिणाम सौ फी सद रहता आ रयो ना। विभाग आई साल वा न प्रशसा पत्र पुगावती।

घासीराम जी मास्टर साब लारल पनर बरसा स्यू इ गाव म हा। इ धरम भूमि म भूभता थका वणा री पनडा लडका आपर नानाण माय वेचय री भेंट राम गरण हुग्यो हा।

एक दिन घासीराम जी र बाना माय तळाव म स्पाडो करती टैम पाणी व डग्यो जिक सू वा र कान र परद माय बोजका हुयग्या। एकर वा री बाइ टाग म बाळा-नारू रा तीन कीडा ई जलमिया। एक बळा व गाव म परिवार न ई लाया। व आप तो चुनाव करावण गियाडा हा। लार मू वा री जाडायत अर ननिया छोरो कुव माथ पाणी भरवा गिया। ननिय र कुव हेठ रमती टैम पग म पिरड डक ठाक न हाटी परी। पण भगवान लाज रागी।

घासीराम जी रा पिता श्री बैं बारवी कलास म भणता जद ही रामशरण व्हैगा हा। ई घटना सू वारी मा री दिमागी सतुलन बिगडग्यौ हा। घासीराम जी इक्लौता लडका हा। शहर रा बासिंदा हा। मा गी सजा साद शहर म तवादळौ चावता।

एक गगाराम जी माट साव हा। व आखी उमर शहर म ही गाळ दीनी। आ म घासीराम जी सू उल्टा गुण हा। प्राईवेट प्रेक्टिस' करता। कोचिंग कानेजा म ही ज्ञान विक्रय करता। एकर गगाराम जी गळती स्यू तग्वी र लोभ माय पाच कोस छेडल गाव गिया परा। पण वा न एक परोपकारी डाक्टर साव मिल्या। अ डाकटर साव फर्जी प्रमाण पत्र देणो आपरौ फज मानता। आपरी 'फीस' लेयन अ डाक्टर साब गगाराम जी न अडौ 'राम बाण' प्रमाण पत्र दीधौ जिक म वा न ववासीर सू नक्सीर तक सार अगा रौ बीमार प्रमाणित कर दीनौ।

शहर म एक पद खाली व्हियौ। गगाराम जी अ'र घासीराम जी अर्जिया दीनी। गगाराम जी प्रमाण पत्र र रामबाण साथ विराज न शहर म वळ आया परा।

घासीराम जी आप रा प्रशसा पत्र बाच बाच न फेर बाच्या। वा री आख्या जळ जळी व्हैगी। पण ब गावणो मद री कमजोरी गिणता। □

विकलाग

माधव नागदा

'थारी बेटी सुख म पडेगा । जेमन्तवाल रा माल खायगा । बम्बाई री हुण्डी चुकेगा । दे दे सेठ लगडा न रुप्या दो रुप्या ।'

सेठ कुर्सी पे बठया बठया माइकल नजावणिया रो नाम रजिस्टर म चढाय रह्या था । भिखारी री गुहार सुण साम देख्यो ।

'बेटी रा बाप नट्ठ व्हे रिया है । कमाय न खायो कर । भीख मागता शरम कोनी आवे ?'

'सेठ थू भागमाळी है । थारला जनम म आच्छा करम कीदा है । खोटा करम तो म्हारा है । भगवान जनमताई एक टाग नी छीण लेतो तो म्हू भी आज थारी नाई कुरसी प बठया राज करतो ।'

सेठ भिखारी न ज्यादा मु डे लगावणो ठीक नी समझ्यो । वो गुजनक ल्यारा देखण जोग परचूणी ढूढण लागा । भिखारी आगे वटिया ।

'दे दे सेठ भगवान थारो भलो करेगा ।

ले ने जा ।

भिखारी हाथ फला ग नट गयो । पण अचाणचक हाथ लारे खीच लीन्यो जाणे आगे अगारा व्हे । कुरसी प बठ न 'राज करणिया री दो यू टागा गायब ही ।



म्हारा पाँचूलाल जी

श्रोमदत्त जोशी

घणी मुस्कल सूं म्हारी बदली इण सैर री ओल्ड नीची इस्कूल में हुई। भांत भांत री बानगी आळा गुरु लाग अठै बिराजै। सगळा आप आप री न्यारी पिछाण राखै, पण एक घणी बिसेसतावां रा धणी है जो म्हारो मन मोह लियो वे है सरी पांचू लाल जी मा। गोरो गिचाक मूंडो पाकोड़ा लाल टमाटर री ज्यूं, पाछै बाहड़ा अधपाथा लाम्बा लाम्बा केस, ज्यान दिन में बीस बार बाव छोटयाव बधा सूं जा उणा री बुसट री जेब में रेव चौबीस घणी। आंख्यां रा हीरा काचा भूरा रंग रा, मूंडा री मुळक आठू पर। मद्धा सफाचट रास लुगायां ज्यूं। पैन्ट अर बुसट रा पहनावा, बोलती टैम निनाट माथे तीन आडा सळ पड़ै।

आपरा नाम अनेक पण आपरी आतमा अर डील एक हीज है। आपने फिफतलाल कालीदास, चूलाल आद नामा उपनामा सूं भाई लाग बुलावै पण आप नाका सळ नी घाले। आप रा मूंडा री मुळक सूं दूजा ने भी मतै ही मुळकणा पड़ै। आपरी बातां केवण रा लजो रूयो है क सूणी लापसी राबाजी भी हमेंण डूक जाव।

हिसाब पाट पाई रो राखण री आछी टेव है। तिनखा मिलण रा दस दिना पैली अर दस दिना पछै ताई आपरा मीना भर रा बजट बणा लेसी। उणा में एक पईस्यो भी अठी उठी नी खरच। पूरो हिसाब बिठावता, चाहे उणा मे आठ दस कागज रा पाना खराब क्यूं नी हो जाव। इण मे थारो गांठ रो काई नी बिगाडै क्यूं क कागज पानड़ा छोरा री कापिया सूं फाट फाड़ मांग लेव अर पेन सिरकारी हीज हुव। हळदी लागी नी फिटकरी रंग चोखा आग्या। आप ही बताओ क या रा काई बिगड्यो? फोगट रा चन्नण घिस म्हारा नाना, तू ही लगा अर थारा घर वाळा ने भुला ना।

उणा रा हाजमो कदही कदेही बिगड़ जाव अर [illegible] नाव,

ट्ण वळ ओक्ळ होवण रो एक हीज कारण है क पराया माल माथ दस्या टूट जाण गुड माथ मारया। खावण टम आपरी सुद बुद भूल जाव क माल ता परायो है पण पेट तो आपणो हीज है। इण मू ही पट मार्थ पोट बाघ लेव पेट भगूता ज्यू। वा ही बात—क मूरख खाय मर क ऊचाय मर।

पाँचू लाल जी री तीन लोक मू मथुरा ही न्यारी है। थोथा चणा री ज्यान बाज घणा। आप सू थाडी सी बात छेड र देगत्या पछ आप रा मरफ स्टारटर टेप इस्यौ चालसी क सुणण वाळा न ऐस्परो क न अनासीन री गोळिया गाठ मू मगाणीज पडसी। आप री बाला इण इस्कूल म पली आळा हैडमास्टरा रा गुण-औगुण र ओळयू दाळयू चकरी ज्यू फिर। इण म्ह ओगणा रा ही वखाण बत्ती हुव। हाथा रा लाम्बा लाम्बा भाला दे दे र मूडा माथ हाथ फेर फेर बाता री बानगी पुरस। जिणा र ममत मिती नी लाग। बाता करता-करता आप हापू धापू ज्यू हो जाव जिण सू सुणण वाळा पूरा चेता मू मी सुण मक अर उणा रै आधी बात ही समझ म आव। बीच बीच म्हे कुदरती ब्रेक भी लाग जाव। कदेही कदेही म्हारै भी आधी बात ही समझ म्ह आव पण लियाज रा काचो हूँ इण मू म्हारे हा म हा मिला र गेंटकी न हिलाणी पडे। बोलण री टेम आपरा गला री जीमणा पसवाडे री नस म्हे रगत रो वहाव तज हो जावण सू फूल र भोगली ज्यू निवण लाग जाव।

कानीदास जी न आपरी इस्कूल रो घणा मोच फिकर है। बा कुरसी कठ गी। वा दरी कठ है? कागज रो दस्तो अबार ता ल्याया अर अबार हीज उपडग्यो! कारपेपर इतरा क्या म्हे चाहिजे? खानपीना री पत्तो इतरो महगो किकर आयो? आज फलाणा माटसाव छुट्टी पर है काई? इतरी जाँच पडताल करणो उणा र बवहार म्ह है कोई बूरी मानो तो मानो। म्हारा धके भी सकडू समस्यावा री पोट खोलण लाग्या—'काई हैडमाटसाव! म्हारी किलास र बाट माथे वारनिस तो करवा दा चाक हीज नी उघड? काई सा म्हारी किलास म्हे चढण वाळो पगतियो तो लगवा दयो, छोरा-छोरी चडता उतरता हिचल्या नी रेव एक आध पडग्यो ता फेर माथा फोडी हो जासी! काई हैडमाटसाव! डायरिया वायरिया सबला री देखा कि नी? एक काम तो हैडमास्साब म्हारी किलास र क न वाळी नाळी को तो करवा हीज दयो। रात दिना री मगज मारी खतम हुव परी आगी! म्हारी किलास म्हे दो दरिया कम पड दे दुआर नवकी करो आगी? ओ पखा रो हुक तो रेह ग्यो दिख? ओफिम म्हे रग तो करवा ल्यो! इण किवाड न ठीक नी कराओ काई? आपार इस्टोर रूम म्हे लाइट वाइट नी लगाओ काई! इ नल रो भी काई नी हो सक दिख? आ पाणी री टकी भी ठीक री हा सके काई हैडमाटसाव? आ जमवतसिंह तो कने ही डायरा न

नी भरे ।'

उणा री इसी बाता सुणता सुणता म्हारा कान पाक ग्या । उयारी जूबान थाडी ज्यादा हीज चाल कतरनी ज्यू । सबला आप आप रा काम म्ह मसत है न उधो रो दणो अर न माधू रो लणो । पण इण भाई रा पट म्ह काई कुरकरी चाले क आखो परधो रा साच कर । आपरा हवाल म्ह मसत नी रव । मू जद भी उणा री किलास री डली माय पग मलू नी अर उणा री जुबान चाली नी । राजा छुडावा जाऊँ अर नुवाज गळ पड जावै । उणा री सिकायता–सुझाया सू पाछो छुडातो पाछ पगा ही बावड जाऊँ । पण इण सू ही काम नी चाल । भाई री किलास म्ह टागडी भी तो कम हीज टिके । मेंबरी वाता वाता म्हारा दफ्तर म्ह ही आ जाव अर उठ ही बैठ र वाता रा ब्याळू करण ढूक जावे । उणा न टेम रो वि ञान नी रवै, जद पागती री निनाम रा माटसाब बूटा मारा, रोवण धावण, हावा हुली री आवाजा सुण र हेलो मारे जद जार म्हारो पिन्ड छूट । मू म्हारा अन्तस रा हिवड सू, बुलावण वाळा माटमाव न घणा घणा धनवाद देऊ ।

मू पांचू लाल जी न केई टेम समभावतो केऊँ हू— देखा माटसाब ! पराया दुख दुखलो नी होणा चाहिज । राज काज यू ही चालता रसी । आप तो आपरो काम करो अर मस्त रेवो । आप आप री काम आप-आप न सूझ । इण इस्कूल रा काम काज सबली विवस्था देखण खातिर सिरकार म्हने भेज्यो है इण रो सोच फिकर तो म्हन होणा चाहिजे । आप भी आप रो फिकर करो दूजा भल ही धड रा पीन्दा म जा पडो । साता बन जी ती म्हने वा री किलास रा पगतिया री खातिर एक बार भी जुबान नी हिलायी एक थ ह्रा जो धरती आकास एक कर दियो । थे साचा क हाथा री पाचू आगळिया बरोबर हुव की ? इण हीज भात सबला इग्यारा सायीडा भी आपरी ज्यान नी है। काई आप सू सवायो है तो काई आधो पण म्हने ता सबला न माग लेर चालणो है । म्हारी निजर म सबला सरीखा हो–कुण काका रो अर कुण बाबा रो ! जिण म जितरी छमता हुवली वा उतरा हीज काम करसी अणूथो नी कर सकेलो ।

भाईडो मुळक मुळक र म्हारी वाता न सुणता जा रिया ह म्हने यान लखा रियो है जाणं हिया म पाकी गाँठ बांध ता जा रियो है क अब परायी पचायती नी करणी है । मू मन ही मन घणो राजी हा रिया हू क्या कै अब म्हारो दिमाग फालतू चाटण नी आसी। □

ताजू खाँ

अमोलक च'द जागिड

गाँव म टीगरा सू ल'र यडा यूढा साणी इस्या विरला'ई लाध जका ताजू खाँ नैं नी जाण अर ताजू ग्वा सू कोई छानो नी क कुण आदमी क' काम कर ह अर उण रो के नाव है। मैं अेक स्कूली छोरो हूँ इ'न बि'न बाजार न फालतू नापतो फिरू। अेक दिन गोपाल टी स्टाल' पर ताजू खाँ न ठाठ सू वठ्या देख'र म'न घणा हुक आयो। इस्या बड डील डौळ वालो अर भात भतीली पासाक' म सज्यो धज्या माटयार वारू सहरा मे नी लाघ।

यू तो गाव रा लाग वीन बावळा बताव पणा वा री घरचा चाल जणा सवा पा'र नियड कानी। खास वात तो या है क' ताजू खा र काम न, वी र नित र जीवण व्यौवार न विरला'ई लख। कारण वो राजीना सुवार गोपाल टी स्टाल म आकर आपरी सागी सीट पर बठ जाव अर दिन छिपण र बाद मुळक्ती मस्ती मे उठ'र आपर घर न व्हीर हा जाव। वी वखत री वा री धीरज धारणी चाल जाणी बडत अधार री पूछ मरोड दी हाव अर वा विदक न वेग सू बगता हुव। गेल म की हलगल नी हुव। सा म न अचम्बा हाव क' लाग वी न बावळा कीकर बताव।

म'न मर दादाजी सू मालम हुया क ताजू खा रा वडका घणा ठाडा वीर अर महनती हा मा बिसाऊ ठिकाणा रा ठाकुर वान काल्याळी सू ल्या'र बिसाऊ वसाया। ताजू खा घणा सूदो। टावरपण म रेवड चरायो खेत म गध ज्यू खप्या। आपरी मनीत मजूरी री नक कमाई सू परिवार रा पट पाळया पण खेत र झीभट अर झगड सू मानसिक तणाव तणता'ई गियो। आखर लामी टेम ताणी उदासीनता अर उपक्षा री अबखाई वी न बावळौ ज्यू वणा दिया। आ सग घट नावा री जाणकारी मेर हिरद न हिला दियो अर मर भीतर सू सवदना रा अण थाग मरदिया मिलग उठया अर नणा सू नीर निरझर ज्यू भरण लागग्या।

गन री धीती बाता मेर माथ म उमूळिया जण धिरता मार लागा । सारी रात भर नींन मूं निरवाळा रया । दिनूग रो आळम पवत अंगड़ाई सू मी पर टूटता । पेर ताजू खाँ नं आजू नजीब मू न्हाण गी तायळ मनें आपूआप 'गापाल टी स्टॉल' पर ला पटक्या । म वा न स्टाल री सागी सीट पर विराजमान दग'र वा'र सामी नजीब मू पणी देर ताणी निरख्या ।

लाम कद काठी रा मागीडो मारवाड़ । भरवा डील । सिर पर बड़ा भारी साफा पाई पौन मापावा रा अेकठ सागीड़ा गमीड । वजन पांच किला दा सा ग्राम । गरदार न पर बिठाय । नामी धवळी नारी अर धवळी भूरी मूछ्या घाड निनाड अर मलयटी पहर पर चार चांद लगाव । दूर मू ऊभी हा'र दग तो अेव मलम्बाव टापू मू उभो रोय पड । वा री पागाव री बात आप वे वरो । स्यात गिणती करता करता गिणती गाट हा जावँ ता गळती म्हारी आपरी । म खुद गिणती रै चक्कर म गिरणी चक्कर खाग्या । वठ टिवा-छाटी बनियान रो सूणा लामी कमीज री फाटी बावा, जरमी रा लीरा ऊपर धारीदार बुसट बुसट र ऊपर वाट, वाट र ऊपर लामी गरम जरसी, जरमी र ऊपर जरमी, बी र ऊपर मजबूत माटी कमीज । वाह सा ! आ वाह ! आजू वाट अर वाट वाई ऊपर आवर वाट वाट वठ अत भी । नीच पाजामा अर पजाम ऊपर डबल धानी । पगा म गावड रा काठा जूत अर नीला लाल मटमळा माजा, वा र ऊपर फौजी ऊनी माटा माजा । मैं जाणगा पजगा वाजा । आपण बूत री बात वानी । लाग बावळ वेई व्य—गाभा गर दिया ।' म कयू अठ तो गाभा रा निवड वानी । द्रापदी र अणत चीर न भुण देख्या । अठ मापरत ऊभा ताजू खाँ र गाभा री चीर रो नावो नी लाध । चावा लाग जतन वरा सिर पीटण र अलावा और की पल्ल ना पड । जे आप गोजा दखो तो ठमाठम भरया रव सग्ग ड्राफट अर नोटा सू । नित लाखा रा लेरा जाता वर ।

चाला चाखा लाग खुसामद र साथ चाय नास्ता, पान, बीडी, सिगरटा रा लम्बर बाध्या राख, पण इसी पान वठ क कसाई रो पीसणा वकरिया खाज्या । पूजा पर हाथ नी धरण देव । सवदा रै गोरखधंध म आप आप रा भाग परखा अर सटट बाजार म आखर दड़ा लगाता रवा । टाटका पिलज्या जद ता गिलज्या । पण न पिटन जणा आपरा करम ठोक न रा ल । पाछ पछताव अरथ निकाड न रा गलती करा । पण ताजू खाँ री बाणी पर कद पाणी नी फिर सक ।

कदे कद वट्या वट्या आखता हो जाव अर तळी वळ उठ जणा आपरी गादी पर सू उठ र दो चार कदम उतावळ सू भर । वी वखत वा र चेहर पर आवळ बावळ अर तिलमिलाट रो मिल्यो जुल्यो भाव देखण जोग हाव । डाव हाथ म घाटा राख । हाँ गा, नगडिय धणी र घाट सू कम नी आव सवा । तीन

छतग्या री डाडी मय ताड्या अर दा चिटिया भर अेक लाठी । सगळा पुराणी पूरा सू तदड पदड अर क्स'र बाधियोडा उपर ताणी । फक्त आखर म छत्ता अर चिटिया री न्यारी यारी डाडया दिख अर लाठी मूठ म आव जितरी खाली । नीच मू भारी भरखम । ऊपर चूडी उतार होता जाव । अयाला घाटो हाथ म ले'र ताजू खा आम्व गाव म आपरा घाटो घुमाव ।

जेक बात खास और । म्हार गाँव म बावळा न टीगर दळ दर नो टिक्ण दय । भाठा, धूल और वचना री सूळ रो नाको नी, पण ताजू खाँ न फूल को नी आव । औठी रा घणो मान सनमान दरसाव । वडा बूढा तो वा न घणा पूचवान अर सत मान । जद ताजू खा मुदडी बाजार मा सू गुजर तद वडा वडा लोग आपरा काम छोड'र ऊभा हा जाव अर सलाम कर जाणी गाव रो धणी पध्यारयो होव । वा री चाल इसडी धीमी जाण जमी री अबखाई री पिछाण करता हुव । इसडा ह सा ताजू खा ! 

कागलावाद

त्रिलोक गोयल

राजनीति, साहित्य, समाज दशन जठी न्हालो बठी आज 'वादा' री बकवाद चाल री है, थीया साँच बूझो तो आँ वादा री बाढ म एक ही वाद नुवो नी है, जूना जमाना म आँ वादा रा खाली नाव होज नी धरयीजा हा, बाकी चिन्या फेर बदल रै सागे वाता सगली अ की अ ही ही क्यू के मिनख अर मिनख रा मायलो सरू सू या को यो ही है, थोडो घणो वारलो बदलाव क्यू विशेष अरथ न राखे। आधुनिक जुग मे कोई माथ्यो जठी मूडो कर्‌यो बठी एक वाद रो भण्डो लेर चाल पड्‌या। ऊँ असैदा गला प चालणिया चमचा, लरड्‌या न मूरखा री ही कुमी नी री, अ कठ पूगैला आ राम ही जाणे। आधल्या आँधरया नै गेला बतार कयये वैरे बावडी पडसी कुण जाणे।

तो बरसाती मीडका सा आ अणगिणत वादा म हूँ सिरे नाव कागलावाद ने मानू [illegible]! कागलावाद रा प्रवतक ऊँ रा नामी जामी माँ सुरसत रा लाडेसर काव्याचाय काग भुसुण्ड जी महाराज हा। ब आपरा इ कागलावाद ने काळा कागला सवार असयो अमर कर्‌यो क ओ महताऊ वाद रामायण काल सू आज ताी बरोबर बधतो जा रयो है, आपरा ऊजला आगोतर म आ अमरबेल आकास ताी पूगसी क पताल ताी जासी ई रो की अतो पतो नी है। जीया हाथी रा पग म सै रा पग बीया ही इ एक कागलावाद म बीजा सगलावाद आपू आप ही आ जावे है, ई कथन रा पुरता प्रमाण तो हूँ मोकला ही दे सकू हूँ पण लेख र लाँबो हो जाणे रे खतरे सू टळ र फकत थाडी सी बानग्या ही दिखार्‌यो हूँ।

हर समाज म कागलावाद रा असयो ऊँडा प्रभाव है क जणबा, परणबा, मरबा रा ही काई खाटा चाला, सड्‌या बूस्या, रूढिगत नासमभी रा अधविश्वासी समाज बिगाड़ू कामा ताी म लोभ ईंया पडे जाणे ऊँठ जूठ प कागला। सामाजिक सम्मलणा म दहेज दिखावा, मिरत्यु भाज, भेद-भाव मिटावा रा काव काव भापण

अर वसत पडया गाव गाव म आ कुरीत्या म कागला ज्यू भैना हार थाया सहयाग देणो कागलावाद रा हीज पोषण है, क्हणगत साथक हुव क घणा श्याणा कागलो भिष्टा म चूच डुवाय। किणी भी ममाज म अश्या श्याणा कागला री कुमी नी है।

साहित्य ता कागलावाद सू भरया पडया है। सरआत सस्कृत सू ही ल्यो— काक चेष्टा वको ध्यानम, स्वान निद्रा तथवच।

अल्पाहारी, ब्रह्मचारी, विद्यार्थी पचलक्षणम ॥

श्री गणेश ही कागला सू व्हियो है। टावरा न जा पढाआला ज ही सीखेला। कागला रा लक्खण सर साचाणी ही विद्या री अर्थी व्हैगी। मुडदा, ममाण, हाडक्या अर गलीचखाना सूगलवाडा सू ही कागला रो सूधा सम्बन्ध है बो का वा असर हडताला, ताडफाड, गुण्डागर्दी आवारा फटालपण छात्रा म वडगो। आपरा रामचरित मानम म गुसाई तुलसीदासजी खाली काग भुसुण्ड जी रो ही गुणगान नी करया है देवतावा रा राजा इन्दर रा सपूत जयत री कथा ही लिखी है जा कागला बण र सीताजी रे चरणा म चूच मारी अर करुणावतार राम बिना फर रे बाण सू ऊँ री आख ने गालक बणा दी, जी मे छेरला दो अर मणियो एक जठी न्हालणो हा आख रो हीरा वठी घूम जाव—बोलो अश्यी विशेषता और किणी जीव म है ? तुलमी रो ही बीजो उदाहरण है—

बठी सगुन मनावति माता, कब अइ है मेरे बाल कुसल घर कहहु काग फुरि बाता। दूध भात की दोनी दहा, सान चोच मढ हौ।

सूरा श्यामी लिख्यो— कागहि कहा कपूर चुगाय, स्वान न्हाय गग।

भज मन हरि विमुखन को सग ॥

काग रा भाग री बडाई करता कृष्ण भक्त मुसलमान कवि रसखान जी ही कागला वाद ने सीच्यो—

काग के भाग कहा कहिय, हरि हाथ सा ल गयो माखन राटी।

मुरधर री गीत गगा मा मीरा तो आपरा मीठा भजना म कागला न बोळा ही याद करयो—

कागा मब तन खाइया, चुन चुन खइयो माम।
दो नणा मत खावज, हरि दसन री आस ॥
काढ करेजो म धरू कौवा तू ले जाय।
जा देसा म्हारा पिव बसे, वाँ देखत तू खाय ॥

कागला बिना रससिद्ध कवि बिहारी री सतसई ही कीकर] पूरण व्हती। व लिख्यो—

दिन दस आदर पाइके, करल आप बखानु।

जब लगि काग सराध पख तब लगि तो सनमानु ॥
आदर दे दे बोलियति बायसु बलि की बरि।
मत कृपाराम जी ही पाछे क्यूं रहता वै ही कागला पर किरपा करी—
उपजावै अनुराग, कोयल मन हरखत करै।
कड़वा लागे काग, रसना रा गुण राजिया ॥
रहीम, कबीर, दादू, रैदास, पीपा बाई मत भगत कलम घिस्यूं कागला रा विड़द बखाण्या बिना न रह्या—कागा काको धन हरै, कोयल काको देत।
मीठे वचन सुनाई के जग अपना कर लेत ॥
पाछ वै की ब ही बाता घुमा फिरा र कही हा पण कागला सू अछूता न रह्या। निवाड़ ओहीज है क कोयल रा गीत गावा रा जमाना कदी का लद चुक्या। कलजुग मे कागला रा ही हरजस गाया जावला, आं का दिन पूरी तरा चढती प है, और तो और राम मारयां लुगाया तो न भीटयावे लाग्या महीना म चार दिना तो यी काम काज री ही न रहव।
राजस्थानी भाषा रा साहित्य म तो कागला पग पग प दीसेला—मेडी चढ र काग उडावा, छाजा प कागलो बोलबा सू भाई रा सांई र आबा रा सुगन बिचार। अै परम्परागत वर्णन ही नी देस री दसा बताता जका रा श्री कल्याण सिंह जी राजावत लिख्यो 'साच री तो झूपडी प कागला पड़े'। नागोर रा कवि मानदान कल्पित गायो 'कागला ही हंस री उडे उडाण सा'। जुद्ध रा दिना म मैं ही आपरा एक गीत म कागला री आरती उतारी—
आज मुलक री सीमा माथे कर कागला काव काव।
लड़बा न चालण रा बीना चांवल बांटो गांव गांव ॥
हिन्दी साहित्य रा स्तम्भ प्रसाद जी रा सुप्रसिद्ध गीत—
बीती विभावरी जागरी।
अम्बर पनघट म डुबा रही तारा घट उषा नागरी।
इ री परोडी करतां ठा नी कुण खुरापाती कागलो लिख्या—
बीती विभावरी जागरी
मिल का भोंपू लगा बोलन, बिस्कुट थाल लगे डालने
छप्पर पर बैठे कांव कांव करते हैं कितने काग री।
खरी अर खारी सांच कहवण म बेजोड बाबा नागार्जुन अकाळ पछ आयोडी बिरखा सू प्रकृति रा हरख परगट करता लिख्यो—
कौवे ने पाखें खुजलाई बहुत दिनों के बाद
पचतत्र, हितोपदेस आद री घणकरी कहाण्या म, लोक कथावा म कागला रो भरपेट रोचक जिक्र मिलेला—कागला रा मीठा सुरा री बडाई करता थका

मगीताचाय वतार चालाव लामड रा राटी ह्रपवो, अधभर्या घडा म काकरा हाक र कागला रो पाणी पीवो, अश्यी पचासा कहाण्या आज भी पब्लिक स्कूला म पढहाला टाबरा रा मनोरजन कर है। राजस्थानी लाकगीता रा ता कागलो पिराण हीज है—कामण्या घणा काड सू गाव—

उड उड र म्हारा काळा र कागला, जद म्हारा पिव जी घर आव'। बीजा लार प्रिय गीत है— कागळिया गहरो गहरा बाले नी र'। तीजो है 'थारी परणी उडावे काळा काग बादीला घर आजा।'

धरम कह्वो चावे दशन कागला रा शुभ दशण हर ठोड ! जूना जमाना म ता काग भुसुण्ड जी जश्या कागला ही रिसि मुनि ज्यू नानी अर पवित्तर हा पण आजकाल तो मिनरवा जूण म यार ही लाग कागला जश्या आचरण करस्या है— धरम करम रा नाव पै जा कागलवाडा चालरयो है बो किणी सू अजाण्या नी है। कोई भी धरम विमस प आगली उठाया विना सगला ही इ कादा कीच म भर्याडा है। ऊँ गलीचवाडे न उलीचणे सू आख्वा पयावरण प्रदूषित, दुर्गन्धित हा जावेलो— राम थारी गगा मली पजाव, आसाम, गुजरात, तमिल, कस्मीर एक ही आ नास पीटया कागला सू न बच्या।

राजनीति ? राजनीति तो कागलावाद रा घर है, खान है। एक बार बादशा अकबर भरे दरबार म पूछ्यो आगरे म कतरा कागला है ?' जणा कोई सू क गूढ प्रश्न रो उत्तर न दीरीज्यो ता बीरबल जो मूडे आई वा अलटप्पू सख्या चेप दी— दो लाख, दस हजार नो सो निनाणवें कागला है।' अश्या बावन तोला पाव रत्ती—बाटा का बूट रा मोल सा सही आकडा अर तुरता फुरत पडूत्तर सू स ही इचरज म रहगा। बादशा सलामत जाणगा क ओ माटो आ सरया यू ही चप दी है। व हुकम दियाक राज मे जतरा भी चिडीमार है सै ने कहो क आगरा रा सगळा कागला मरया जीवता जीया भी हो भेळा करो, कमती बेसी नीसरया तो बीरबल री गदन मार दी जावेली !' बीरबल मुलक्यो 'मालक जतरा बेसी नीसर आ जाणजो क व अठे पावणा आयोडा है, जतरा कमती नीसरे तो आ मानजा क अतरा दिसावर गयाडा है।' स री बोलती बद !

काळा काळा कागला पण कह्वो चावे क काइयापण आ अमोघ गुण हिया विना कोई सफल राजनीतिज्ञ हा ही न सके। अ राजनीतिक कागला तन मन सू काळा र गाभा सू ऊजला हुवे है जाणे मावस पूयू साथ, दीवा तले अँधारो, माय सू कागला र बार सू बुगला। एक ओखाण है क 'हसा म कागला' पण राजनीति म ग्रार आ कहणमत साव हा ऊधी होगी है—इ कागला री जमात म हस काई विरला ही लावे ता लाध। अ घरमखाऊ, मुडदाखाऊ, भिस्ट चमतलब ही काव काव कर र बापडी भूखी तिरसी जनता रा पिराण खाव, माथा खावे। कुडश्या

कै कागला ज्यूं पढणो, छल कपट, धूतता पूण आचरण करणो सीखणो चावे जणै तो आज कागला रा भेलो हार पल्ला नवा हर कारज र पांजा मे तरीको टीप टीप दिस । औ सगला काग परिवार आ राजनीतिया सू म्हाटो सुविधाडा है ।

पहली हर घर र बार बड पीपल या नीमडी होती तो टांण कागल्या म पड्या पड्या कागला मजे सू मीठी निंबोल्यां कुतरता, रांग राग उचारता र आया गया पै बीटां करता इब जदा सू वन महोत्सव अर वृक्षारोपण रा नौटंकी होवा लाग्या है रूखड़ा रा हरया रूखड़ा पै आरा चालरया है लाई कागला री जान म गिरह होगी, 'जायें तो जायें कहाँ ?' पण कागलावाद रा हिमायती आ न दुखी कीया देखता, व डागला डागला पै टी वी रा जे टीना लगा र कागला नै सोवण सिंहासण बणा दिया है । पोमर जी म एक बर एक हिप्पी सू मुलाकात होगी ऊ अगानुप मने एक फूठरो अनुभव हो। बाता ही बाता म वो मने आपरा खींचोडा चितराम दिखावा लाग्या जीया ब्याव री फाटुआ म और क्यू ही दरसाव आजो पण पोमम बीट प हो रहय । मनोमा बाना रो लक्ष्य होग हिरोदन रा पोज लेवा ही हुवं है कीया हो ऊ नरसिंह औतार रा हर चितराम म कागला री हीज परमुखता ही, कठे ई भैंस री पूठ प महनगा जीया बठयो कागला कठे ई गिलेरो न चिगदतो कागलो, कठेई उजाड रा ठूठ रूखड़ा री स सू ऊँची डाल प मच प मान्य माथे रखडा पवि ज्यू ताल भाव करतो कागलो, कठेई हुवा रे रुख लारे बादळा म तिरतो कागला तो कठेई बीजली क टेलीफून रा तारा प हीदो हीदता कागला री जात जीया रखवाग मिलनी प उस्तरो घिम कीया किणी चीज म चाव धिसतो कागलो । हूँ ऊ बडभागी कागला री मुद्राया री प्रससा करता कीया जीया आपरो घेडो छुनायो । लाम पाल मताल करया ही म्हारे मूढ मगज म आ बात न धठी क ओ अतरी दूर विदेस सू कागला रा चितराम लेबा न आपणा मुलक म ही क्यू आयो, अश्या प्रकृति पूजक मुस्किल सू ही मिल।

जतर मतर कामण करणिया रे ताई ही कागला घणा मेहताऊ है, कागला रे माध्यम सू मसाण सवे, मारक मत्रा रो प्रयोग करे, आतमावा रो बदळाव करे । करम फूटा कागला खुराफाती कागला मे ई ऊचा दरजा री नीची गाल्या रा जलमदाता ही कागला है—वेई औगाण ही आं सू सुशोभित है, पी न की मिस दिन म दो चार बर हरेक रा मूडा सू चावे रामनाम न नीसरे पण कागला रो नाँव तो नीसरे ही है । जे सरकार रा बस री बात हुवे तो भारत म एक कागिस्तान न्यारो ही बणा देणो चावे । सलीमा हाला ने भूल्या इ लेख री सदगति न व्है सके, ब अश्या अश्या कागलावादी गीत लिख्या क जग चावा होगा—'भूठ बोले कौवा काटे, काले कौवे से डरियो, म मैंके चली जाऊगी तुम देखते रहियो' । अब आप ही कहो कूड बोलणिया ने कागलो काटे जो कश्यी किताब मे लिख्यो है सलीमा

हाता री ई सूभ बूभ, अर मिट्ठी परड, अर नुवी क्पना री जतगी वडाई करी जावे कम है।

काळा काळा सयी किमन जी रा साळा, सूरदास रल काली कामरी चढत न दूजो रग, अ काळा कागला अथवा पक्का रगहाळा है क लक्स पीयस सनलाइट पचामा साबण रगड हाको टीनापोल म डवाळा दचो पण आ को रग हळको न पडे। आज रा जन जीवण जग जीवण री मगनी सफलता काळाधन, काळामन, काळा कारनामा अथात कागलापण न हीज है। म्हारी ईं अतरी कांव कांव रा अतरा हीज सार ह क आ बीसवी सदी र अन्त अर इक्कीसवीं सदी रे जलम रा सन्धि जुग कागलावाद रो हीज जुग ह जे आपन जमाना गल चाल र जिनगाणी म सफलता प्रापत करणी हुव प्रगति करणो चावो तो कागलावाद रा समथक वणा, आ रा गुणा न अपणाओ इ मे ही कल्याण है ईं मे ही उत्थान। □

शिक्षा रो मारजा जुग

सावर दइया

भारत रा प्रधानमन्त्री जद नुवी शिक्षा नीति लागू करण री बात करी तद म्हनै की नुवादो कानी लखाया। शिक्षा म आमूळ चूळ बदळाव री बाता बरसा सू चाल पण जोग री बात कै आज ताइ मूळ अर चूळ रा सुरग्नोज ई कोनी लाध्या। काइं ठा लाड मवाल कुण सो जाळ गूथग्यो क आछा आछा विद्वान बरसा री उछळ कूद पछ ई बी जाळ सू मुगत नी हुय सकया।

नुवी शिक्षा नीति लागू करण आळा न म्है म्हार जुग री शिक्षा सम्बन्धी केई बाता बतावणी चावू बदाच की काम री बाता हाथ लाग। जून बगत री भूला भळ नी हुव।

म्हार जमानै मे मास्टर कोनी हुवता। बी बगत मारजा हुया करता। आपर देवण खातर म्हैं बान गुरूजी कया करता। हर अेक मारजा रो आपरो न्यारो रंगढंगो। न्यारो ठसको ठरको। सगा री आपो आप री पोसवाळ। म्हार जुग र मारजाया रा काम तो उल्लखण जोग है ई, उणा रा नाव ई शिला लेखा री शोभा वधावण जोगा ई समझो—भाडया मारजा, लबरिया मारजा, छी छी मारजा पछिया मारजा, लस मारजा रोवणिया मारजा, निगलिया मारजा, भैसिया मारजा, घेटिया मारजा । पूरी फेहरिस्त लिखण नै बठू तो विष्णु सहस्र-नाम दा. अेक नुवो 'मारजा सहस्र नामो' रण सकै।

म्है मग सू पली रोवणिया मारजा री पोसवाळ गयो। उणा री भणावण गत देखता म्हैं अज ताईं आ कोनी समझ सक्यो क उणा रो नाव रोवणिया मारजा क्यू हो ? ब तो म्हा सगा न दिन भर रोवाया करता। कूट कूट र मूज कर न्हाखता। किणी पहाड मे जे अेक गळती हुवती तो मुट्ठी झाल र पूरा गिण र पाच ठोला मारता। उणा र ठोला रो ई पुण्य प्रताप है कै म्है छोटो मोटी गुणा अज ताइ जबानी कर सकू। नियाया व तीन गळत्या रा पन्द्रह ठोला। तीन पना पन्द्रह। गुणा

पुग्ना हुयगी । गणित र दूज सवालां मे अेक मण रो लक्डो, बीन रत्ती-रत्ती रोज खाव अेक मक्डो बोलो, कित्त दिना म खासी पूरो लक्डो ! अडा सवाल ना ता वा दिना म्हार भेज मे वठया अर ना अब वठ । वी मक्ड री हाजमा शक्ति अर दाता री मजबूती ई शोध खोज रो विषय है । इण र अलावा आ खोज भी जरूरी है क वा दिना कुण कुण सी कम्पनिया 'पचनाल' अर 'वज्रदती' वणाया बेच्या करती ।

रोवणिया मारजा म्हान जित्ता रोवाया, जे वा आसुवा न भेळा करया हुवता तो अेक छोटो मोटो समदर वण जावतो । उणा र मुक्का अर लाता सू म्हा रा जाधिया आला हो जावता । म्हैं धूजता रवता अर व आपरी मूछा फडकावता बोलता—क्सिो'क मजो आयो वेटा !

रोवणिया मारजा र मज री महिमा ई न्यारी ही । वा दिना री याद आवै तो अज ई रू खडा हुव । म्हे दाव सू कह सकू क नुवी शिक्षा मे अडी रोमाचक वाता री कोई गुजाइश ई कोनी !

भैंसिया मारजा री पासवाळ मे मुक्का लात ठोला थप्पड कोनी हा । व दण्ड री दिशा मे नित नुवा प्रयोग करता । उणा री आग्या अर मूछा देख र चम्वल घाटी रा वेताज वादशाह याद आद आव । व म्हान वुचकार र आपर कन बुलावता—आव र लाडसर ! पछ हाथ भालता । हाथ आपर हाथ म लेय'र जोर सू पीचता । म्हारो जी निकळू निकळू हुवतो अर व मुळक वो करता । इन म्हारी आख्या सू आसू भरता अर विन सू अ मीठा बोल सुणीजता—क्या अब ठा पडी नी !

कदई कदई सागीटी ठा घालण खातर आगळया बिच्च पेंसिल दाब र पछ हाथ पीचता । व म्हान मुर्गो बणावता । कुर्सी वणावता । हवाई जहाज वणावता । ओ तो म्हार बडेरा रो पुन ई समझो क म्हे अज ताई मिनखा जूण म हू । नीतर काई ठा कद रो ई मुर्गो का कुर्सी वणग्यो हुवतो ।

वी जमान र मारजावा रो अेक ई मूळ मत्र हो—चाटी कर घम घम विद्या आव धम धम ! ई मत्र री घर गळी तकात मे इत्ती पठ ही क घरा जाय र मारजा री चुगली करण री हिम्मत ई कोनी हुवती । जे कद ई आ भूल करता ता वात पूरी हुया पैली ज तडाक देणी थाप रो प्रसाद मिलतो । मूळ पोसवाळ म अर व्याज घरा । व्याज र डर सू चुसकारा ई कोनी करता ।

घेटिया मारजा आपर चेला न नीच कुना गधा बिना बुलावता ई कोनी । म्हारी गळनी हुवती तो व दोलडा विशेषण वापरता । कवण री जरूरत कोनी क अ विशेषण मम्म चच्च सू शुरू हुवता । मूड म हुया व कवता—मारजा री गाळ लाडू रा थाळ ! जित्त पासवाळ न छूटती अ लाडू थाल भर भर खावण न मिलता ।

म्हनै आज अचम्भो हुवै कै अंग्रेजा र जुल्म री कहाणी लिखणिया इतिहासकार ठेठ जूनै जुग नै अन्धकार जुग अर पाखाण जुग री बाना तो गाढ हुसियारी सागै करी, पण गुरु महात्मा गुरु महेश्वरा रै मार जा' अर टावरा रै 'मार-खा' जुग बावत अेक सबद ई क्यू कोनी लिख्यौ ?

म्हारै अेक भायल इण रा उथळा दिया तो समझणी म ई हो पण म्हन साचो लागै । इण कयो-आ लागो ग जोंधिया तो आगा सू ई उत्ता गीला हुयोडा है । जे काई आपा जिगो पोटो लिखण री कोसिस कर ता पन री निव ठम जावै । गैर ।

देस आजाद हुयो । देसी रजवाडा दा ज मारजावा री पावाळा रो मगरायो हुयग्यो । केई लूठा राजा महाराजा अम अेल अे का अेम पी बण र आपरी सत्ता भूख पूरी करण लाग्या ठीक बियाई ई कोई मारजा बुगला भगत बण र शिक्षा री नुंवी दुकाना खोल र बठग्या । इण दुक मारजावा म आ अकल न आपरी । यायी पणगागर तो आपर जमान रा गीत गा गा र नव जमान न रो गे र गगावासी हुयग्या ।

बात रो निचोड निकाळा ता आ बात साम आवै क मारजा जुग म मार' माथ अणूता ई जोर हा । ठण्ड दिमाग सू साचा गो परतख लखावै र हाल आपा न मार सू मुगती मिनी कोनी । मार रा रूप ता बदळग्या जिका बदळग्या ई मार चौतरफी त्यारी हुयगी । मारजा ना चवड धाड मारता, अब मारणिया अदीठ रव । धरती माथ रवणिया न आसमान सू मारणिया मारजा पनपग्या । सास लेवता ई डर लाग । काई ठा अ मारता कद काई पुरस देव ! □

ईरस्या

छाजू लाल जांगिड

दूसर मिनख री उन्नति रा परणाम रूप'र जो मिनख र काळजा माय जळन रो बीज उग जद ईरस्या रो जनम हुव। मिनख री कमजोरी रो अेक खास नमूनो ईरस्या है। अणादि काल स मिनख र हिरद र माय ईरस्या री आगी भभकती रहैवती आई है। राजा दसरथ जद राम रा तिलक करण लाग्या जद मथरा री काळी करतूत स कैकेयी र काळज म ईरस्या रो भिड़काव हुयो जिर कारण राम न बनवासी बणनू पडयो। नाभाग राजा जद अम्बरीश रो राज तिलक करण लाग्या जद राणी सुकेशी कटारी माय कर पछाड खायगी।

कौरवा र माय ईरस्या चढगी जद बापडा पाण्डवा न सूई री नाक बराबर जमी नी मिली। बान एकान्त वास म रहणू पडयो। विद्या निधान होय कर राजा भोज जद उज्जन नगरी र माय प्रवेश करयो तो मुंज देव राजा र हिरद म जळन हुई जिर कारण जल्लादा नै राजा भोज र मारण हाळो हुकम हुयो। उतानपाद राजा री राणी र काळज म इरस्या बणी जद ध्रुव न अळगाव मिल्यो।

अेक राजा रो परताप दूसरो राजा सहण नी कर सक तो वीर सेना री मारया करण लाग ज्याव। विध्वंस र कारण सिरजणहार री रचेडी माया रा विनाश हो ज्याव। बादळा री घटाटोप म जद मेघ गरजना कर जद सिंह जोर स गरजना कर। बो जगळ रो राजा या बात सोच—मेर स ठाडा राजा कुण है जो उतरी ठाडी गरजना कर। ई जमाना र माय एक देश रो विकास दूसरा देश न नी सुहाव। विकास री ईरस्या र कारण दूसर देश पर परमाणु बम गेरण री बात सोच।

इरस्या रो दूसरो नाम डाह बोल्यो ज्याव। जद ईरस्या रो जलम हुव जद मिनख र काळज म दूसर मिनख र विनाश री बात सोचीजे। बोरा सा मिनख पराया सुख दुबळा हुव। व आप कमजोर हुव। जीवण म आग बढवा हाळी बात बा र मन की नी हुव। व दूसरा रो सुख देख र पतळा हुव।

मेन मे खिलाड्या री ईरस्या रा रूप नीठे घाट निग। एक धावक जद आगे निकळ ज्याव जद दूसरो वीरी टांग पकड लेव। फुटबाल रा मेल म एक खिलाडी दूसर खिलाडी र अटगी लगा देव।

ई जमाना र माय ईरस्या रा बिकराळ रूप देखण म आव। नेता न नेता, भाई नै भाई, सत्ताधारी न सत्ताधारी, विद्यार्थी न विद्यार्थी धरमाचारी न धरमाचारी गरीब न अमीर नी सुहाव। ई ईरस्या र कारण कुरसी री खातर खींचाताणी हुव।

ईरस्या मिनख री हिरद री गदगी रो नमूनो है। ईरस्या रामणिया मिनख भी सुख स नी जी सक। दूसरै मिनख न मात दण सारू हजार बात सोचणी पड। जद वीर काळा कारनामा री पोल खुल ज्याव जद समाज र माय वीरी बदज्जती हुज्याव। जद ईरस्या रा परवश मिनख म हो ज्याव ता मिनख क मान रो हरण हुज्याव। ईरस्या र कारण मिनख आपरी प्रेमिका र कारण आपरी धमपत्नी रो भी खून कर देव। ईरस्या अपण आप भी उपज है अर दूसर मिनख र लगाण सिखाण सै भी पदा हुव। खुद रो विवेक नी हुव वी आदमी पर दूसरा रा परभाव जद ी हुव।

आदमी री उन्नति र खातर प्रतिस्पधा रा रास्तो धारयो मान्यो ज्याव। उन्नति री होड मे दूसर सै आग निकळणू चाहिज्य। होड र तरीके मै आग बढणा चाहिज्य।

ईरस्या रो अन्त करण सारू मिनख मिनख र माय प्रेम हुवणा चाहिज्य। सहणशीलता राखणी चाहिज्य। दूसरा री उन्नति देखर हुलसणू चाहिज्ये। एक मिनख न दूसरा मिनख रो मददगार हुणा चाहिज्ये। कपडा न जिया कीडो खा ज्याव बया आदमी न या ईरस्या खा ज्याव। ईरस्या र कारण आदमी रो पतन हो ज्याव। ईरस्या री अगनी म आदमी भसम ज्याव। □

पिणघट

सोहनलाल प्रजापति

गांवा म पिणघट रो घणा महत्त्व है। सरा मे पाणी ल्याणन घरऊ बार का जाणू पड नी। टूटचा घर घर लागडी है। पण गावा मे तालाब ऊँ कुवैं बाव डचा ऊँ अर सावजनिक टूटचा ऊँ घडा भर भर'र पाणी ल्याणा पड। पिणघट गावां मे एक घणा महताऊ स्थान है। पाणी ल्याणू गाव र जीवन रो एक महताऊ काम है। जक गाँव म मीठ पाणी री व्यवस्था नी हुव या पाणी ल्याणो दोरी हुव बी गाव म कोई आपरी बेटी ब्याणा को चावनी। गावा म पाणी ल्याण रो काम लुगाया कर। पाणी ल्याण वास्ते लुगाया न घणो कष्ट सणो पड। पाणी 'जीवन' है। इ बिना काम को चालनी। कई कई ठोडा कोसा ऊँ पाणी ल्याणू पड। ईयान्तर ठोडा सिर घडिये ऊ ल्यायेड पाणी न जीवण ऊँ प्यारा राखणू पड। घी दूध मिल ज्याय पण पाणी को मिलनी ?

कई जग्या पाणी र वास्त लुगाया न घणा कष्ट सणो पड। पली विरला हुता इ आदमी हळोतियो करण वास्त खेता म चल्या जाव। कई दिना ताई खेता म ही रव। कुओ व द हुज्याय—कुओ कुण जोत ? टाबर टोळी सगळा काम लाग ज्याय। खेत गाँव ऊँ दूर हुव। दिन उगताई लुगाया भातो लेर खेत जाव। आखे दिन खेत मे सूड अलसाठ कर। आथण रा घर धिराणी सिर पर खारियो खाक म छोरो अर हाथ म टागडिये री जेवडी पकड्या खा ती खा ती घर आव। वा खारियो उतार'र पलीपोत पळीण्ड म जाव। घडा सगळा खाली। छोरो पाणी पाणी कर आप तीस्या मर। एक घड म थोडा पाणी छाड र गई ही। उपर परण्डियो दे र गई ही पण लार ऊँ बकरट्या पीगी। छोरे न रोवतो छोड'र घडो अर डोल सरी ले'र कुव पर जाव। साठी र कुव मे ऊँ मुडक्या मुडक्या डोल खींच। घणो दोरो घडो भरीज। भूण री चर् र चर र री उवाज सुण'र एक डोकरी रखाण्डो मगनियो ले र भागी जाव 'बीनणी डोल खोनी मत। एक मगलिया म्हारो ही

भरी। मगळा इट्ठातियाँ करण र त्या गया। राय बणाण । ही पारा यानो ? हू ता उटीव ही क कोई आव ?'

बीनणी आप तीस्या भर, द्यारी गुवाड म गुडालथा चालता चालता राव, टागड़ियो बाग्ळ म अरडाव पण गाव रो मट्याग वगाण जाग हुर। गाव म अपणायत हुय। बीनणी मुडक्या मुडक्या टाल नीच'र डावरी रो मगनिया भग र पलो ऊँ'ावे। डावरी पण धीम धीम बरती ताल'र राजी हुय र साच म'र हू आशीष दती जावँ, 'जुग-जुग जीओ। सात बेटा री मा हुओ। धणी री सुग देवो।

सायारण दिना पाणी न्याण वास्त लुगायाँ रा भूनग पिणघट पर पुग। यारी न्यारी जात्या रा यारा न्यारा भूलरा। पिणघट पर भू-प्रटपा न आजादी ऊँ वाता करण रो मौका मिल। म लुगायाँ गाग ऊँ पाणी ल्याण न पिणघट जावँ। रग बिरगी वेन भूषा म लुगायाँ रा भूनरा देखण जाग अर बगाण जाग हुव। पिणघट पर लुगायाँ पीर-सासर री, गण गाठरी, कपड लत्त री, अडौस पडौस री सुल-दु ल री आच्छी भूण्डी गुन र बाता कर। घर रा भेद पिणघट पर खुल। सासुआ र सुभाव री समीक्षा पिणघट पर हुव। नूवी बीनणया नणदा र करड सूभाव री चचा पिणघट पर कर। लडाई झगड, इस्क प्रेम री रामायण पिणघट पर खुल।

लुगायाँ र धीरज अर विरोध री परीक्षा पिणघट पर ही हुव। एक लुगाई थापर टावर म घर रोवता छोड'रआई है। बेगऊँ वगी घडो भर'र घर जाणू चाव। वारी आयाँ बिना ही स ऊँ पेनी घडो भरणा चावँ। आ वात दूसरी लुगाया कियाँ मण कर ? आपरा इधकार छोडणा कुण चाव ? इ हाडा होड म कदई कदई पिणघट पर जग मच जाव। घडा ऊँ घडा टकराण ऊँ घडा री ठीकरयाँ उछळ। घडा फूटणा तो साधारण बात ह। कणई कणई सिर फूटण री नौबत आ ज्याय। पिणघट पर लुगायाँ रा लडाई झगडो देखण अर सुणण जाग हुव है। लडाइ-झगड म स पलमा चोड आ जाव। पीन्या तक बुरै कारनामा रो चिटठो सुणण जाग हुव है। लुगाया रा पाणा मण्ड ज्याय है। पिणघट री लुगायाँ री लडाई महाभारत ऊँ कम को हुवनी। महाभारत र जुध हू पली श्री कृष्ण भगवान कौरवाँ पाडवा न समभाण री चेप्टा ता करी ही। पण पिणघट री लडाई म बीच बचाव अर समझाण-बुभाण री चेप्टा करण री हिम्मत कोई को करै नी। म बळती आग म पूळा नाख'र तमाशा देखणू चाव। पुराण जमान म लुगाया भूड वडरा रो काण कायदो राख्या करती। पण आज काल भूडा वडरा बीनण्याँ रा काण कायदा राख ह। लडाई झगडा हुताई खिसकता दीख। लुगायाँ गाळ्या टिक्या पछ थक जणा ही रुक है। शरम आळी अर घर रा र आक्स ऊँ टरण आळी लुगाया बगी हौज मदान छोड'र भाजती दीस।

पिणघट पर समाज रा कई रीति रिवाज सम्पन्न हुवै। मळा खळा पिणघट पर भरीज। मरया पछ श्रद्धांजलि पिणघट पर ही दिरीज। जळवा पूजण रा एक महताऊ रिवाज है। पिणघट पर ही जळवा पूजीज। जकी लुगाई रै गीगला हुव वा नाम करण सस्कार र थोड दिना पछ, जच्चा बण'र छोटो सो घडो सिर पर ऊच र सायण्या साग गाज बाज ऊँ जळवा पूजण वास्ते पिणघट पर जाव। जच्चा राणी नूवा कपडा पर र होळ हाळ बीच म चाल। जेड छडे दूसरी लुगायाँ गीत गावती चाल। गावा म आ रिवाज है क जच्चा जळवा पूजण र पछे ही घर रा दूजो काम करणू सरू कर।

बूढ बडेरे र मरण र बाद बारवें दिन बीन पिणघट पर श्रद्धान्जलि दिरीज। बारवें दिन औसर हुव। औसर मे मगळा र जीमण र बाद कोठयार बन्द कर र भाई बन्धु बटा पोता सगा सम्ब धी मिल'र कुव पर जाय। सगळा मिल'र कुव ऊँ घडस खीच अर मृतात्मा न श्रद्धान्जलि देव। गणगौर रो त्योहार मनाण र बाद छोरया मिल र गणगोर न कुव म धमकावे।

नूवी बीनणी मुकळावा लर आव। नूवी बीनणी न साग ले र नणन्दा पिणघट पाणी ल्याण न जाणा एक महताऊ काम समझ। नूवी बीनणी र आवता ही बास गुवाडी री छोरया घेरा घालणा सरू कर दय। नणन्दा बीनणी ऊँ पाणी ल्याण पिणघट पर चालण री मनुहार कर। नूवी बीनणी ई मिस बार निकळणू चाव। नूवी बीनणी आपरा कुगचिया साल र मात्या जडी भालरदार पळपळाट करती नूवी ईंडूणी निकाळ। मुकळाव म दूसरी चीजा र साथे साथे नूवी बणायडी इडूणी जरूर ल्याव। इडूणी एक नही, भात भात री कई इडूण्या ल्याव। नितरा नूवी इडूणी ले र पाणी ल्यावण न जाव। मात्यारी झालरदार बणडी इडूणी पर छोटा सा घडा सिर पर ले'र जद नूवी बीनणी नणदा र झूलर म चाल ता सुरग री अपसरा ही पाणी भर। झूलर रबीच म नूवी बीनणी र सिर र सार लाल ताई मनारी अर मात्या जडी झालर पळपळाट कर। झालर र नीच छोटा छाटा रग बिरगा फूदा हालता घणा चोखा लाग। ईडूणी री पळपळाट करती झालर न रा ध्यान खीच लेय। इडूणी र पळक ऊँ ठा पड जाय क आ मुकळाव आयडी नूवी बीनणी है। इयालर मौक कई छला बिन्या काम ही रंडिया हाथ म ल र पिणघट र आस पास घूमण रो नाटक कर। ज तळाव हुवै ता तळाव री पाळ पर छरां री जुगळी भूनर न निरखण वास्ते जरूर पूग आव।

कुव र पिणघट री बात यारी ही हुव है। कई कई गाँव म कुव री पाट [redacted] घडा भरणा पड है। बारिया इयारर मौत न अडीकता रव। नूवी बीनणी रा घडा भर बारिया पना भर। जदम कुव म पाछा उमार र भरडो घडा उठा र मारा मरतो, मू फेर र ज्यो नूवा बीनणी र सिर पर ऊचा दव। नणन्दा रा घडा

आधा रै जावै। नणत्ता डूगर चढण न-अडीक। जन बीनणी घडो लियां उबी रवे। इयालर मौके पर जद कोई जोध-जुवान बीनणी दा घड टयाव ता और ही देखण जोग बात हुवे। एक घडो बा आप ऊँच लव। दूसरा घडा ऊँचाणा एक चुनौती रा रूप हुवै। घड महित ऊबी बीनणी र घड पर दूसरा घडो ऊँचाणा मड। दूसरा घडो ऊँचाणा आमान रा हुवनी। जाध-जुवान बीनणी एक घडो ऊँच'र उबी रवे। दूसरो घडो पहल घड पर रखवाण वास्त आपर देवर खानी इशारा कर। देवर अगर कमजोर हुव तो बीरी हालत हारड जोघा मी हुज्याव। अगर तगडो जुवान हुव तो एक हाथ ऊँ घडो उठा र भाजाई र मिर पर ऊँचे ड घड पर भट धर दे। देवर दो घड जाण र ज्योरा ऊँचाव ताकि भाभी री कमर लचक। इयालर मौके भाभी देवर न खरी खोटी सुणण ऊँ को चुक नी। दो घड ले'र कमर लचकाती जावती जोध जुवान बीनणी पर सगळा री निजरा टिकणी स्वाभाविक ही है। बीनणी दो घड ले र घर पूग। जठजी न दख र मू फेर र ऊभी रव। जठजी लपक र ऊपर रो घडा उतार। कणई कणई ऊपरलो घडो उतारण वास्त घर कोई नी हुवनी। बीनणी अठीन उठीनै देख। टिचकारया दव। पण कोई का आवनी। बीनणी आपरा दानू हाथ ऊपर कर। ऊपरल घड न टटोळ। आगळया पर घड न ठरा'र सावधानी ऊँ उतार'र डोळी पर मेल देव। पछ दूसरा घडो उतार।

पिणघट मेळरी जग्या हुव। दिन भर मेळो लाग्येडो रवे। त्याहारा रा मेळा पिणघट पर ही लाग। साधण तीज, भादूड री तीज, गिणगोर, भलभूलणी ग्यारस, रा मेळा पिणघट पर ही हुया कर। सावण तीज अर गिणगौर रे मळ म पिणघट पर प्रेम रस रमीला गीत सुणताइ प्रेमी आडा र दिला र सागर मे प्रेम री हिलोरा उछाळा मारण लाग। इ मौके छारया छापरया रा गीत न्यारा हुव। जुवान लुगाया रा गीत न्यारा हुव। न्यार न्यार भूलरा म भात भात रा गीत आस पास र वातावरण म मस्ती अर सिणगार रस भर देव। न्यारी न्यारी जाति री लुगाया री गीता री राग, न्यारी न्यारी हुव। लोक गीता री धुन जाति री पहचाण हुव। आ परपरा आप आप री सस्कृति री धरोहर है।

कई कई ठोडा सकरात (मकर सक्रान्ति) र दिन पिणघट पर लुगाया रो मेळा मड। न्यार न्यार मोहल्ल री बीनण्या आप आपरी सासुआ न साग ल र गीत गाती पिणघट पर जाव। पिणघट पर बीनण्या आप आप री सासुआ न नूवा बस (वस्त्र) पराव। इ दिन बूढी वडेर्‌या री पूछ हुव। धनवान लागा र तबक म आ रिवाज घणा है।

'पिणघट' नाम घणा प्यारा है। पिणघट रा सम्ब ध पाणी ऊ है। पाणी ही 'जीवन' है। जीवन' जठ मिल बी रा महत्त्व क्या का हुवनी ? □

मिनख रो वलतो समै

नानूराम सस्कर्ता

ससार रा परिवतनसील प्रजापत सम है। इय नै लोग काळ, सम, दिनमान, विरिया पुठ, जुग जमाना, वखत जिसा घणा नावा सू जाणै पचाण अर बतळाव। या चालतो चाको तथा अजली रा नीर जूर काळ कहीज । इय री छावली छटा जोरा सारा दौडती भाजती ऊपड। वदळत वखत साग लोगा री हरेक चीज रो रग ढग वदळ ज्याव सम र साथ धारा री जगा ड'री अर डरया री जगा लूठा धोरा नजर आव। दरियावा री जगा मदान बण अर नदया र लाप ताल लराव। जकी जगा कदेही गघ्घर नदी बैंवती उव जगा सफा सूका थजड वजरी रणवा सू वोढोज्योडो डाव देखीज्या तथा हमै वो खेतर गळे राज स्थान नहर सू ल लारयो है। सम एक सो नही जाव, भारी फोर यदळ कर जद ही तो कवणा पडै के सम वडो बळवान।

मिनख रा दिनमान सम र साथ चाल, बदळता हाल कदी अेक सो नी वीत। इय जगत म जलम्या है उय न सुख ही मिलसी अर दु ग ही भागणो हासी। जमार रा मग ग्वारा मीठा फल वरावर ग्वाणा पडसी। जे काई चावै के मन मदीव सुख ही सुग मिल अर दु ख दाय कदी नी भागणा पड ता उवरी आ मनसा कदमराळ पूरी हाय नही । सदीना टिक्या सुग मिलणो ता इण ससार म डाढो दारा नहा जावक असम्भव कारो ह। जलम र नार मौत, सजाग लग विजाग, जीत पाछ हार सुग तथा दु ग, फूल म काटा, सम्पनपणा विपनपणा अर सफ लता नार असफलता समार री इधका वधकी वताई है। अठ ब्याह ही हय अर अठ मौत ही। दक न्नि दूहा वण बाराती, चहुँ दिस घुर निसाण दय न्नि जाय जगत विच डेरा, काया जळे मसाण, मर न्नि हुव न अेक समान।' राग, राज घराणर र अठा राग। जि नाच गाण हुव बठ कूक कीम गय। अमीरा रा ठाठ है गरीबा रा पाट है चढ़ाव उतार, दासन-दुस्मण, मनी अर कमी दुनिया

म दानरा पागा रा यागा रैंज । मायाा-माया पावणी है। न याइ यूर न वायर गैंग राम राम र बदलन पास हव । म्हि दगा पीढा ढाळर नी वठ । जे कांई मिनग धायें के म्हारा मारा जमारी अेव ही आणद धार म बीत—या उव री मोटी भूल हैं । जगती एव तमासा जाणा । पलव म नी अर पळव म कंई । वदे गानी गडब माथ गूना मडतू रगडणा वद निवार र पळग सुग साथ पाढा । वद भूगडा मिलें नी, वदे मीरो पुडी भावें नहीं । वद लीर पनखा वदे सूवा टुवडा । वदे फाटया पुराणा चीगड़ा पळेटणा, वद मुहणी टरीकाटन रा वपडा परा नहीं, पाछा धगावा । वद गुध्यारी ग्यान गाढ़ी वाता गुणा वद दारू लारिया री गदी गाळया गुणा । वदे मीठी सितार री गूज रा रस बदे लारी हाहावार री मस । वद लाणा छडछडीना जुवान वदे जूजळारा छाण्यामा सा मूढा, सळ भरियाडा मड़ा सरीर । वद चेंवरी री नळ-पळ वद जिलारी आग रा अडाळ जाग । वठ ही मगळ गीत गीरा, वठ ही रामनाम सत्त वाला । रिमी विसी वात गिणावा । दुनिया री दोलडी दसा चाल । इय हालत माथ आपणा निजू दिन अेवसा नी बीतता दस'र चुप रेंवणा ही चाखो है । वारी चिन्ता वाई वाम री ? सँग याता भगवान री मरजी मुजब चाल । वीरी ही जार लट नहीं । मोटा मोटा राजा-महाराजावा, सत म्हता अर रिसि-मुन्या रा दिन ही सदीव सारीसा नी बीत्या तो मामूली मिनग विस वाग री मूठी हव । सीता, सावतरी अर दमयति जडी देव्या तथा हरिश्चन्द्र मोरध्वज, रामचन्द्र जिसा मोवळा म्हापुरसा री जिनडया ही वगत री विपत्ता म घणी भूली ह ता साधारण लागा री बिसात ही विसी । इय वास्तै आदमी न आपतकाल म वदे ही निरास नी हावणो चाय । दिनमान सुख-दु ख रा चावा है । चाव रा अेव भाग ऊवा आव जद दूजो भाग हेठै आव । पण ऊपर नीच री चाल सू चावा चालता ही जाव । रगीला वगत ठुरिय वग, राजाना दुख रा दिन ही नी रव, सुण आणद रा अवसर ही तो आज्या आव । फागण री उडती फाफ अर रितुराज, लूवारा लपका तथा बरसाळ री बहार आग लारै आव जाव । तिल डूब पत्थर तिर अपणी अपणी वार' । मिनख री समझदारी रा सार या ही ह के सम वडा बळवान है, जका पळ भर ही ठम नही उथळ पुथळ उडतो दख्या जाव । इय चचळ चाठ वाळ सम वास्त ठीक ग्यान है के धीरज नै वदे नी छोडयो जाय । मिनख न आछ समै रो गुमान नी करणा तथा भगवान न वदी नी भुलाणा । म्हाटा दिना म घणा दुख विसूरणा सू घबडाया नी जाव । सुख दु ख चालता रव, वठ ही टिक नहीं । हर विसी हालत म आतम मगन रवणा ही मिनख जमार रा सार है । अठ'र चाल्या जका भादरा रा सदा हाथ पाधरा हुया ह ।

सम वडी, नर क्या वडा ? समै वडी बळवान
माबा लूटी गोपया, वे इ अरजण वे इ बाण ।

कवितावां

वयू घाव हाचळा घालो हो

ए वी कमल

समभाद्यो मोट लागां न,
मत आळ करो थे माटी सू ।
वयू घाव हाचळा घालो हो
दूध पियो जिण छाती सू ।

विज्ञानी राक्स धरती रा
रजवट रो रगत निचौड है ।
सदिया सू निपजी मिनखा री
लाखीणो साख झिंझोड है ।
अठ मानखो पट भरण न
घर लडाई बाटी सू ।
समभाद्या मोट लोगा न,
मत आळ करो थे माटी सू ।

जठ दागला पूत धरा पर
घर दोगलो हेत धरा सू ।
वैं बूस लजाव मायड री,
अर उजाड़ै, खेत धरा सू ।
ब नाच नचाव मिनखा न
ई राजनीति री टाटी सू ।
समभाद्या मोट लोगा न,
मत आळ करो थे माटी सू ।

भूखो तिस्सो हीण बापडो,
मिनख हेत री आस पळ ।
मोटा मोटा पट आफर्‌या,
हीण मानखैं आख वळ ।
ब राज मिटाव खोज मिनख रा,
लाय लडाई लाठी सू ।
समभाद्या मोट लोगा नै
मत आळ करो थे माटी सू ।

वै राज मिटाव मुसाना,
मानूस मुळातै हाठा री ।
चौड धाड बर ग्याळी
बारूद भरयाडै बाठा री ।
मैं मीत बर व मिनगा न,
राज मौत री घाटी मू ।
समभाद्या माटै लागा न
मत आळ बरो थ माटी सू ।
यपू घाव हाचळा घाला हा
दूध पिया जिण छाती मू ।



एक्कीसवो सैंको नै म्हारी ढाणी

रामेश्वर दयाल श्रीमाली

देख देख म्हारा मीत !
दौडतो आय रह्यो
इक्कीसवा सको है
ग्यान विग्यान
नै तकनीकी विकास रा
जिण बनै
अणमाप ठेको है ।
फूलो, पोमावो
कम्प्यूटर जुग है ।
मिनख रोबाट तक बध है ।
काई हुयो
जो म्हारी ढाणी र मिनख न
मीठ पाणी रो बडियो
न दा जूण रोटी ई
कोनी सध,है ।



सोरण लाग्या–
आ बात कुण र साम्है है
जान जाा र पाछे
गोगू गडरडा
आपणी जगा नागा है
एक पूछ हिलाव
दूजा नाड हिलावै
एक भौरे तो दूजो टांट
एक फाटे तो दूजा डाटैं
अब कुण मू
सावधान रणो
कुण न काई घेणो
हाय भन्को लाया
जाण बिजली रो करन्ट लाग्या
पाछो मुड अर
जद जावण लाग्या
अलसेशियन भौंकता पूछण लाग्यो
कुण मू डर अर जायो हो
काई जबी मू या म्हारे मू
म्है बोल्यो काइ फरक नी पडै
जबी म्है या थे जबी रा बाप।



गांव

जितेन्द्र शंकर बजाड

पणघट, ढाणी बाडा अर घर
नुवां पुराणां छप्पर छप्पर
अर पीपळ री छांव।
हिये भावणो जग सुहावणो ओ छ म्हारो गाव ।।
मांयां बायां पाणी लाव।

जिण री माटी
उण री मैस
नेस
नेग तो मौत मरघट प
मसाण री रातर
पण असली हजामत ता
दूकान की पइया प हाव है
कारज तो जेर दिन को
जलम भर राज है।
म्हारा गाव
जूनो ठान है
नी गाडा की पोल है
जूनी भीता है, जूनी रीता है
आखा तीज प याव की भरमार है
मा बाप
गोद मू तो नीचे कोनी उतारे
पण फेरा देवण ने त्यार है।
म्हारे गाव म
वसन्ती ने
बालपणे परणाई
पाच वरस पला आणो आई
चोथी बार जलवा' पूज री है
भाव कानी आवे
टड सू लगभग धूज री है
पत्वा ने जावती तो
हिमाल सरीखी मोटी
हाथी सरीखी भारी
गलतिया कोनी दुहरावती
जद पलो मदरम जावतो
ता—दूजो आवतो
वसन्ती
अस्पताल की भीत पे लाग्या
पोस्टर ने वदी क ता वाचनी

'एवज लालो लाडलो
आगाणिय आणद'
अर कदी तो विचारती
जीवण मे उतारती।
म्है चावू
म्हारे जूने गाव म
नूवी रोशनी लावू
लकीर पीटता म्हारा गाव न जगावू
हर आगणिये आणद मनावू।



गाँव री याद

हुकम चन्द कान्त

साथीडा थारा म्हारो निमसकार
बहुत दिना सू याद कर्‌यो है
पूछयो है गाँव रो हाल।
काई-काई बदळयो गाव रो
काई थारै हाल सुणाऊ
बचपन बदळ जवानी बणग्यो
जवानी बणी बुढापा
गी बदळी तो बा है नमी
अपणे मीठ जळ सू आज भी
गाव नै सींचै है।
बै दिन याद कर'र
मनडो हो जावै है उदास
जद गाँव रा छोरा छोरी
आधी रात ताई
चाद री चान्नी म खेलता रहन्ता
बदळ गया
रहन-सहन, खाण पाण

चान नगण
मडथ सू जुड र गाव
शहर ताई पूगग्या है
सूरज री किरणा सू पला
गाव रो सारो दूध
शहर पूग जाव है—
और काळा पाणी री र
न्नि निकळ है
शहर री हवा
फलगी है गाव म
गळी—घर अर पडोस
होग्या दूर
नजरा बदळ गई
रो गयी भूखी
गाव री बहू
बनी अर बेटा
म ग्नळ गया
बदळ गया गीत—मीत
अर सीग
छोरा—छोरी रा खेल
डोना—माह रा मेळ
मिनख अब मिनख नी रहया
गांव री भट्टी सू निकळयो मोम रस
रा डूब्या है गांव न
याता ही बाता मे
चाल जाव है बन्दूक
पुलिस
रो यू हाथा सू अपणो काम
कर चली जाव है—
कालू रो बेटा
आयो नहर सू
बण'र लीडर
व थवा मजदूरा न

करा'ण आजाद
और एक दिन
खुद ही होग्यो आजाद
फटी—फटी आंख्या सूं
देख्यो हो गांव नैं
लटकतो कीकर सूं
पुलिस अर डाक्टर
गाव रा चोधरी
कुण आजाद, कुण व धवा
गांव रा मिनख
मिनख नी रह्या।
गेयो है गांव न
बलात्कार
आगजनी
लूट
अर
खून
गाव अब गाव नी शहर बणग्या
आज मिनख रो
ईमान धम
नणग्यो है
पगा
गुल बापू रा ग7 दाई
होग्या है गांव रा मिनख
आत्मखोर।



गम्भीर ममन्दर

सुरेन्द्र अचल

पाव्यां म तिनिज-
अर मानती नाग मेत्र-

क वडो वो हुव–
जको लेव नी,
पण देवै ई देव !
जिया समन्दर !
कित्तो महान
कित्तो गम्भीर हुव समन्दर !
घणा ज गरो
अणगिणती री लैरा
देव आठू पार परा !
पण,
गराई काई इण नै ई कवीज–
क' डूब जाव काई काळी धार–
तो नी लादे ल्हाम भी ?
क ढढे भी कठा ताइ ?
आखर जाव हार ।
वडप्पण काई इण न ई कव !
क' इत्तो पाणी हुवता
नी पिलाय सक
जेक घूट पाणी–
किणी तिरस्या मिनख ने !
कदास
भूले भटक पी लेय घूट काई
तो हुव्याव जीव दोरो–
आवळ-बावळ ।
जर पड़ जाव खायो पियो मगळो ?



आज री कविता

अशोक कुमार दवे

कोई कव ओछी है कविता
कोई कवे लाम्बी है कविता

आज रै सदर्भ-री कानी कविता
आम आदमी री कोनी कविता
जनवादी अर प्रगतिवादी
छायावादी अर कलावादी
परखे आप-आपरी कविता
कथ्य/प्रतिबद्ध/सम्प्रेषण
सिणगार बिना
काई खास मकसद री कोनी कविता
कलात्मक/सजनात्मक वशिष्ट री
मन माय भावै कविता।
शिल्प री लापरवाही
अर भूण्डा दरमाण री
नी भाव मन माय कविता।
आप आप रै पिट्ठूरो
चोखी लाग कविता
आ हीज है आज री कविता'।



विकाऊ लोग

तारासिंह

हाट लगी बिणजारा हाट
घणगा धणा विकाऊ लाग
नजर पसारघा भी नी ल्हाद
अब तो ठेठ टिकाऊ लाग।
गळा बेचद, गीत बेचदे
आळयू बेच, प्रीत बेचद
भासा बच, भाव बेचद।
जुगां जुगां री रीत बचदे,
व चीजां भी बचण लाग्या
जो नही र'गी निराण जाग।

आग वाग वाण ग्रद
गाग्रीर निमाण वाग
ग्म वाग भेर वाग
गोटे मूठ्यां ताण वनद।
मिन्या नपाई वग तान्या
जण जण म पन्या राग।

मतनव मार पाठा भाग
घा वी र घा वी र आग
व—मनठव वनठान मानी
षवू वणगा यिदराज नाग।



रचिना

मोहम्मदसादीय

मीठा/ममोली/ममता रो
सागो सदा सदा वास्त
छूट ग्यो ।
जिया जिया जी ग्या ।
आपणी गळी रा ही
कुचमादी खुरमडिया
जुगनू न डागरा भेळ
भेळ दियो
बळद बणतो बणतो
बापडो जुगनू डामीजग्या
नाथीज्यो कोनी ।
अणचा बाई र सफा साग सू
फड बजार ताईं—फड बजार स
सबजी मन्डी—कोट गेट
अ'र दा पीरां ताईं र
समूच—सालम हलवें रा
लूठी हाथम ।
गाया रा गुवाळ
वाछडिया रो बली
भूग—सूदं सासरा रा रिछपाल
म्हारो जुगनू—
एकन—खोरो कोनी
हुडी करणो अ'र ढूकणा
सरावण जाग—
ना जागे लोगा रा बूनणा ।
मात मू पैली मुण मरणा चाय
हिम्मत हारया समूच मानखे री
पत जाव ।
आगती नद माठी रा धणी
फूटरा—फररा—मातरा—सुरणा
गोरम मतरी सा
दो—सीग
माया म अणूता मरार

आ सबजीमंडी/आ फंड बजार
आप रा—आपर—वापरा ।



मारी धरती री पिछाण

अमृतसिंह पवार

जिण वन भूल न जावता गद गवय गिडराज
तिण वन जंबुक ताखडा उधम मंडै है आज ।'
आ वात साव साची है
जिण धरती री पिछाण नारा री गजना सू व्हती ही
अरजुन अ'र भीम री दकाल सू धरती धूजती ही
वा गगा ओर जमना री धरती
वा गौतम और गोविन्दा री धरती
वा अडिग हिमालय री तपस्या री धरती
आज सियाल्या भरी मूकाव अर लपलपावती
जीव रा नजारो दरसाव है ।
राणा प्रताप, भगतसिंह अर छत्रपति री देस
आज दिसा भ्रमित व्हैग्यौ है ।
वा देस जठै—
बेटा बाप रै प्रण खातर
घास री रोटी न अन्न समझता हा
नकली दुरग नै बचावण खातर सेवक
आपरो जीव होम कर देता हा
धाय मा धरम रै खातर
आप रै बेटा नै मरवाती ही
तद वा जामण जायी माँ सू माटी व्है जाती ही
वी वगत आन बान अर सान पै मरणो
धरम री पक्की लकीर ही
पण आज—
निहत्था मिनखा री लोही बहावणो

शान अ'र मान री बात बणणी है ।
जिण खेता म मूग मोठ अर गहूं
री सुगन्ध आवती ही
उण खेता मे अब बारूद अर बन्दूका
उगण लागी है ।
जिण मन्दिरा म गुरु नानक अ'र गोविन्दसिहजी
री गुरुवाणी गूजती ही
बठै अबै बन्दूका री धाय धाय
अर निहत्था री चिरलारा सू गूज ह
मन्दिर अब मुरदाघर बन गिया है।
कुण जाणै कुण गगा र उदगम स्रोत म
जर री पोटली धर दीनी है
सो सगलो जर चारू खूट
फलता जा रीयो ह
भारत माता र लिलाट प
लाग्याड़ो लोई रो दाग
कुण जाणै, कुण धासी
कुण धासी !



लोभ

दीपचन्द सुथार

अब डाक्टरी र
आखरी जात्रा री त्यारी
व्है रयी ही–
सीढ़ो गूथता थका
लाग बाग
आपस म बाता करता
व गिया हा, क–
स' चाय म मिलावट कर

भूखा लाग टूठ रवे ना जाणी जाणी
मिनखपण र पाण रव ह ऊजळो पाणी।
मद दरिया मतवाळा बादळिया आमै मटरावै ह,
तिरसी धरती टुक टुक जोव बी न क्यू तरसावै ह।
उमड घुमड जद मेह बरसना मोकळा
प्यास बुझावण धरनी री बा सावण सरमावै है।
आप चावा कितरी करा आना कानी,
आप चावा जितरी करा मन मानी।
म्हानै ता मानव मू मेवट हेत घणा
दूध ता दूध हुव, पाणी आखर पाणी।



गळगचिया

दीनदयाल शर्मा

कसम

उत्पादकता बरस न
सफळ बणाण री
घण जबरी कसम खाइ
ब्याव हावता'ई
टाबरा री
लूठी ल्रण लगाई।

सीख

घाटा खा'र
सगळ घधा माय
ज तू सुद चुग गया ह भूल
ता भायला
घाट रा क काम
जनमस्या सानी दख
जर
भट खाल इस्कूल।



लखपति व्हेग्या
'म मसाला म माटी मिलाय'र
करोड़पति व्हेग्या
द' अर घ री बाता
द्रोपदी रो चीर व्है रयी ही
दाय दिना री जिन्दगाणी
पण–
काळ कारनामा री
जाण
लिस्ट आउण्ट व्है रयी ही।
सुण सुण–
कान हाथ माय आग्या
मनड रै विचारा न
काळीदर नाग डसग्या
फेर भी माच्या—
बठई—
बाई रिमपत री बालबासा ह
या पछ
मिनखा जूण म
रिपिया पईसा रा ईज—
रात र दिन ताता ह।



चौपद्या

शिवराज छगाणी

मानखो तरसै मिनख र प्रेम र खातर
पानडो खडके विरख र नेह र खातर।
मटक्या दुख-दरद मुळगो लाय न
काळजो तरस ठंडो पून र खातर।
बबतो आव रूंख, मिळ जद निरमळ पाणी,
बधतो जाव माण बोलिया मीठी वाणी।

भूगा लाग ठूठ, रव ना आणी जाणी
मिनखपण र पाण रव है ऊजळा पाणी।
मद छकिया मतवाळा बादळिया आभ मडराव ह,
तिरमी धरती टुक टुक जोव वी न क्यू तरसाव ह।
उमड घुमड जद मह बरसला मोकळा
प्यास बुभावण धरती री बा सावण सरसाव हे।
आप चावा जितरी करा आना कानी,
आप चावो जितरी करा मन-मानी।
म्हाल तो मानग्य मू सवट हत घणा,
दूध ता दूध हूध, पाणी आखर पाणी।



गळगचिया

दीनदयाल शर्मा

कसम
उत्पादकना बरस न
सफळ बणाण री
घण जवरी कसम खार
ब्याव हाजता'ई
टाबरा री
लूठो लण लगाई।

सीख
घाटा ना'र
सगळ धधा माय
जे तू सुद बुद गयो है भूल
ता भायला
घाट रा क काम
जनसख्या रानी देख
अर
भट खाल इस्कूल।



गिदगिद्या

दीनदयाल शर्मा 'दिनेश्वर'

नेता बणंगो

नेता र छारे ने
जणा माठर जी ठोक्या
नेता जी दाखळ दी
अर टाबयो
टीगर नै क्यू मार ।
माठर बोल्यो—
इण न मिनख बणावण खातर
सीख देव हा
पण ओ वठ लव हा
बस धर दी ।
नेताजी अरडाया
मरा छारा मेरी तर
नेता बणगो
मिनख बण'र
तेरी तर भूख नी मरगो !



नानक्या

ओम पुरोहित 'कागद'

काळ

धवा दाणा
भूख मरण रा सन
मत्री रा पयटन ।

टोपी

महात्मा गाधी रो मजाव
राजनीति रा दर्डी गडियो ।

समाजवाद

नेतावां रा दाळ भात
ना भिज ना बन ई घाले
वरसां रो अपवाद ।

कानून

सरकारी सांड
मार जकै नै मार
छोडै जकै न छाड ।

पढाई

अरारोट री मळाई
परत उतारता जावो र
मैनता जावा
ना थाग आव
ना उतारया मगै ।

सै'र

भूखा मिनख भेळा मरण रो ठाव
म र रा म र'र गाय रा गांव ।

बजट

नींद माय सूत्यां थका
ब्यायोड़ी भम
जकी पाडो द ब्याय पाडी नी ।

कुरसी

राजनीति री जूठी पाती
जकी
चिप्या पछ
मरयां'ई उतर ।

चुनाव

भूख रा बखाण
नेतावा रा गंगा सिनान
अर
जनता रो क्रियाक्रम ।



क्षणिकावा

घनश्याम राकावत

बास

म्हं बास को
पूरो पूरो ध्यान राखूं
मगी सूं बात करता
नाक भीच अर
माम रोक्या राखूं।

वन महोत्सव

वृक्ष रोपण रै दिन
खूब पौधा रोपे
पण बाकी रा दिना
आंना लकडा री कटाई मं
कायदा कानून सामूंदा लोप।

मूंडो

टेम कटेम
ठानो भूना आता
माथो ढणक जावे।
पण मनख्यां रा
मूंडो दरता
मूंडो ही रम जाव।



अध्यापक

गणपत सिंह

कवीन्द्र रवीन्द्र कह्यो हो
अध्यापक वो दिवलो है
जो खुद जलर

गीआ मिनगा र उजाळा देवै।
जद्या ना म्हैं नी हां,
रात्त्र रा नाम प।
प्यादा सू परगी रण्या
साध्यां री छनोग प।
माताहन सू ऊँचो प्न
पायण रा बमाल प।
पर यू पर'र म्ह
उजाळा बीआ मिनगां न
देवण री बजाय,
गुन र मूड माय गेर गेयां हां।
अर वारां पटना सू
औन्तो मौन
अधरा र गूतो ग्यां हा।



अन्योक्ति

श्याम सुन्दर श्रीपत

चन्द्रमा री किरणां माथ
काळ रा रग चढ़ गीनी
अन्यायी रावण र वळ सू
गतवादी राग मर कीनी
उगताडे सूरज र आगळ
रजनी री रोज रव यौनी
विष गावणिय मिव सवर र
नागग रा जे र पन यौनी
करने कोई बासीसा गोडा
मनखां रो मोन घट वौनी
पापीडा गोवे पन सुद री
वचन न काट लग वौनी



आपरै मिलणै सूं

मालचन्द्र थमल

मौसम रा रंग किता मन अरथ आपरै मिलणै सूं
जीवण रा किता नूंवा सन्दरभ आपरै मिलणै सूं ।
किताबां में छापां री मरदिमा री बातड़ियां ,
[illegible] किता सुपना रंग आपरै मिलणै सूं ।
[illegible] सुपना रा [illegible] रा [illegible] निराला री याद में
[illegible] [illegible] किता [illegible] आपरै मिलणै सूं ।
सिमरयां री कविता [illegible] री निजूरी में
[illegible] किया मन [illegible] आपरै मिलणै सूं ।
[illegible] [illegible] [illegible] बाई मीठा गा मचाणा
[illegible] किता मन बण आपरै मिलणै सूं ।

□

गजल

अर्जुन 'अरविन्द'

चैरा पर चमक रहया रूप रा उजाळा
पण काजळ री कोर सा मन होया काळा ।
टाबरां री फौज वधी मायड़ रोगनी
मूता रह्वे रात दिन सडक म रखाळा ।
जद जद दौड उठ मनमा री भीड पर
दीसे जिनगाणी पर मायडी रा जाळा ।
रामनामी ओढ मुळक गुरडाता पाप
मत्ती चूतर हाथ कुळटा रा चाळा ।
माच री रगत मिनख्यो रात रोज चाट
आम्बर माथ धुवं वैम रा बदनाळा ।
अगन री गैल चणी भूम री ग्रसाम्या
चितणा पग चाल मद मिनख्या मतवाळा ।

□

कुण केवं ?

श्री श्री घोष

कुण केव, क थे म्हान मिले कोयनी
मिले तो है पण वान हाथ कायनी ।
कुण केव क थे साच बोले कायनी
साच बोल तो है, पण राग मान कोयनी ।
कुण केव क व भणे गुणे कोयनी
भणे गुणे तो है, पण लखण आवे कोयनी ।
कुण केव, क वे लडाई लड कोयनी,
लडाई लड तो है पण लोगा न दीस कायनी ।
कुण केव क व रिसवत लव कोयनी,
रिसवत लेव ना है पण हाथ माड कायनी ।

□

निरन्तेमा ग रगत रहावे
जात पात रा भरमी नारा
हाथ पांव री ताग्त शाम
अं आलस न पाछ पाग
अं जग रीता गान उजावे
नेय रहणा राम राम
म्हू पूछू जुग रा भागीरथ !
कद आन गगा नारा म ?
नारां म कद मिपज पमना,
मीता पन नान नारा म् ?
मागे न तज उठ नारायण
नर रा भाग थम तडे है
पाड पाळजा अधनार गे
गेन भाण वितरा नडे है !
उठा युदानी मागळ गारी
और आजमा ताक्त थारी
पुरुषारथ र पाण कोसले
दण दुविधा मू सुविधा गारी।



हेलो दे धरती माता गेत मे

धनञ्जय वर्मा

भाभर'ब री वळा गूजी भरवी
जागो रे करसा हलो दे धरती माता खेत म।
पो—फाटी मुस्काव किरणा जागती,
जागो रे करसा, बीजडला हाँस ,उजळी रेत मे।
पून चल पुरवाई, गाव चानणो
आज रेत म गीतडला रो माँडणा।
खडी खडी सेती री काया हुसर
जाग पडी है धरती मच सच मान जो।

ताविरो वरमाव सोनो ग्नि उग्यॉं,
वाग्ळिया वरमाव चादी ऊमस्यॉं ।
नाज नाज निपज धरती री वूगम्यू,
अर ना जुगत नुव जीवण री ढूढस्यां ।
भर भर धोवा बाट दिया सुग आस न
भर भर भोळी प्यार दिया विमवास न ।
क्रांति क्रांति रा उणीयारा ग्द ग्क सा,
मन पूछ धरती पर हुयँ विश्राम न ।
टेम टम री बात बदळगी आ धरा
महल महावण नाग्या मूगा टापरा ।
धन दौलत र पट चग्यो है जाफरा
पळ गरीबी रा अन छोरा छापरा ।
झांमर'व वळा गूजी मरवी
जागा रे करमा हेला द धरती माता मत मे ।

वटाऊ चालतो रीजै

रामनिवास सोनी

वटाऊ चालतो रीज,
जगत री वेवळू मार्थं अमर मनाण धर दीज ।
गरजता बायरा वाज
समदर मौत सा गाज ।
पळापळ वीज भपकारँ
मिनख मरजाग्ग जद लाज ।
अधार पथ पर जुग रा नुओ निरमाण थरपीज ।
गिगन सू माग मत मोती
जगा ले मायलो जोती ।
परसल प्रीत रो पाणी
वळी री पासडी राती ॥
वण ता किरण आम री पलक इतिहास गरवीज ।

रगै ता गोस रग ज्यावे।
भुग तो नाड भुव ज्याव।
बुभ तो प्रीतडी साज।
थव सिणगार थर ज्यावै॥
जलम गू मौत रा गनो अठे बवार मत बीज॥
वटाऊ चालतो रीज।
वटाऊ चालतो रीज।

माणम

कल्याण सिह राजावत

माणस[1] तू पारस गा्गाडो जीयण न गाना सू भर ल
अेक नगी पागर सरवर मे, तू तो सात ममदर तर ल
थारा हँसणी, मन हरराई
थारो गाणो गरव गमाई
तू गुसिया रा वडो खजाना–
थार हाथा घणी कमाई
जीत सदा थारी अगवाणी, सातर पातर कमतर कर ल
तू सौरभ री सास वधाई
रगा री मफल महकाई
थारी मासा सरगम रा सुर–
पर सचा, परसव बहाई
दूजा र हित आपा मटी, इतरी वात हिया म धर ल
तू हाभळजे हत हताई
साची साख सनह सगाई
प्रीत पाळ परतख प्राणी सू–
साग सरसी सत सकळाई
गुण सू गरज, गरज गुणो जन सू, गिण गिण आगण सारा चर लै
काटा सू कळिया चुण ल्यायो
भाटा सू माणक विण ल्याई

जहर भरी जगती रै मातर
स्मरत रा गो घर भर त्याद्द
गुण रा साज मजावण माथी जण जण रा तू मरट द्दरन
माणस ! तू पारस साचाऊो, जीवण न साना सू भर स ।



गीत

केशव पथिक

काळी काळी वकरयाँ, दूधा धार, सौगन उतरधा गगा पार।
सगा स्नही मिलवा आया ।
टावर टाळी लारा आया ।।
मण आटा ग राटा पाया ।
चट करग्या मोटघार ।।
काळी काळी वकरयाँ, दूधा धार, सौगन उतरधा गगा पार ।
गळी गळी म घुसग्या चार ।
ल भाग नत ढाण्डा ढार ।।
राव ह करसाण बापडा ।
मचग्या हा हाकार ।।
काळी काळी वकरयाँ, दूधा धार, सौगन उतरधा गगा पार।
लकडी मूगी मूगा तल ।
टकराव नत मोटर रेल ।
वाड खेत न खावा चाली ।
मिनख जुण वकार ।।
काळी काळी वकरिया, दूधा धार, सौगन उतरधा गगा पार ।
सूना दीख जठ रावळा ।
मफ दुपरा पड कावळा ।।
हाकम नत दौडा जावं ।।
गाव — मगलाचार ।।
काळी काळी वकरयाँ दूधा धार सौगन उतरधा गगा पार ।
अठ मिनख न मिनख डराव ।

वात बात प धु [illegible]
कळजुग थारी नार मूट [illegible]
ब्येगी नय जयकार [illegible]
काळी काळी वकरयाँ, दूधा धार सौगन उतरचा गगा पार।



अम्वर सू पसीनो वरसँ रँ

भवर लाल गूजर "छैल"

चम चम चमक विजळया, अम्बर सू पसीना वरस र।
गड गड गरज बादळया, सुण करसा रा मन हरस र।।
माथ मन्यो हाल बीजणा, पाळा चाल पगडडी।
सन सन कर सन्नाटो मार खेता मे पुरवा ठडी।।
गड गड गरज बादळया, सुण सारग बन म नाच र।
चम चम चमक विजळया अम्बर सू पसीना बरस र।।
हाल सुरगो धरती चीर कोयल गाव गीतडली।
प्रीत बीज धरती न बीर, प्रेम पाग की प्रीतडली।।
नारा धुघरिया गाव, देश प्रेम की बोली र।
चम चम चमक विजळया अम्बर सू पसीनो वरस र।।
गौरी हाथ कलवो आया, हाडी माही राबडी।
बाजरिया री रोटी खाता, प्यारी चाल जाबडी।।
छम छम करती छमका मार, पायल म्हारी धरता र।
चम चम चमक बिजळया अम्बर सू पसीनो बरसँ र।।
तज तावडा गौरी न करदी, कामल फूल सी कुमळाडी।
रहटिया टकारा मार ज्या प्रेम बादळी उमडयोडी।।
खळ खळ खळक पाणीडो, खेजडली री छाया र।
चम चम चमक बिजळयो, अम्बर सू पसीना बरस र।।
गीत सुग्गा गाव गोरी, लावण करती खेत म।
घणो धान निपजायो धीणा, इँ धरती री रेत म।।
छण छण छणक ऊादडली ज्या 'छल चमकणी चादी र।
चम चम चमक विजळया, अम्बर सू पसीना वरस र।।

कोयल स्यू

निशान्त

मान्या तू
बडा मीठो गान्र है
पर थारी अवाज ग साथ
जाण जाळी
जमीदार ग बाग गी याद
सारांि गड बडा जान्व हूं
म्हे रेह जावा हूं
उदास गा उदास
छाडता ठंटी सास ।



म्हे अधेरे नै गळै लगाऊ

सत्य शकुन

दीयै री बापती जात
म्हन कई टुकडा म बाट द
ईं खातर म्हे अधेरे न गळ लगाऊ
उजास न दूर राखू
मन री बात मुडा माथ नी लाऊ
अतस रा भाव, अतस मे राखू
सबदा न बार नी आवण दू
क्यू क—म्हे जाणू हूं
अ तस मू साच निकळ
जीकि धार बटी पनी हुव
वो क्वण वाळ न
अर सुणण वाळ न
टुकडा टुकडा म बाट द

ई खातर म्है अंधेरे न गळ लगाऊं
म्हे जाणू—आ बात खाटी है
पण हूं इसो जुभार वाळो
क साच सूं—
आपण लोगा सूं—
अर खुद सूं—जूंझ सकूं
क्यूं क इ जमाने म
लोग मगळीक वाता न पसद कर है
अर वो साच म घटे है
सो मन साफ
म्है अंधेरे सूं लगाव राखूं
ईं खातर म्है अंधेरे न गळ लगाऊं।



लिछमी

कमला जैन

लिछमी मुळक मुळक करती
हणझुण चढगी तू महला म।
या ऊंची हल्या र बीचे
टापरियो रहयो बगना म,
ओंरया नीची घर निसरी
पर छूट गयो हा गला म।
लिछमी
ये बारा माटा सठ घणा
म्हाकी गिणती है करसा मे
दीखे धोळा बुगला जीस्या
खोट घणा पर मनसा म
म्हे लोई पसीना एक करा
थू भरगी बारा येला न।
लिछमी

थारा कानी ए दोस घणा,
आ दास बायरा पाणी मे,
सच पूछ कुरसी टवल न
कुण बठे रीत आगण म,
बायल रा भरता साग वागळा
भरम जगाळे सावण म ।
लिछमी

म्हू ता इत्ती ही अरज करा
तू जाया जा पर चाक्स म
आकासा म चढती जा
पण पगल्या रसी धरती म
काळा म काळी हा जासी
रग म नी पण लखणा मे।
लिछमी



नानजी डामोर

शशिकान्त दशोरा

तलवाडा ना नानजी डामोर जमकुडी स लोर
नानजी ने तो बारह वईयर, जमकुडी ले लोर
बारह म एक टुटी वईयर जमकुडी ले लोर
टुटी वईयर कडल मार्गे, जमकुडी ले लोर
कनक्ता जवातु नथी, कडल लवात नथी, टुटी ने म्हारो
जिवडा लिनो, जमकुडी ल लार
तलवाडा ना
बारह म एक बुसरी वईयर जमकुडी ले लार
बुसरी वईयर नथडी माग जमकुडी ले लोर
नागपुर जवातु नथी नथडी लवाती नथी बुसरी न म्हारो
जिवडा लिदा जमकुडी से लार
तलवाडा ना

थारह म एक वरी उर्दयर, जगनुआ स सार
वगे वईयर गेटिया मार्ग जगनुडी ले सार
यग्वई जवातु नथो, गडिया लवातु नथी वरी ने म्हारा
जियटा लिदा जमनुडी स लार
तलवाटा ना



सपना सजोती म्हारी आंधळी इच्छावा

नन्दकिशोर चतुर्वेदी

ढगता गूरज री वळा ने
समभा उगतडा परभात ता समभा
म्हाने थाई
यगत री वात
अर मम रा आगू
गुण दसे
सगळा धरम करम न रामजी लेख
गीता रा उपन्शा म
अणूता अरथ बाचा तो वाचा
म्हान काइ ।
म्ह सजा री सळवटा ने
सूनी आख्या सू निहारू ता निहारू मठे ताई
ठा कोनी य
कद हिया म वळती हळाळ
बण जावे
यगत री वात
जमाना री रामायण गीता
वस्या तो
म्हू आज भी करू हूं
अ धारा सू अरदास
अर उजाला सू प्रीत

थारा कानी ए दोस घणा,
जा दोस बायरा पाणी म,
सब पूछे कुरसी टेबल ने
कुण बठे रीत आगण म,
कोयल रा भरता साग कामळ
भरम जगाळे सावण
लिछमी

म्हे ता इत्ती ही
तू जाया जा पर
आकासा म
पण पगल्या
थाळा म का
रग म भी
लिछमी



नानजी डामोर

शशिकान्त दशोरा

तलवाडा ना नानजी डामा
नानजी न ता बारह वईय
बारह म एक टुटी
टुटी बईयर कडल
कलकता जवातु नथी कडल लवात
जिवडो लिदा, जमकुडी ल लोर
तलवाडा ना
बारह म एक बुसरी यईय
बुसरी वईयर नथडी माग
नागपुर जवातु नथी नथडी लवाती नथी, ए
जिवडा लिदा, जमकुडी ल लार
तलवाडा ना

थारह म एक बगी वईयर, जमगुडी ल लोर
थरी गईयर गडिया मागें जमकुडी ल लार
थव्यइ जवातु नथी गन्या लवातु नथी, वरी न म्हारा
जियडा लिदा जमकुणी ल लार

तलवाडा ना



सपना सजोती म्हारी आंधळी इच्छावा

नन्दकिशोर चतुर्वेदी

ढनता सूरज गी थळा ने
समभा उगतडा परभात सा समभा
म्हाने वाई
थगत गी बात
अर मम रा आसू
गुण दग
सगळा धरम करम रा रामगी लग
गीता रा उपदशा म
अणूना अरथ वाचा तो वाचा
म्हान काद ।
म्ह मजा री साळवटा ने
सूनी आम्या सू निहार ता निहार कठे ताइ
टा वानी म
मद हियां म वळती हळाळ
थण जावे
थगत री वात
जमाना री रामायण गीता
वस्या तो
म्ह आज भी वर हूं
अन्धारा सू अरदास
अर उजाला सू प्रीत

पण
जम जावें वगत रा गावळा बायरिया
खुल जाव भरम री गाठ
ता आछ्यो'ज है
आज तलक तो
सूनी मेडया री ताक म
बळता दीवला रा मँदरा प्रकाश म
सपना सजाती कामतण सी
म्हारी आधली इच्छावा
भविष्य रा सपना म गळगळ हा जाय
जर दीवळा री पातळी लौ
आशा री आभा बिजळ बण जाव
पण वगत रा दरकटटा
कद गाबा वदळ आ जाव
इच्छावा रा धाडेती बण
यू तो च्यारु मर
छम छमाट करे रात री राणी
कद्या कद्या ही'ज वाले
पाघट री ढाणी
पण घणी मीठी लाग
आज भी व्हू उचकता आखर
भागता भागता म्हू आवे
हूत री वाणी
पण पाउ‍डे पाउ‍डे ऊभी
जोखम री बाड ने
किया उलाघू   किया उलाघू ।

□□

लेखका रा ठिकाणा

1 नर्सिंह राजपुरोहित, खण्डप (बाडमेर)
2 भँवरलाल 'भ्रमर' भ्रमर निकुज ईदगाह बारी बीकानेर
3 शिव मृदुल, बी-8 मीरानगर चित्तौडगढ
4 हनुमानसिंह पूनिया शिक्षक रा उ प्रा वि ऊपनी (चूरू)
5 छगनलाल व्यास रा मा वि, खण्डप (बाडमेर)
6 कृष्ण कुमार कौशिक, पयवेक्षक, प्रौढ शिक्षा नोहर (गगानगर)
7 भीखालाल व्यास प्रधानाध्यापक रा मा वि, अजीत (बाडमेर)
8 रामस्वरूप परेश पीरामल उच्च मा विद्यालय बगड (झुन्झुनू)
9 पुष्पलता कश्यप हनुमान मन्दिर कचहरी पो आ के पास जोधपुर
10 मुहम्मद कुरशी प्रधानाध्यापक, रा मा वि करकेडी (अजमेर)
11 मीठालाल खत्री प्रधानाध्यापक रा उ प्रा वि चौराऊ (जालौर)
12 जनकराज पारीक, प्रधानाचाय, ज्ञानज्योति उ मा वि श्री करणपुर (गगानगर)
13 रूपसिंह राठौड, रा उ मा वि,, बास घासीराम, वाया अलसीसर (झुन्झुनू)
14 अरविंद चूरुवी रा उ मा वि रतननगर (चूरू)
15 माधव नागदा, रा उ मा वि राजसम द (उदयपुर)
16 ओमदत्त जोशी, प्रधानाध्यापक रा प्रा वि, ओडान चौक ब्यावर (अजमेर)
17 अमोलकचन्द जागिड, सेठ दु जटिया रा उ मा वि बिसाऊ (झुन्झुनू)
18 त्रिलोक गोयल, अग्रवाल उ मा वि, अजमर
19 मावर दइया उप डाक घर के सामने जेल रोड बीकानेर
20 छाजूलाल जागिड, प्रधानाध्यापक, रा उ प्रा वि मण्ड्रेला (झुन्झुनू)
21 सोहनलाल प्रजापति, रा प्रा वि न 11 सुजानगढ (चूरू)
22 नानूराम सस्कर्ता कालू (बीकानेर)
23 ए वी कमल, नेहरू चौक, शीतला गेट, बीकानेर
24 रामेश्वरदयाल श्रीमाली, प्रधानाध्यापक, रा मा वि माडवला (जालौर)
25 सुमेरसिंह शेखावत, सरवडी सदन, आनन्दनगर सीकर
26 वासुदेव चतुर्वेदी एस आई ई आर टी सहेली माग, उदयपुर

27 जितेन्द्रेश्वर बजाड, भीचोर (चित्तौड़गढ़)
28 रमेश 'मयंक', प्रधानाध्यापक रा मा वि भियाड़ (बाड़मेर)
29 हुकमचन्द कांत 13 बी ब्लाक, श्री करणपुर (गंगानगर)
30 सुरेन्द्र अंचल कृष्णा कालोनी ब्यावर (अजमेर)
31 अशोक कुमार दवे द्वारा श्री नत्थूसिंह वर्मा प्लाट न 730 ए फस्ट 'सी' रोड सरदारपुरा जोधपुर
32 तारासिंह रा उ मा वि दूधवाखारा (चूरू)
33 मोहम्मद सदीक स प्रधा राज सादुल उ मा वि बीकानेर
34 अमृतसिंह पंवार रा उ प्रा वि महिला बाग जोधपुर
35 दीपचन्द सुथार मेड़ता सिटी (नागौर)
36 शिवराज छंगाणी नत्थूसर गेट, बीकानेर
37 दीनदयाल शर्मा, रा मा वि, मक्कासर (श्रीगंगानगर)
38 ओम पुरोहित 'कागद', 24 दुर्गा कोलोनी हनुमानगढ़ संगम (श्री गंगानगर)
39 घनश्याम राजावत प्रधानाध्यापक रा मा वि, मूलर (नागौर)
40 गणपतसिंह प्रधानाध्यापक रा मा वि गूगा (बाड़मेर)
41 श्यामसुन्दर श्रीपत प्रधानाचार्य, अ न सा गोपा हा स, जसलमेर
42 मालचन्द्र कमल, प्रधानाध्यापक रा मा वि, टसकोला (जयपुर)
43 गोविन्द कल्ला प्रधानाध्यापक रा उ प्रा वि सरदारपुरा जोधपुर
44 अर्जुन 'अरविन्द', काली पल्टन रोड टांक
45 श्री श्री धाप मुग प गली, ब्रह्मपुरी, जोधपुर
46 विश्वम्भरप्रसाद शर्मा रा पी सी बी उ मा वि, सुजानगढ़ (चूरू)
47 भगवतीलाल व्यास, 35 फतेहपुरा, खारोल बस्ती उदयपुर
48 धनंजय वर्मा नगर परिषद के सामने बीकानेर
49 रामनिवास सोनी काली जी का चौक, लाडनू (नागौर)
50 कल्याणसिंह राजावत 53 शिल्प कालोनी, झोटवाड़ा जयपुर
51 केशव पथिक, रा उ प्रा वि (कचहरी) कपासन (चित्तौड़गढ़)
52 मदनलाल गूजर 'छल' सी 70, रामनगर कालोनी, शास्त्रीनगर जयपुर
53 निशान्त द्वारा बसन्तलाल हंसराज पीलीबंगा (श्री गंगानगर)
54 सत्य शकुन, हनुमानहत्था, बीकानेर
55 कमला जैन रा उ मा वि गिलूण्ड (उदयपुर)
56 शशिकान्त दशोरा रा मा वि देवळ (डूंगरपुर)
57 नन्द किशोर चतुर्वेदी पालुन्दा वाया नेम (चित्तौड़गढ़)

शिक्षक दिवस प्रकाशनो की सूची

वष 1967 स 1973 तक इस योजना क अ तगत 31 सकलन प्रकाशित किय गये हैं। य 31 प्रकाशन शिक्षा निदेशालय क प्रकाशन अनुभाग ने सम्पादित किय थे। 1974 म सकलनो का सम्पादन भारतीय ख्याति के लेखकों से करवाया गया। बाद के सम्पूण सकलनो का विवरण इस प्रकार है—

1974 राशनी बाँट दो' (कविता) स रामदेव आचाय, अपने आस पास' (कहानी) स मणि मधुकर, रग रग बहुरग' (एकाकी) स डॉ रागानद 'आँधी अर आस्था' व 'भगवान महावीर' (दो राजस्थानी उपन्यास) स यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' 'धारगड़ी (राजस्थानी विविधा) स वेद व्यास।

1975 'अपन से बाहर अपने म (कविता) स मगल सक्सना, 'एक और अ त रिक्ष (कहानी) स डॉ नवलकिशोर गभाल (राजस्थानी कहानी) स विजयदान देथा 'स्वर्ग भ्रष्ट' (उपन्यास) स भगवती प्रसाद व्यास स डॉ रामचरण मिश्र, विविधा' स राजे द्र शमा।

1976 'इस बार' (कविता) स नन्द चतुर्वेदी, 'सकल्प स्वरा के (कविता) स हरीश भादानी, 'बरगद की छाया' (कहानी) स डा विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, 'चेहरा के बीच' (कहानी व नाटक) स योगेन्द्र किसलय, 'माध्यम' (विविधा) स विश्वनाथ सचदेव।

1977 'सृजन के आयाम' (निब ध) स डॉ देवीप्रसाद गुप्त 'कथा (कहानी व लघु उपन्यास) स श्रवणकुमार 'चेते रा चितराम (राजस्थानी विविधा) स डॉ नारायणसिंह भाटी समय के सन्दभ' (कविता) स जुगमन्दिर तायल, 'रग वितान' (नाटक) स सुधा राजहस।

1978 'अँधेरे के नाम सधि पत्र नहीं' (कहानी सकलन) स हिमाशु जोशी सग्राण' (राजस्थानी विविधा) स रावत सारस्वत 'रचेगा सगीत'(कविता सकलन) स नन्दकिशोर आचाय, 'दो गाँव (उपन्यास) लेखक मुबारक खान आजाद, स डॉ आनन्द सक्सेना, 'अभि यक्ति की तलाश' (निबन्ध) स डा रामगोपाल गोयल।

1979 एक कदम आगे (कहानी सकलन) स ममता कालिया, 'लगभग जीवन' (कविता सकलन) स लीलाधर जगूड़ी, 'जीवन यात्रा का कोलाज न ?'

(हिन्दी विविधा) म डा जगदीश जोशी 'कोरणी कलम री' (राजस्थानी विविधा) स अनाराम सुदामा यह किताब बच्चा की' (बाल साहित्य) स डा हरिकृष्ण देवसरे।

1980 'पानी की लकीर (कविता सकलन) म अमृता प्रीतम, 'श्याम (कहानी सकलन) स शिवानी, मजूषा (हिन्दी विविधा) म राजेश जन 'अतस रा आखर (राजस्थानी विविधा) म नसिह राजपुरोहित 'मिलत रह गुलाब' (बाल साहित्य) म जयप्रकाश भारती।

1981 'अधेरा का हिसाब (कविता सकलन) म सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, 'अपने से परे (कहानी सकलन) म मन्नू भण्डारी 'एक दुनिया बच्चो की (बाल साहित्य) स पुष्पा भारती 'सिरजण' (राजस्थानी विविधा) म तेजसिह जोधा, वन्दे मातरम्' (हिन्दी विविधा) म विवेकी राय।

1982 'धमक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे' (कहानी सकलन) म मृणाल पाण्डे, 'कौमी एकता की तलाश और अन्य रचनायें' (हिन्दी विविधा) म शिवरतन थानवी, 'अपना अपना आकाश' (कविता सकलन) म जगदीश चतुर्वेदी 'कूपळ (राजस्थानी विविधा) म कल्याण सिंह शेखावत 'फूलो के य रग' (बाल साहित्य) लक्ष्मीचन्द्र गुप्त।

1983 भीतर बाहर' (कहानी सकलन) म मृदुला गग 'रेती के रात दिन' (हिन्दी विविधा) म प्रभाकर माचवे घायल मुट्ठी का दद (कविता सकलन) स डा प्रकाश आतुर 'पाखुरिया माटी की' (बाल साहित्य) स कन्हैयालाल न दन हिवड रो उजास' (राजस्थानी विविधा) म श्रीलाल नथमल जोशी।

1984 'अपना अपना दामन (कहानी सकलन) म मजुल भगत, 'वस्तुस्थिति' (कविता सकलन) म गिरधर राठी सचयनिका (विविधा) स याज्ञवल्क्य गुरु 'फूल सारू पागडी (राजस्थानी) स शक्तिदान कविया 'सार फूल तुम्हारे है' (बाल साहित्य) म स्नेह अग्रवाल।

1985 रास्ते अपने अपने (कहानी सग्रह) स राजेन्द्र अवस्थी 'सुनो ओ नदी रेत की' (कविता सग्रह) म बलदेव वशी 'बबूल की महक' (बाल साहित्य) स मस्तराम कपूर मरु अचल के फूल' (हिन्दी विविधा) म कमल किशोर गोयनका 'माणक चोक' (राजस्थानी विविधा) म मनोहर शर्मा।

1986 'ढाई अक्षर' (कहानी सग्रह) म आलमशाह खान, रेत का घर (कविता सग्रह) स प्रकाश जन 'रत के रतन (बाल साहित्य) स मनोहर प्रभाकर 'बूद बूद स्याही (हिन्दी विविधा) स पुरुषोत्तमलाल तिवारी, रेत रा हेत' (राजस्थानी विविधा) म हीरालाल माहेश्वरी। □

10479
5-5-89